पंचायतन यज्ञ

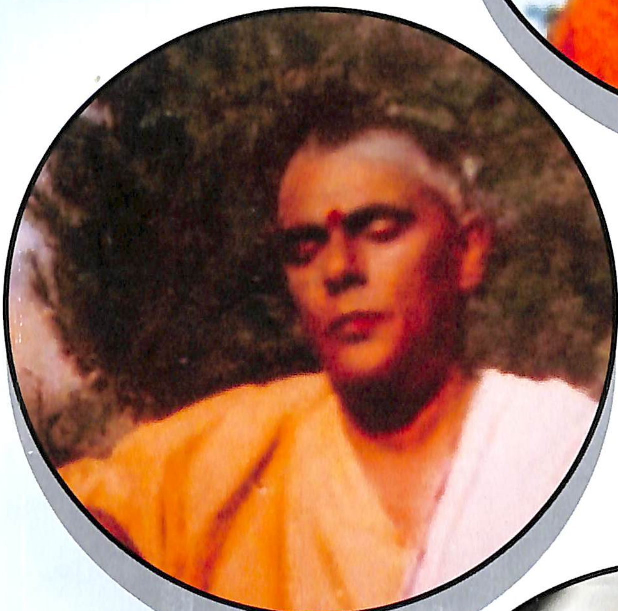
नामावली



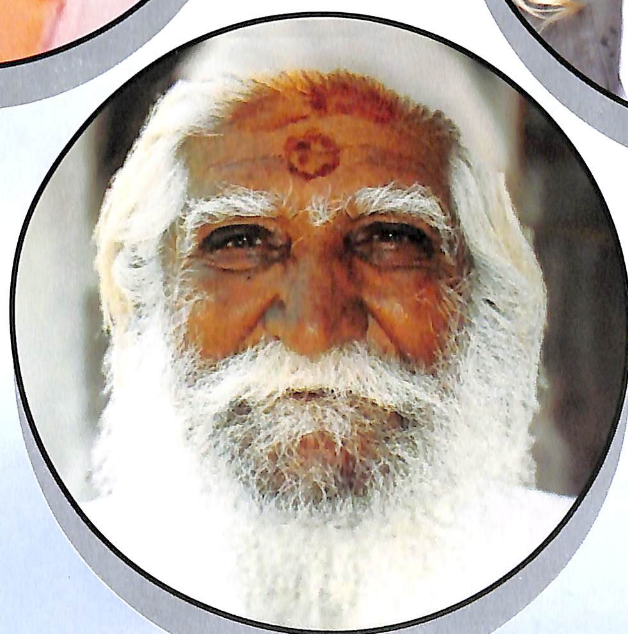
भाग-2

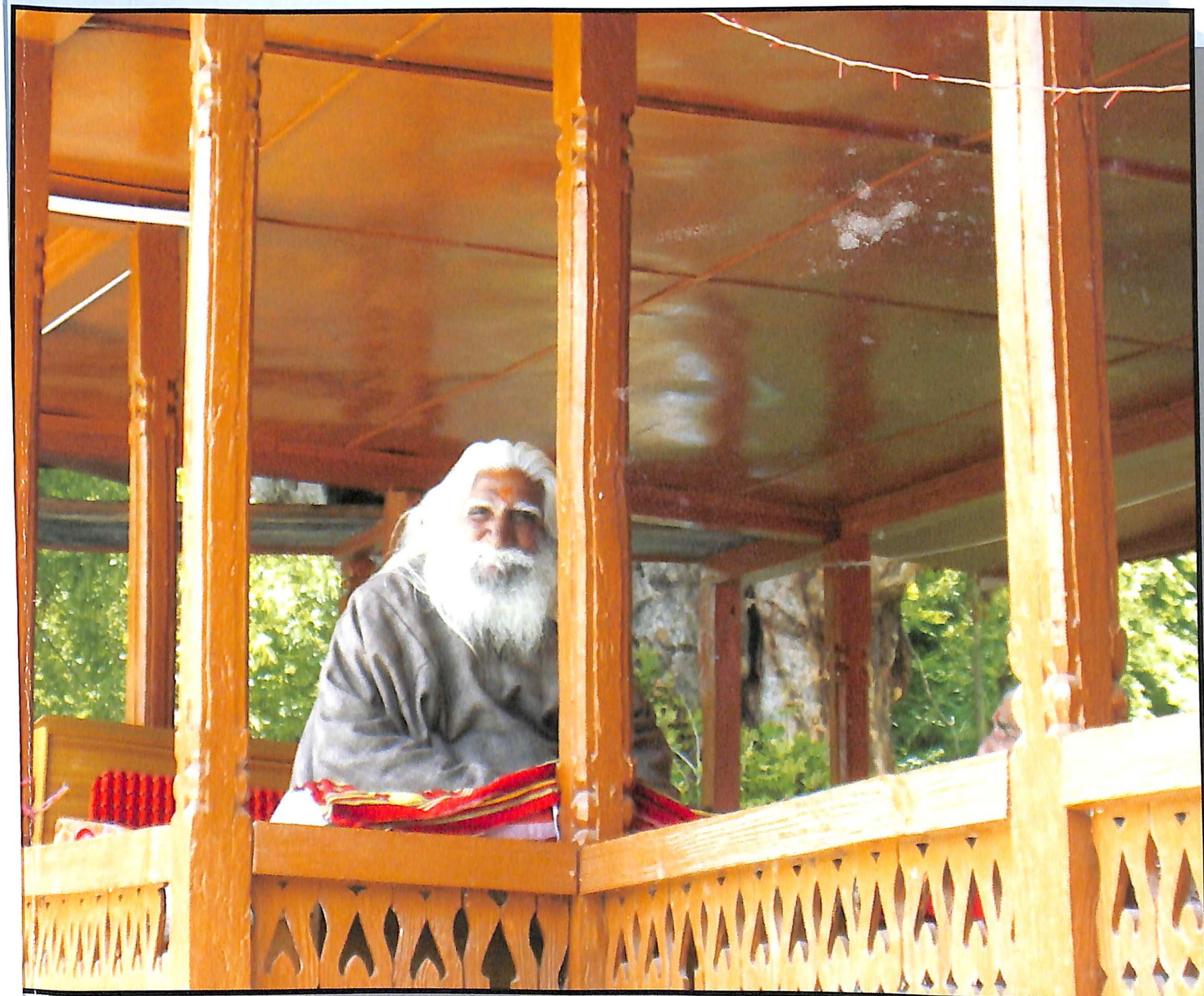












जय नन्द बाबा - जय लाल बाबा
जय स्वामी मस्तबब जी महाराज की

पंचायतन यज्ञ
नामावली

भाग-2

प्रकाशक : स्वामी मस्तबब आश्रम
1-49 राजेन्द्र नगर, ब्लाक-ए
सै. - 2 (शालीमार गार्डन विस्तार -II)
साहिबाबाद, गाजियाबाद-201005

प्रथम संस्करण : मार्च 2015 (चैत्र शुक्ल पक्ष अष्टमी)

मूल्य : 300/-

पुस्तक सभी आश्रमों में उपलब्ध है।

मुद्रक जॉफरी एण्ड बेल पब्लिशर्स प्रिंटर्स
बी. 30, द्वितीय मंजिल, चंद्रगुप्त कॉम्पलेक्स,
सुभाष चौक, लक्ष्मीनगर, दिल्ली-92
Email: jeoffrybell@hotmail.com

दो शब्द

सर्वप्रथम हम उमा सुत शोक-विनाशक विघ्नेश्वर श्री गणेश जी से प्रार्थना करते है कि बह्ममा, विष्णु, सरस्वती एवं शारदा माता सदा सहायक रहे।

परम गुरू स्वामी नन्दलाल जी तथा स्वामी मस्तबब जी की कृपा रहे ताकि हम शुभ वचन सुने, मन शरीर स्वस्थ रहे, आत्मा स्वरूपतः शां त रहे, साधु गीत रहे, निष्काम भाव से आश्रम की सेवा कर सकें। हमारी बुद्धि एवं विचारों को बह्म ज्ञान की ओर बढ़ ने में प्रेरित करे।

गुरूमाराज के चारों आश्रमों में प्रत्येक मास के शुक्ल पक्ष अष्टमी को यज्ञ रचायें जाते है जि में बड़ी संख्या में भक्तजन एवं श्रद्धालु सम्मिलित होते है। स्वामी जी कहते है कि यज्ञ में तन से, मन से या धन से सेवा करनी चाहिए। तो सभी दुःखों का नाश होता है। मनोकामना पूर्ण हो जाती है। स्वामीजी कहते है कि वैदिक यज्ञ की परम्परा बनी रहनी चाहिए। महापुरूषों एवं बह्मर्षियों ने वैदिक यज्ञ से सर्वोत्तम पद की प्राप्ति की है अतः उन्होंने हमें वैदिक यज्ञ कर्मकाण्ड बनाने का आदेश दिया-

'' खबर मा छे ब. कव. जायोस

करनि क्या योर ब आयोस

स्व मेहनत कर लबख रूत फल

च प्रावक सर्वदा मंगल

वेदो का ब्रह्मा ने लिखा है, वही उनका अर्थ समझते है, हम तो केवल यह ऋचायें पढ़ सकते है और अपना भाव प्रकट करके देवी देवतओं की आराधना कर सकते हैं क्योंकि ''भाव ही बलवान है।''

अन्तस ब' मा अथ मूर मते

सूर मते लो

जय नन्द बाबा जी की जय लाल बाबा जी की

जय स्वामी मस्तबब जी की

सेवादार
महाराज कृष्ण तलाशी
बी-4 जी. एम. - 2 शालीमार गार्डन विस्तार-2
मो. नं. +919871202144 e-mailtalashim46@gmail.com

विषय सूची

धूपदीप विधिः

पूजा के लिये रखे गये निर्माल्य के पात्र में जल की धारा डालते हुये पढ़ें :-

ॐ अस्य श्री-आसन-शोधन-मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ-ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता-आसन-शोधने विनियोगः।

न्यास :

मेरूपृष्ठ-ऋषये	**नमः शिरसि**
सुतलं छन्दसे	**नमः मुखे**
कूर्मो देवतायै	**नमः हृदये**
आसनशोधने विनियोगाय	**नमः सर्वाङ्गेषु**

आसन के रूप में पृथ्वी माता को दर्भ अथवा फूल अर्पण करते हुये पढ़ें :-

ध्रुवा द्यौर् ध्रुवा पृथ्वी ध्रवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगत् ध्रुवो राजा विशामसि।

तिलक-फूल-अर्घ्य चढ़ाते हुये पढ़ें:-

प्रीं पृथिव्यै आधारशक्त्यै समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः

पृथ्वी माता को नमस्कार करते हुए पढ़ें :- **पृथिवी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरू चासनम्।**

नमस्कार करते हुए पढ़ें :-

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्न-वदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये। अभिप्रेतार्थ-सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैरपि। सर्वविघ्नच्छिदे तस्मैः गणाधिपतये नमः॥

गुरुःब्रह्मा गुरुःविष्णुः गुरुःसाक्षात-महेश्वरः। गुरुदेव जगत्सर्वं तस्मै श्री गुरुवे नमः । ॐ गुरवेः नमः परम गुरवे नमः परमेष्ठिने गुरवे नमः परमाचार्याय नमः आदि। सिद्धिभ्यो नमः

चारों दिशाओं की ओर तिल फैंकते हुये पढ़ें :-

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ये भूता विघ्नकर्तारःते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

प्राणायाम कीजिये प्राणायाम करके मुँह और पैरों को पानी छिडकते हुये पढ़ें :-

तीर्थे स्नेयं तीर्थ-एव समानानां भवति मानः शंस्योर् अररुषो धूर्तिः प्राणङ्मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।

अनामिका अंगुली के ऊपर वाले पर्व पर पवित्र धारण करते हुये पढ़ें :-

वसोः पवित्रंसि शतधारं वसूनां पवित्रंसि सहस्त्र- धारंयक्ष्मा वः प्रजया संसृजामि रायस्पोषेण बहुला भवन्तीः।

जंग चावल आदि लाकर तिलक करना अपने आपको तिलक अक्षत फूल चढ़ाते हुये पढ़ें :-

परमात्मने पुरुषोत्तमाय पंचभूतात्मकाय विश्वात्मने मन्त्रनाथाय आत्मने नारायणाय आधारशक्त्यै समालभन्नं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः

चोंग (दीप) को तिलक अक्षत फूल चढ़ाते हुये पढ़ें :-

"स्वप्रकाशों महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः। प्रसीद मम गोविन्द दीपोयं परिकल्पितः।"

सूर्यदेवता के निमित्त निर्माल्यपात्र में तिलक अक्षत फूल डालते हुये पढ़ें:-

नमो धर्म निधानाय नमः सुकृत साक्षिणे

नमः प्रत्यक्ष देवाय भास्कराय नमो नमः।

तर्पण करें– यत्रास्ति माता न पिता न बन्धुः-भ्रातापि नो यत्र सुहृत्-जनश्च। न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिस्तत्रात्मदीपं शरणं प्रपद्ये।। आत्मने नारायणाय आधारशक्त्यै दीपं समर्पयामि। संकल्पात्सिद्धिरस्तु धूपंदीपं समर्पयामि।। ॐ तत्-सत्-ब्रह्म अद्यतावत् तिथौ अद्य.... मासस्य .... पक्षस्य तिथौ .... वासरे धूपंदीपं समर्पयामि।। (इति दीप धूप)

गणेश स्तुतिः

आयसय शरण करतम क्षमा ओं श्री गणेशाय नमः।।

गणपत गणेश्वर हे प्रभो कलिराज़ राज़न हुन्द विभो।
पज़ि लोल पादन तल प्यमा ओं श्री गणेशाये नमः।।

मूषक च़्य वाहन शूभवुन त्रन लूकनय मंज फेरवुन।
सहायक म्य रोज़तम हर दमा ओं श्री गणेशाये नमः।।

यज्ञस ज़पस व्यवहारसय गुड छिय सुरान प्रथकारसय।
कारस अनान छुख चय जा ओं श्री गणेशाय नमः।।

सुन्दर लम्बोदर एक दन्त स्मरन चात्र वतिन म्य अन्द।
रुति वेल सुन्दर छुम समा ओं श्री गणेशाय नमः।।

स्मरन यि च्यनी यिम करान भवसागरस अपोर तरान।
रट्टु सानि नावे चुय नमा ओं श्री गणेशाय नमः।।

स्मरन यि चानी भक्ति जन पूरण गछान तम्यसुन्द छु प्रण।
चरणोदकुक अमृत चमा ओं श्री गणेशाय नमः।।

गुडनी च्यय छुय आधिकार कलिकालकुय चुय ताजदार।
पज़ि लोलु पादन तल नमः ओं श्री गणेशाय नमः।।

ज्ञगतुक महेश्वर चुम पिता सत्य रूप सीति धर्मुच सथा।
माता च़्य गौरी श्री वुमा ओं श्री गणेशाये नमः।।

बाह नाव सुन्दर शूभुवुञ स्वर्गस गछ़ान तिम बोलवुञ।
पूरण करुम पूरण तमा ओं श्री गणेशाय नमः॥

आमुत भक्त च़्येय छुय शरण प्योमुत खोरन तल छुय परण।
वर दिथ कास्तम चुय गमा ओं श्री गणेशाय नमः॥

सुबह प्यठ भखत छिय लारान प्रेम पोश ह्यय छिय प्रारान।
छुख च्यानि पूज़ि लागनुक तमा ओं श्री गणेशाय नमः॥

गणिशबल प्यठ आख चलिथय अंग अंग स्यंदरा मलिथय।
गोड बोज़ म्यनी प्रार्थना ओं श्री गणेशाय नमः॥

ओं श्री गणेशाये नमः॥

फूल डालें–

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ। निर्विघ्नं कुरुमे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥ (१० बार पढ़ें)

इस मंत्र की आहुतियाँ (शक्कर तथा घी) की १० बार समय अनुकूल डालना।

मंत्र :–

ओं श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा॥

स्वाहाकार पूजन-विधि

फूल अग्नि में डालते हुये पढ़ें :-

भैरवः- **देवः पूर्वं पुरारातिः पुरत्रयजयोद्यमे। अनर्चनात्-गणेशस्य जातो विघ्न-गणाकुलः॥ मनसा च विनिर्माय ततस्तु विघ्नकारकम्। महागणपतिं भक्त्या समभ्यर्च्य यथाविधि॥ विघ्न-प्रशमनोपायं पप्रच्छ च परिश्रमम्। संतर्प्य पूजया शम्भो महागणपतिः स्वयम् सर्वविघ्नप्रशमनं सर्वाश्रमफलप्रदम्। नमस्तस्मैः स्वनाम्नैव सहस्त्रम् इदम् ब्रवीत्॥**

विनियोग कीजिए :-

ॐ अस्य श्रीमहागणपति सहस्त्रनाम स्तोत्रमन्त्रस्य महागणपतिः ऋषिः गणेशो देवता नानाविधानि छन्दांसि "हुम्" इति बीजं "ॐ" इति शक्तिः स्वाहा इति कीलकम् आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जित पापनिवारणार्थं श्रीमहागणपतिप्रसाद सिद्ध्यर्थे होमे/पाठे/पुष्पार्चने विनियोगः।

करन्यासः-

ॐ गां अंगुष्ठाभ्यां नमः

ॐ गीं तर्जनीभ्यां नमः

ॐ गूं मध्यमाभ्यां नमः

ॐ गैं अनामिकाभ्यां नामः

ॐ गौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः

ॐ गः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः

षड्-अंगन्यासः

ॐ गां हृदयाय नमः

ॐ गीं शिरसे स्वाहा

ॐ गूं शिखायै वषट्

ॐ गैं कवचाय हुं

ॐ गौं नेत्रत्रयाय वौषट्

ॐ गः अस्त्राय फट्

प्राणायाम करके हाथ में फूल लेकर (ध्यान) पढ़िये :-

बिभ्रद्दक्षिणहस्तपद्मयुगले दन्ताक्षसूत्रे शुभे वामे मोदक-पूर्ण पात्रपरशू नागोपवीती त्रिदृक्। श्रीमान् सिंह युगासनः श्रुतियुगे शंखौ वहन् मौलिमान् दिश्यात् ईश्वरपुत्र एष भगवान् लम्बोदरः शर्मनः॥

आहुति अग्नि में डालते हुये पढ़ें :-

ॐ "गं" तत् पुरुषाय विद्महे स्वाहा वक्रतुण्डाय धीमहि स्वाहा तन्नो दन्ती प्रचोदयात् स्वाहा। ॐ "गं" तत् पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि स्वाहा तन्नो दन्ती प्रचोदयात् स्वाहा। ॐ "गं" तत् पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात् स्वाहा।

अब सावधानी से दोनों आहुति डालने वाला और यजमान एक एक नाम से प्रज्जवलित अग्नि में आहुति डालें।

१००वीं आहुति डालने से पूर्व "स्त्रुक्" (जिसमें एक रन्ध्र होता है) से "स्त्रुव" (जिसमें दो रन्ध्र होते हैं। स्त्रुक् से स्त्रुव को घी से चार बार स्पर्श करते हुये पढ़ें–

तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि धामाऽसि।

स्त्रुव पर श्रीफल कन्द या अखरोट रखकर यव तिल की भरी अंजलि हाथ में लेकर गणेश जी का वैदिक मन्त्र पढ़कर १०० वें नाम की आहुति डालें। वैदिक मन्त्र :-

ॐ गणानान्त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनां उपमश्रवस्तमं ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृण्वन्-ऊतिभिः सीद सादनम्।

ध्यान मन्त्र

जेतुं यः-त्रिपुरं हरेण हरिणा व्याजात्-बले-र्बन्धने स्त्रष्टुं वारि-रुहोत्-भवेन विधिना शेषेण र्धतुं धराम् पार्वत्या महिषासुर-प्रमथने सिद्धाधिपैः-र्मुक्तये ध्यातः पञ्च-शरेण लोक-विजये पायात्-स नागाननः (१)

विघ्नेशं विश्ववन्द्यं सुविपुल यशसं लोकरक्षाप्रदक्षं
साक्षात्सर्वापदासु प्रशमनं पार्वती प्राणसूनुम।
प्रायः सर्वासुरेन्द्रः ससुर मुनिगणैः साधकैः पूज्यमानं
कारुण्यंनान्तरायमित भयहरं विघ्नराजं नमामि।।

लड्डू व घी की आहुतियाँ –

ॐ गणेश्वराय स्वाहा

ॐ गणक्रीडाय स्वाहा

ॐ गणनाथाय स्वाहा

ॐ गणाधिपाय स्वाहा

ॐ एकदन्ताय स्वाहा

ॐ वक्रतुण्डाय स्वाहा

ॐ गजवक्त्राय स्वाहा

ॐ महोदराय स्वाहा

ॐ लम्बोदराय स्वाहा

ॐ धूम्रवर्णाय स्वाहा 10

ॐ विकटाय स्वाहा

ॐ विघ्ननाशकाय स्वाहा

ॐ सुमुखाय स्वाहा

ॐ दुर्मुखाय स्वाहा

ॐ बुद्धाय स्वाहा

ॐ विघ्नेशाय स्वाहा

ॐ अघविनाशनाय स्वाहा

ॐ भीमाय स्वाहा

ॐ प्रमोदाय स्वाहा

ॐ आनन्दाय स्वाहा 20

ॐ सुरानन्दाय स्वाहा

ॐ मदोत्कटाय स्वाहा

ॐ हेरम्बाय स्वाहा

ॐ शम्बराय स्वाहा

ॐ शम्भवे स्वाहा

ॐ लम्बकर्णाय स्वाहा

ॐ महाबलाय स्वाहा

ॐ नन्दनाय स्वाहा

ॐ लम्पटाय स्वाहा

ॐ भीममेघनादाय स्वाहा 30

ॐ धनञ्जयाय स्वाहा

ॐ विनायकाय स्वाहा

ॐ विरूपाक्षाय स्वाहा

ॐ वीराय स्वाहा

ॐ शूरवरप्रदाय स्वाहा

ॐ महागणपतये स्वाहा

ॐ बुद्धिप्रियाय स्वाहा

ॐ क्षिप्रप्रसादनाय स्वाहा

ॐ रुद्रप्रियाय स्वाहा

ॐ गणाध्यक्षाय स्वाहा 40

ॐ उमापुत्राय स्वाहा

ॐ गजाननाय स्वाहा

ॐ कुमारगुरवे स्वाहा

ॐ ईशान-पुत्राय स्वाहा

ॐ मूषक-वाहनाय स्वाहा

ॐ सिद्धिप्रदाय स्वाहा

ॐ सिद्धपतये स्वाहा

ॐ सिद्धाय स्वाहा
ॐ सिद्धि विनायकाय स्वाहा
ॐ अविघ्नतुम्बर-वे स्वाहा50
ॐ सिंहवाहनाय स्वाहा
ॐ मोहिनीप्रियाय स्वाहा
ॐ कटङ्कटाय स्वाहा
ॐ राजपुत्राय स्वाहा
ॐ सालङ्कटाय स्वाहा
ॐ स्मिताय स्वाहा
ॐ अमिताय स्वाहा
ॐ कूष्माण्डाय स्वाहा
ॐ सामसम्भूताय स्वाहा
ॐ दुर्जयाय स्वाहा 60
ॐ धूर्जयाय स्वाहा
ॐ नयाय स्वाहा
ॐ भूपतये स्वाहा
ॐ भुवनेशानाय स्वाहा
ॐ भूतानांपतये स्वाहा
ॐ अव्ययाय स्वाहा
ॐ विश्वकर्त्रे स्वाहा
ॐ विश्वमुखाय स्वाहा
ॐ विश्वरूपाय स्वाहा
ॐ अतिनिर्गुणाय स्वाहा 70
ॐ कवये स्वाहा
ॐ कवीनामृषभाय स्वाहा
ॐ ब्राह्मणाय स्वाहा
ॐ ब्रह्मवित्पतये स्वाहा
ॐ ज्येष्ठराजाय स्वाहा
ॐ श्रीनिधये स्वाहा
ॐ श्रीपतये स्वाहा
ॐ निधिप्रियाय स्वाहा
ॐ हिरण्यमय-पुरान्तःस्थाय स्वाहा
ॐ सूर्यमण्डलमध्यगाय स्वाहा80
ॐ कराहतिध्वस्त-सिन्धु-सलिलाय स्वाहा
ॐ पुष्पदन्तभिदे स्वाहा
ॐ उमाङ्ककेलिसम्भूताय स्वाहा
ॐ मुक्तिदाय स्वाहा
ॐ फलदायकाय स्वाहा
ॐ किरीटिने स्वाहा
ॐ कुण्डलिने स्वाहा
ॐ हारिणे स्वाहा
ॐ वनमालिने स्वाहा
ॐ मनोमयाय स्वाहा 90
ॐ वैमुख्यहतदैत्यश्रिये स्वाहा
ॐ पादगत्याजितक्षितये स्वाहा
ॐ सद्योजाताय स्वाहा
ॐ स्वर्णकुञ्जमेखलिने स्वाहा

ॐ दुर्निमित्तहृते स्वाहा

ॐ दु:स्वप्नहृते स्वाहा

ॐ प्रहसनाय स्वाहा

ॐ गुणिने स्वाहा

ॐ नादप्रतिष्ठिताय स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि धामाऽसि

ॐ गणनान्त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनां उपमश्र-वस्तमं ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृण्वन् ऊतिभिः सीद सादनम्।

ॐ स्वरूपाय स्वाहा १००

सुमुखश्चैवकदन्तश्च कपिलो गजर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्नराजो विनायकः।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि गणेशस्य महात्मनः।। (२)

ॐ सर्वरत्नाढ्यविलसत्-नूपराय स्वाहा

ॐ यूने स्वाहा

ॐ पीताम्बराय स्वाहा

ॐ खड्गधराय स्वाहा

ॐ खण्डवैशाख-संस्थिताय स्वाहा

ॐ चित्राङ्गाय स्वाहा

ॐ श्यामदशनाय स्वाहा

ॐ भालचन्द्राय स्वाहा

ॐ हविर्भुजाय स्वाहा

ॐ योगाधिपाय स्वाहा 110

ॐ तारकस्थाय स्वाहा

ॐ पुरुषाय स्वाहा

ॐ गजकर्णकाय स्वाहा

ॐ गणाधिराजाय स्वाहा

ॐ विजयस्थिराय स्वाहा

ॐ गजपतये स्वाहा

ॐ ध्वजिने स्वाहा

ॐ देवदेवाय स्वाहा

ॐ स्मरत्राणदीपकाय स्वाहा

ॐ वायुकीलकाय स्वाहा 120

ॐ विपश्चिद्वरदाय स्वाहा

ॐ नादाय स्वाहा

ॐ नादभिन्नमहारवाय स्वाहा

ॐ वराहवदनाय स्वाहा

ॐ मृत्युञ्जयाय स्वाहा

ॐ व्याघ्रजिनाम्बराय स्वाहा
ॐ इच्छाशक्तिभवाय स्वाहा
ॐ देवत्रात्रे स्वाहा
ॐ दैत्यविमर्दनाय स्वाहा
ॐ शम्भुवक्त्रोद्भवाय स्वाहा 130
ॐ शम्भुकोपजाय स्वाहा
ॐ शम्भुहास्यभुवे स्वाहा
ॐ शम्भुतेजसे स्वाहा
ॐ शिवाशोकहारिणे स्वाहा
ॐ गौरीसुखावहाय स्वाहा
ॐ उमाङ्गमलजाय स्वाहा
ॐ गौरीतेजोभुवे स्वाहा
ॐ स्वर्धुनीभवाय स्वाहा
ॐ मर्त्यकायाय स्वाहा
ॐ महानादाय स्वाहा 140
ॐ गिरिवर्ष्मणे स्वाहा
ॐ शुभाननाय स्वाहा
ॐ सर्वत्मने स्वाहा
ॐ सर्वदेवात्मने स्वाहा
ॐ ब्रह्ममूर्ध्ने स्वाहा
ॐ ककुत्पतये स्वाहा
ॐ ब्रह्माण्डकुम्भजिते स्वाहा
ॐ व्योमभालाय स्वाहा
ॐ सत्यशिरोरुहाय स्वाहा
ॐ जगज्जन्मलयोन्मेष-
निमेषाय स्वाहा 150
ॐ अग्न्यर्कसोमदृशे स्वाहा
ॐ गिरीन्द्रवदनाय स्वाहा
ॐ धर्माय स्वाहा
ॐ धर्मिष्ठाय स्वाहा
ॐ सामबृंहिताय स्वाहा
ॐ ग्रहर्क्षदर्शनाय स्वाहा
ॐ वाणीजिह्वाय स्वाहा
ॐ वायुकिनासिकाय स्वाहा
ॐ भ्रूमध्यसंस्थित-ब्रह्मणे स्वाहा
ॐ ब्रह्मविद्यामदोदकाय स्वाहा
ॐ कुलाचलांसाय स्वाहा
ॐ सोमार्कघण्टाय स्वाहा
ॐ रुद्रशिरोधराय स्वाहा
ॐ नदीनदभुजाय स्वाहा
ॐ सर्पाङ्गुलीकाय स्वाहा
ॐ तारकैर्नखाय स्वाहा
ॐ निम्ननाभये स्वाहा
ॐ श्रीहृदयाय स्वाहा
ॐ मेरुपृष्ठाय स्वाहा
ॐ अर्णवोदराय स्वाहा 170
ॐ कुक्षिस्थ-यक्ष-गन्धर्व-रक्षः-
किन्नर-मानुषाय स्वाहा

ॐ पृथ्वीकटये स्वाहा
ॐ सृष्टिलिङ्गाय स्वाहा
ॐ शैलोरवे स्वाहा
ॐ ह्रस्वजानुकाय स्वाहा
ॐ पातालजङ्घाय स्वाहा
ॐ मुनिपादे स्वाहा
ॐ कालाङ्गुष्ठाय स्वाहा
ॐ त्रयीतनवे स्वाहा
ॐ ज्योतिर्मण्डल-लाङ्गूलाय स्वाहा
ॐ हृदया लान निश्चलाय स्वाहा
ॐ हृत्पद्मकर्णि-कस्थाय स्वाहा
ॐ वियत्केलिसरोवराय स्वाहा
ॐ सद्भक्तध्याननिगडाय स्वाहा

ॐ पूजावारि-निवारिताय स्वाहा
ॐ प्रतापिने स्वाहा
ॐ कश्यपाय स्वाहा
ॐ यत्नाय स्वाहा
ॐ गणकाय स्वाहा
ॐ मन्दराय स्वाहा 190
ॐ बलिने स्वाहा
ॐ यशस्विने स्वाहा
ॐ धार्मिकाय स्वाहा
ॐ नेत्रे स्वाहा
ॐ प्रमथाय स्वाहा
ॐ प्रमथेश्वराय स्वाहा
ॐ चिन्तामणि-स्थलपतये स्वाहा
ॐ कल्पद्रुमवना-लयाय स्वाहा
ॐ रत्नमण्डप-मध्यस्थाय स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि
ज्योतिरसि धामाऽसि

ॐ गणनान्त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनां उपमश्रवस्तमं ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृष्वन् ऊतिभिः सीद सादनम्।

ॐ रत्नसिंहासनाश्रयाय स्वाहा २००

सिन्दूरकुंकुमहुताशनविदुमार्करक्ताब्ज दाडिमनिभाय चतुर्भुजाय।
हेरम्बभैरवगणेश्वरनायकाय सर्वार्थसिद्धिफलदाय शिवाय॥ (३)

ॐ तीव्रशिरोद्धृतपदाय स्वाहा
ॐ ज्वालिनीमौलिलालिताय स्वाहा

ॐ नादनन्दितपीठश्रिये स्वाहा
ॐ भोगदाय स्वाहा

ॐ वह्निधामत्रयालयाय स्वाहा
ॐ उन्नतप्रपदाय स्वाहा
ॐ गूढगुल्फाय स्वाहा
ॐ संवृत्तपार्ष्णि-काय स्वाहा
ॐ पीनजङ्घाय स्वाहा
ॐ श्लिष्टजानवे स्वाहा210
ॐ स्थूलोरवे स्वाहा
ॐ प्रोन्नमत्कटये स्वाहा
ॐ निम्ननाभये स्वाहा
ॐ स्थूलकुक्षये स्वाहा
ॐ पीनवक्षसे स्वाहा
ॐ बृहद्भुजाय स्वाहा
ॐ पीनग्रीवाय स्वाहा
ॐ कुम्बकण्ठाय स्वाहा
ॐ लम्बोष्ठाय स्वाहा
ॐ लम्बनासिकाय स्वाहा 220
ॐ भग्नवामरदाय स्वाहा
ॐ तुङ्गसव्यदन्ताय स्वाहा
ॐ महाहनवे स्वाहा
ॐ ह्रस्वनेत्रत्रयाय स्वाहा
ॐ शूर्पकर्णाय स्वाहा
ॐ निबिडमस्तकाय स्वाहा
ॐ स्तवकाकारपाणये स्वाहा

ॐ रत्नमौलये स्वाहा
ॐ निरङ्कुशाय स्वाहा
ॐ भूषिताननाय स्वाहा 230
ॐ प्रकामदायिनां-पीठाय स्वाहा
ॐ स्फुरदुग्रासनाश्रयाय स्वाहा
ॐ तेजोवतांशिरोरत्नाय स्वाहा
ॐ सत्यनित्यावतंसिताय स्वाहा
ॐ सर्वविघ्न-विनाशाय स्वाहा
ॐ सर्वशक्त्यम्बुजालयाय स्वाहा
ॐ रक्तपद्मासना-धाराय स्वाहा
ॐ सर्पहारकटि-सूत्राय स्वाहा
ॐ सर्पयज्ञोपवीत-भृते स्वाहा
ॐ सर्पकोटीर-कटकाय स्वाहा
ॐ सर्पग्रैवेयकाङ्गदाय स्वाहा
ॐ सर्पकक्ष्योदर-बन्धाय स्वाहा
ॐ सर्पराजोत्तरच्छदाय स्वाहा
ॐ रक्ताय स्वाहा
ॐ रक्ताम्बरधराय स्वाहा
ॐ रक्तमाल्यविभूषणाय स्वाहा
ॐ रक्तेक्षणाय स्वाहा
ॐ रक्तकराय स्वाहा
ॐ नित्यरक्तोष्ठ-पल्लवाय स्वाहा
ॐ श्वेताय स्वाहा 250

ॐ श्वेताम्बर धराय स्वाहा
ॐ श्वेतमाल्य विभूषणाय स्वाहा
ॐ श्वेतातपत्र रुचिराय स्वाहा
ॐ श्वेतचामरवीजिताय स्वाहा
ॐ सर्वावयव सम्पूर्णाय स्वाहा
ॐ सर्वलक्षण लक्षिताय स्वाहा
ॐ सर्वभूषण भूषाढ्याय स्वाहा
ॐ सर्वशोभा समन्विताय स्वाहा
ॐ सर्वमङ्गल-मङ्गल्याय स्वाहा
ॐ सर्व कारणकारणाय स्वाहा260
ॐ सर्वदेवकराय स्वाहा
ॐ शार्ङ्गिणे स्वाहा
ॐ बीजपूरिणे स्वाहा
ॐ गदाधराय स्वाहा
ॐ शुभाङ्गाय स्वाहा
ॐ लोकशुभदाय स्वाहा
ॐ सुतन्तवे स्वाहा
ॐ तन्तुवर्धनाय स्वाहा
ॐ इक्षुचापधराय स्वाहा
ॐ शूलिने स्वाहा 270
ॐ चक्रपाणये स्वाहा
ॐ सरोजभृते स्वाहा
ॐ पाशिने स्वाहा
ॐ धृतोत्पल-भराय स्वाहा
ॐ मञ्जरीभृते स्वाहा
ॐ सुदन्तभृते स्वाहा
ॐ कल्पवल्लीधराय स्वाहा
ॐ विश्वाभयदैक-कराय स्वाहा
ॐ वशिने स्वाहा
ॐ अक्षमाला-धराय स्वाहा 280
ॐ ज्ञानमुद्रा-वते स्वाहा
ॐ मुद्ग रायुधाय स्वाहा
ॐ पूर्णपात्रिणे स्वाहा
ॐ कम्बुधराय स्वाहा
ॐ विधृतालसमोदकाय स्वाहा
ॐ करस्थाम्रफलाय स्वाहा
ॐ चूतकर्णिका-भृते स्वाहा
ॐ कुठारभृते स्वाहा
ॐ पुष्करस्थ स्वर्णघटाय स्वाहा
ॐ पूर्ण रत्नाभिवर्षकाय स्वाहा290
ॐ भारतीसुन्दरी-नाथाय स्वाहा
ॐ विनायकरतिप्रियाय स्वाहा
ॐ महालक्ष्मी प्रियतमाय स्वाहा
ॐ सिद्धलक्ष्मी मनोरमाय स्वाहा
ॐ रमारमेश पूर्वाङ्गाय स्वाहा
ॐ उमोमेश्वर दक्षिणाय स्वाहा

ॐ महीवराह वामाङ्गाय स्वाहा ॐ आमोदमोद जननाय स्वाहा
ॐ रतिकन्दर्प पश्चिमाय स्वाहा तेजोऽसि शुक्रमऽसि

ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ गणनात्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनां उपमश्रवस्तमं ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः श्रृष्वन्- ऊतिभिः सीद सादनम्।

ॐ स्वप्रमोदप्रमोदनाय स्वाहा३००

विघ्नेशो नमः स पायात् विह्यतेषु जलधिं पुष्कराग्रेण पीत्वा यस्मिन्-उदृत्य हस्तं वमति तत्-अखिलं दृश्यते व्योम्नि देवैः

क्वाप्यम्भः क्वापि विष्णुः क्वचन कमलभूः क्वाप्यनन्तः क्वच श्रीः क्वाप्यौर्वः क्वापि शैलः क्वचन मणिगणः क्वापि नक्रादि-सत्वाः (४)

ॐ समर्द्धित-समृद्धिश्रिये स्वाहा
ॐ ऋद्धिसिद्धि-प्रवर्धनाय स्वाहा
ॐ दन्तसौमुख्य-सुमुखाय स्वाहा
ॐ कान्तिकन्दलिताश्रयाय स्वाहा
ॐ मदनोपाश्रिताङ्घ्र्ये स्वाहा
ॐ कृतसौमुख्य-दुर्मुखाय स्वाहा
ॐ विघ्नसोपपल्वोपघ्नाय स्वाहा
ॐ सर्वोन्नतमदद्रवाय स्वाहा
ॐ विघ्नहृते स्वाहा
ॐ निम्नचरणाय स्वाहा 310
ॐ द्राविणीशक्ति-सत्कृताय स्वाहा
ॐ तीव्रप्रसन्न-वदनाय स्वाहा

ॐ पालिनीपालितैकदृशे स्वाहा
ॐ मोहिनीमोहिताय स्वाहा
ॐ भोगदायिने स्वाहा
ॐ कान्तिमण्डिताय स्वाहा
ॐ कामिनीकान्तवक्त्रश्रिये स्वाहा
ॐ तीक्ष्णदृष्टये स्वाहा
ॐ एकदृशे स्वाहा
ॐ वसुधारामदाय स्वाहा320
ॐ अनादाय स्वाहा
ॐ महाशङ्खनिधि-प्रभवे स्वाहा
ॐ नमद्वसुमतीमौलि-प्रह्व पद्मनिधि प्रभवे स्वाहा

ॐ सदासद्गुरु-संसेव्याय स्वाहा
ॐ रोचिष्केशहृदाश्रयाय स्वाहा
ॐ इशानमूर्ध्ने स्वाहा
ॐ दैत्येन्द्रशिखा-पवनदंशनाय स्वाहा
ॐ प्रत्यग्रनयनाय स्वाहा
ॐ दिव्याय स्वाहा
ॐ दिव्यास्त्र-शतहस्तधृते स्वाहा
ॐ ऐरावतादि-सर्वाशा वारण वारण प्रियाय स्वाहा
ॐ वज्राद्यस्त्र-परीवराय स्वाहा
ॐ गणचण्ड-समाश्रयाय स्वाहा
ॐ जयाजयपरी-वाराय स्वाहा
ॐ विजयाय स्वाहा
ॐ विजयाह्वयाय स्वाहा
ॐ विजयार्चित-पादाब्जाय स्वाहा
ॐ नित्यानित्या-वतंसिताय स्वाहा
ॐ विलासिनी-कृतोल्लासाय स्वाहा
ॐ शुण्डिने स्वाहा 340
ॐ सौन्दर्य-मण्डिताय स्वाहा
ॐ अनन्ताय स्वाहा
ॐ अनन्तसुखदाय स्वाहा
ॐ सुमङ्गलाति-मङ्गलाय स्वाहा

ॐ ज्ञानाश्रयाय स्वाहा
ॐ क्रियाधाराय स्वाहा
ॐ इच्छाशक्ति-निषेविताय स्वाहा
ॐ सुभगासंश्रित-पदाय स्वाहा
ॐ ललिताललिता- श्रयाय स्वाहा
ॐ कामिनी-पालकाय स्वाह
ॐ कामाय स्वाहा
ॐ कामिनीकेलि-लालिताय स्वाहा
ॐ सरस्वत्या-श्रिताय स्वाहा
ॐ गौरीनन्दनाय स्वाहा
ॐ श्रीनिकेतनाय स्वाहा
ॐ गुरुगति-पदाय स्वाहा
ॐ वाचांसिंहाय स्वाहा
ॐ वागीश्वरीपतये स्वाहा
ॐ नलिनीकामुकाय स्वाहा
ॐ वामारामाय स्वाहा 360
ॐ ज्येष्ठामनोरमाय स्वाहा
ॐ रौद्रीमुद्रित-पादाब्जाय स्वाहा
ॐ हुंबीजोत्तुङ्ग-शक्तिकाय स्वाहा
ॐ विश्वादिबीज-स्वप्राणाय स्वाहा
ॐ शक्तिसकीलकाय स्वाहा

ॐ अमृताब्धिकृता-वासाय स्वाहा
ॐ मदाघूर्णितलोचनाय स्वाहा
ॐ उच्छिष्टोच्छिष्ट-गणकाय स्वाहा
ॐ गणेशाय स्वाहा
ॐ गणनायकाय स्वाहा 370
ॐ सार्वकालिक-संसिद्धये स्वाहा
ॐ नित्यशोति-दिगम्बराय स्वाहा
ॐ अनपायाय स्वाहा
ॐ अनन्तदृष्टये स्वाहा
ॐ अप्रमेयाय स्वाहा
ॐ अजराय स्वाहा
ॐ अमराय स्वाहा
ॐ अनाबिलाय स्वाहा
ॐ अप्रतिहताय स्वाहा
ॐ अच्युताय स्वाहा 380
ॐ अमर्त्याय स्वाहा
ॐ अक्षराय स्वाहा
ॐ अप्रतर्क्य-जयाय स्वाहा
ॐ जाप्याय स्वाहा
ॐ अनाधाराय स्वाहा
ॐ अनामयाय स्वाहा
ॐ अमलाय स्वाहा
ॐ अगाधसिद्धये स्वाहा
ॐ अद्वैताय स्वाहा
ॐ अघोराय स्वाहा 390
ॐ अप्रमिताननाय स्वाहा
ॐ अनाकाराय स्वाहा
ॐ अधिरूपाय स्वाहा
ॐ अग्निबलघ्नाय स्वाहा
ॐ अव्यक्तलक्षणाय स्वाहा
ॐ आधारपीठाय स्वाहा
ॐ आधाराय स्वाहा
ॐ आधाराधेयवर्जिताय स्वाहा
ॐ आखुकेतनाय स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि
ज्योतिरसि धामाऽसि

ॐ गणनात्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनां उपमश्रवस्तमं ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः श्रृष्वन्- ऊतिभिः सीद सादनम्।

ॐ आशापूरकाय स्वाहा४००

निर्वघ्न-विश्वनिर्माण-सिद्धये यत्-अनुग्रहम्
मन्ये स धातापि तस्मै विघ्नजिते नमः
सर्गा-रम्भेपि जाताय बीजरूपेण तिष्ठते
धात्रा कृतप्रणामाय गणाधिपतये (५)

ॐ आख्वाद्यवाहनाय स्वाहा
ॐ इक्षुसागर-मध्यस्थाय स्वाहा
ॐ इक्षुभक्षण-लालसाय स्वाहा
ॐ इन्द्रचापाति-रिक्तश्रिये स्वाहा
ॐ इक्षुचाप-निषेविताय स्वाहा
ॐ इन्द्रगोप-समानश्रिये स्वाहा
ॐ इन्द्रनीलनिभद्युतये स्वाहा
ॐ इन्दीवरदलश्यामाय स्वाहा
ॐ इन्दुमण्डल-निर्मलाय स्वाहा
ॐ इध्मप्रियाय स्वाहा 410
ॐ इळाधाम्ने स्वाहा
ॐ इळावते स्वाहा
ॐ इन्दिराप्रदाय स्वाहा
ॐ इक्ष्वाकुविघ्न-विध्वंसिने स्वाहा
ॐ इतिकर्तव्यतारताय स्वाहा
ॐ ईशानमौलये स्वाहा
ॐ ईशानाय स्वाहा
ॐ ईशानप्रियाय स्वाहा
ॐ ईतिघ्ने स्वाहा
ॐ ईषणात्रय-कल्पान्ताय स्वाहा 420
ॐ ईहामात्रविर्विजिताय स्वाहा
ॐ ईरुण्डकप्रियाय स्वाहा
ॐ उन्नताननाय स्वाहा
ॐ उपेन्द्राय स्वाहा
ॐ उत्तुङ्गाय स्वाहा
ॐ उदाराय स्वाहा
ॐ उग्राय स्वाहा
ॐ त्रिदशाग्रण्ये स्वाहा
ॐ उडुभृन्मौलये स्वाहा
ॐ ऊर्जस्वते स्वाहा स्वाहा430
ॐ उज्जवलात्मीयाय स्वाहा
ॐ ऊहापोहै-दुरासदाय स्वाहा
ॐ ऋग्यजुस्साम-नयनाय स्वाहा
ॐ ऋद्धिसिद्धि-समर्पकाय स्वाहा
ॐ ऋजुस्वान्तैक-सुलभाय स्वाहा
ॐ ऋणत्रय-विमोचकाय स्वाहा

ॐ स्वभक्तानां-लुप्तविघ्नाय स्वाहा

ॐ सुरद्विषांलुप्त-शक्तये स्वाहा

ॐ विमुखार्चनां-लुप्तश्रिये स्वाहा

ॐ लूताविस्फोट-नाशनाय स्वाहा440

ॐ एकारपीठ-मध्यस्थाय स्वाहा

ॐ एणपाद-कृतोदराय स्वाहा

ॐ एजिताखिल-दैत्यश्रिये स्वाहा

ॐ एधिताखिल-संश्रयाय स्वाहा

ॐ सर्वनागाना-मऽङ्कुशाय स्वाहा

ॐ अङ्कुशाकार-संस्थिताय स्वाहा

ॐ असमस्तविसर्गान्त-पदेषु परिनिष्ठिताय स्वाहा

ॐ कमण्डलुधराय स्वाहा

ॐ कल्पाय स्वाहा

ॐ कपर्दिने स्वाहा 450

ॐ कलभाननाय स्वाहा

ॐ कर्मसाक्षिणे स्वाहा

ॐ कर्मभोक्रे स्वाहा

ॐ कर्माकर्मफल-प्रदाय स्वाहा

ॐ ऐश्वर्यनिधये स्वाहा

ॐ ऐहिकामुसिम-केश्वर्यपद्राय स्वाहा

ॐ ऐरम्मद-समुन्मेषाय स्वाहा

ॐ ऐरावत-समाननाय स्वाहा

ॐ ॐङ्कारवाच्याय स्वाहा

ॐ ॐकाराय स्वाहा 460

ॐ ओजस्वते स्वाहा

ॐ औषधीपतये स्वाहा

ॐ औदार्यनिधये स्वाहा

ॐ औद्धत्य-धुर्याय स्वाहा

ॐ औन्नत्यनिःसमाय स्वाहा

ॐ कदम्बगोलका-काराय स्वाहा

ॐ कूष्माण्ड-गणनायकाय स्वाहा

ॐ कारुण्यदेहाय स्वाहा

ॐ कपिलाय स्वाहा

ॐ कथकाय स्वाहा 470

ॐ कटिसूत्रभृते स्वाहा

ॐ खर्वाय स्वाहा

ॐ खड्गप्रियाय स्वाहा

ॐ खड्गिने स्वाहा

ॐ खेयान्तःस्थाय स्वाहा

ॐ खनिर्मलाय स्वाहा

ॐ खट्वाङ्गश्रृङ्ग-निलयाय स्वाहा

ॐ खट्वाङ्गिने स्वाहा

ॐ षड्गुणाश्रयाय स्वाहा

ॐ गुणाढ्याय स्वाहा480

ॐ गहनाय स्वाहा

ॐ गेयाय स्वाहा

ॐ गद्यपद्य- सुधार्णवाय स्वाहा

ॐ गद्यगानप्रियाय स्वाहा

ॐ गर्जाय स्वाहा

ॐ गीतगीर्वाण-पूजिताय स्वाहा

ॐ गुह्याचाररताय स्वाहा

ॐ गुह्याय स्वाहा

ॐ गुह्यागमनिरूपिताय स्वाहा

ॐ गुह्याशयाय स्वाहा 490

ॐ गुडाब्धिस्थाय स्वाहा

ॐ गुरुगम्याय स्वाहा

ॐ गुरोर्गुरवे स्वाहा

ॐ घटण्टाघुर्घुरिका-मालिने स्वाहा

ॐ घटकुम्भाय स्वाहा

ॐ घटोदराय स्वाहा

ॐ चण्डाय स्वाहा

ॐ चण्डेश्वराध्यक्षाय स्वाहा

ॐ चण्डीशाय स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि
ज्योतिरसि धामाऽसि

ॐ गणनात्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनां उपमश्रवस्तमं ज्येष्ठराजं
ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः श्रृष्वन्- ऊतिभिः सीद सादनम्।

ॐ चण्डविक्रमाय स्वाहा ५००

लाक्षा-सिन्दूर सुर-वर-नमितं मोदकैर्-मोदितास्यं
हस्ते दन्तं ददानं दिनकर-सदृशं तेजसोग्रं त्रिनेत्रम्
दक्षे रत्नाक्षसूत्रं वरपशुधरं साखु-सिंहा-सनस्थं
गांगेयं रौद्र-मूर्तिं त्रिपुर-वधकरं विघ्नभक्षं नमामि (६)

ॐ चराचरपित्रे स्वाहा

ॐ चिन्तामणये स्वाहा

ॐ चर्वणलालसाय स्वाहा

ॐ छन्दसे स्वाहा

ॐ छन्दोभवाय स्वाहा

ॐ छन्दोदुर्लक्ष्याय स्वाहा

ॐ छन्दविग्रहाय स्वाहा

ॐ जगद्योनये स्वाहा

ॐ जगत्साक्षिणे स्वाहा

ॐ जगदीशाय स्वाहा 510

ॐ जगन्मयाय स्वाहा

ॐ जयाजयपराय स्वाहा

ॐ अजेय्याय स्वाहा

ॐ जितसिंहासन-प्रभवे स्वाहा

ॐ ज्वल-ज्वलोल्लसत्-दान-झङ्कारि भ्रमराकुलाय स्वाहा
ॐ टङ्कारस्फार-संरावाय स्वाहा
ॐ टङ्कारमणिनूपुराय स्वाहा
ॐ ठद्वयपल्लवान्ताय स्वाहा
ॐ सर्वमन्त्रेषुसिद्धिदाय स्वाहा
ॐ दिण्डिमुण्डाय स्वाहा 520
ॐ डाकिनीशाय स्वाहा
ॐ डामराय स्वाहा
ॐ डिण्डिमप्रियाय स्वाहा
ॐ ढक्कानिनाद-मुदिताय स्वाहा
ॐ ढङ्काय स्वाहा
ॐ ढौण्डिनायकाय स्वाहा
ॐ तत्त्वानांप्रकृति-तत्त्वाय स्वाहा
ॐ तत्त्वंपदनिरूपिताय स्वाहा
ॐ तारकान्तर-संस्थाय स्वाहा
ॐ तारकाय स्वाहा 530
ॐ तारकान्तकाय स्वाहा
ॐ स्थाणवे स्वाहा
ॐ स्थाणुप्रियाङ्गभुवे स्वाहा
ॐ स्थावरजङ्गमा-धिपाय स्वाहा
ॐ दक्षयज्ञ-प्रमथनाय स्वाहा
ॐ दात्रे स्वाहा
ॐ दानमदोदयाय स्वाहा
ॐ दयावते स्वाहा
ॐ दिव्यविभवाय स्वाहा
ॐ दण्डभृते स्वाहा 540
ॐ दण्डनायकाय स्वाहा
ॐ दन्तप्रभिन्ना-भ्रामालाय स्वाहा
ॐ दैत्यवारण-दारणाय स्वाहा
ॐ दंष्ट्रालग्नद्विप-घटाय स्वाहा
ॐ देवार्थात्त-गजाकृतये स्वाहा
ॐ धनाय स्वाहा
ॐ धनपतिबन्धवे स्वाहा
ॐ धनदाय स्वाहा
ॐ धरणीधराय स्वाहा
ॐ ध्यानैकप्रकटाय स्वाहा 550
ॐ ध्येयाय स्वाहा
ॐ ध्यानाय स्वाहा
ॐ ध्यानपरायणाय स्वाहा
ॐ ध्वनिप्रकृति-धित्काराय स्वाहा
ॐ ब्रह्माण्डावलि-मेखलाय स्वाहा
ॐ नन्दिने स्वाहा
ॐ नन्दिप्रियाय स्वाहा
ॐ नादाय स्वाहा
ॐ नादमध्य-प्रतिष्ठिताय स्वाहा
ॐ निष्कलाय स्वाहा 560

ॐ निर्मलाय स्वाहा

ॐ नित्याय स्वाहा

ॐ नित्यानित्याय स्वाहा

ॐ निरामयाय स्वाहा

ॐ परंव्योम्ने स्वाहा

ॐ परंधाम्ने स्वाहा

ॐ परमात्मने स्वाहा

ॐ परंपदाय स्वाहा

ॐ परात्पराय स्वाहा

ॐ पशुपतये स्वाहा 570

ॐ पशुपाश-विमोचनाय स्वाहा

ॐ पूर्णानन्दाय स्वाहा

ॐ परानन्दाय स्वाहा

ॐ पुराणपुरुषोत्तमाय स्वाहा

ॐ पद्मप्रसन्न-नयनाय स्वाहा

ॐ प्रणताज्ञान-नाशनाय स्वाहा

ॐ प्रमाणप्रत्यया-तीताय स्वाहा

ॐ प्रणतार्ति-निवारणाय स्वाहा

ॐ फणिहस्ताय स्वाहा

ॐ फणिपति-फूत्काराय स्वाहा

ॐ फाणितप्रियाय स्वाहा

ॐ बाणा-र्चिताङ्घ्रि-युगलाय स्वाहा

ॐ बालकेलि-कुतूहलाय स्वाहा

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा

ॐ ब्रह्मार्चितपदाय स्वाहा

ॐ ब्रह्मचारिणे स्वाहा

ॐ बृहस्पतये स्वाहा

ॐ ब्रहत्तमाय स्वाहा

ॐ ब्रह्मपराय स्वाहा

ॐ ब्राह्मण्याय स्वाहा 590

ॐ ब्रह्मवित्प्रियाय स्वाहा

ॐ भ्रूक्षेपदत्त-लक्ष्मीकाय स्वाहा

ॐ गर्भाय स्वाहा

ॐ गर्भभयापहाय स्वाहा

ॐ भगवते स्वाहा

ॐ भक्तिसुलभाय स्वाहा

ॐ भूतिदाय स्वाहा

ॐ भूतिभूषणाय स्वाहा

ॐ भव्याय स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि
ज्योतिरसि धामाऽसि

ॐ गणनात्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनां उपमश्रवस्तमं ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः श्रृष्वन्- ऊतिभिः सीद सादनम्।

ॐ भूतालयाय स्वाहा६००

गौरीपुत्रं त्रिनेत्र गजमुख सहितं नागयज्ञोपवीतं पद्माक्षं सर्वभक्षं
सकलजन-प्रियं सर्व-गन्धर्व-पूज्यम्
संपूर्ण भाल-चन्द्रं वरदम् अतिबलं
हन्तृकं चासुराणां हेरम्बम्-आदिदेवं
गणपतिम्-अमलं सिद्धि-धारारम्-ईडे (७)

ॐ भोगदात्रे स्वाहा
ॐ भ्रूमध्यगोचराय स्वाहा
ॐ मन्त्राय स्वाहा
ॐ मन्त्रपतये स्वाहा
ॐ मन्त्रिणे स्वाहा
ॐ मदमत्ताय स्वाहा
ॐ मदाननाय
ॐ मेखलाधी-श्वराय स्वाहा
ॐ मन्दगतये स्वाहा
ॐ दन्तिनिभे-क्षणाय स्वाहा 610
ॐ महाबलाय स्वाहा
ॐ महावीर्याय स्वाहा
ॐ महाप्राणाय स्वाहा
ॐ महाननाय स्वाहा
ॐ यज्ञाय स्वाहा
ॐ यज्ञपतये स्वाहा
ॐ यज्ञगोप्त्रे स्वाहा
ॐ यज्ञफलप्रदाय स्वाहा
ॐ यज्ञेश्वराय स्वाहा
ॐ यज्ञगम्याय स्वाहा 620
ॐ यागसवे स्वाहा
ॐ याजकप्रियाय स्वाहा
ॐ रसाय स्वाहा
ॐ रसप्रियाय स्वाहा
ॐ रस्यररञ्जकाय स्वाहा
ॐ रावणार्चिताय स्वाहा
ॐ राधारक्षाकराय स्वाहा
ॐ रत्नगर्भाय स्वाहा
ॐ राज्यसुखप्रदाय स्वाहा
ॐ लक्षालक्षप्रदाय स्वाहा630
ॐ लक्ष्याय स्वाहा
ॐ लक्ष्यस्थाय स्वाहा

ॐ लड्डुकप्रियाय स्वाहा
ॐ लाभ प्रियाय स्वाहा
ॐ लास्यपराय स्वाहा
ॐ लाभकृते स्वाहा
ॐ लोकविश्रुताय स्वाहा
ॐ वरेण्याय स्वाहा
ॐ वाह्निवदनाय स्वाहा
ॐ वन्द्याय स्वाहा 640
ॐ वेदान्तगोचराय स्वाहा
ॐ विश्वकर्त्रे स्वाहा
ॐ विश्वचक्षुषे स्वाहा
ॐ विधात्रे स्वाहा
ॐ विश्वतोमुखाय स्वाहा
ॐ वामदेवाय स्वाहा
ॐ विश्वजेत्रे स्वाहा
ॐ वज्रिणे स्वाहा
ॐ वज्रनिवारणाय स्वाहा
ॐ विवस्वद्बन्धनाय स्वाहा 650
ॐ विश्वाधाराय स्वाहा
ॐ विश्वेश्वराय स्वाहा
ॐ विभवे स्वाहा
ॐ शास्त्रे स्वाहा
ॐ शाखाग्रनिलयाय स्वाहा
ॐ शरण्याय स्वाहा
ॐ शम्बरेश्वराय स्वाहा
ॐ शब्द-ब्रह्ममयाय स्वाहा
ॐ प्राणाय स्वाहा
ॐ शम्भवे स्वाहा 660
ॐ शक्तिगणेश्वराय स्वाहा
ॐ षड्तुकुसुम-स्त्रग्विने स्वाहा
ॐ षडाधाराय स्वाहा
ॐ षडक्षराय स्वाहा
ॐ संसारवैद्याय स्वाहा
ॐ सर्वज्ञाय स्वाहा
ॐ सर्वभेषजभेषजाय स्वाहा
ॐ सृष्टिस्थिति-लयक्रीडाय स्वाहा
ॐ असुरकुञ्जर-भेदनाय स्वाहा
ॐ सिन्दूरित-महाकुम्भाय स्वाहा 670
ॐ सदसद्व्यक्ति-दायकाय स्वाहा
ॐ समुद्रमथने-साक्षिणे स्वाहा
ॐ स्वसंवेद्याय स्वाहा
ॐ स्वदक्षिणाय स्वाहा
ॐ स्वतन्त्राय स्वाहा
ॐ सत्यसङ्कल्पाय स्वाहा
ॐ सामगानरताय स्वाहा

ॐ सुखिने स्वाहा
ॐ हंसाय स्वाहा
ॐ हस्तिने स्वाहा 680
ॐ पिशाचेशाय स्वाहा
ॐ हवनाय स्वाहा
ॐ हव्यकव्यभुजे स्वाहा
ॐ हव्याय स्वाहा
ॐ हुतप्रियाय स्वाहा
ॐ हृष्टाय स्वाहा
ॐ हल्लेखमन्त्र-मध्यगाय स्वाहा
ॐ क्षेत्राधिपाय स्वाहा

ॐ क्षमाभर्त्रे स्वाहा
ॐ क्षमापार-परायणाय स्वाहा 690
ॐ क्षिप्रक्षेमकराय स्वाहा
ॐ क्षेमानन्दाय स्वाहा
ॐ क्षोणीसुरद्रुमाय स्वाहा
ॐ धर्मप्रदाय स्वाहा
ॐ अर्थदाय स्वाहा
ॐ कामदात्रे स्वाहा
ॐ सौभाग्यवर्धनाय स्वाहा
ॐ विद्याप्रदाय स्वाहा
ॐ विभवदाय स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि
ज्योतिरसि धामाऽसि
ॐ गणनात्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनां उपमश्रवस्तमं ज्येष्ठराजं
ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः श्रृष्वन्- ऊतिभिः सीद सादनम्।
ॐ भुक्तिमुक्ति फलप्रदाय स्वाहा७००
यं ब्रह्मा वेदान्तविदो वदन्ति परं प्रधानं पुरुषं तथान्ये
विश्वत्-गतेः कारणम्-ईश्वरं वा तस्मै नमो विघ्न-विनाशकाय

(८)

ॐ अतिरूपकराय स्वाहा
ॐ वीरश्रीप्रदाय स्वाहा
ॐ विजयप्रदाय स्वाहा
ॐ सर्ववश्यकराय स्वाहा
ॐ गर्भदोषघ्ने स्वाहा

ॐ पुत्रपौत्रदाय स्वाहा
ॐ मेधादाय स्वाहा
ॐ कीर्तिदाय स्वाहा
ॐ शोकहारिणे स्वाहा
ॐ दौर्भाग्य-नाशनाय स्वाहा710

ॐ प्रतिवादि-मुखस्तम्भाय स्वाहा

ॐ दुष्टचित्त-प्रसादनाय स्वाहा

ॐ पराभिचार-श्रवणाय स्वाहा

ॐ दुःखघ्नाय स्वाहा

ॐ बन्धमोक्षदाय स्वाहा

ॐ लवत्रुटिकलाकाष्ठा-
निमेषतत्पराय स्वाहा

ॐ क्षणाय स्वाहा

ॐ घटीमुहूर्त-प्रहाराय स्वाहा

ॐ दिवानक्ताय स्वाहा

ॐ अहर्निशाय स्वाहा 720

ॐ पक्षाय स्वाहा

ॐ मासाय स्वाहा

ॐ अयनाय स्वाहा

ॐ वर्षाय स्वाहा

ॐ युगाय स्वाहा

ॐ कल्पाय स्वाहा

ॐ महालयाय स्वाहा

ॐ राशितारातिथियोग-वारा
र्क्षकरर्णा-शकाय स्वाहा

ॐ लग्नहोरा-कालचक्राय स्वाहा

ॐ मेरवे स्वाहा 730

ॐ सप्तर्षिभ्यः स्वाहा

ॐ ध्रुवाय स्वाहा

ॐ राहवे स्वाहा

ॐ मन्दाय स्वाहा

ॐ कवये स्वाहा

ॐ जीवाय स्वाहा

ॐ बुधाय स्वाहा

ॐ भौमाय स्वाहा

ॐ शशिने स्वाहा

ॐ रवये स्वाहा 740

ॐ कालशक्तये स्वाहा

ॐ स्थितये स्वाहा

ॐ विश्वस्मै स्वाहा

ॐ स्थावराय स्वाहा

ॐ जङ्गमाय स्वाहा

ॐ जगते स्वाहा

ॐ भुवे स्वाहा

ॐ अद्भ्यः स्वाहा

ॐ अग्नये स्वाहा

ॐ मरुते स्वाहा 750

ॐ व्योम्ने स्वाहा

ॐ अहङ्कृतये स्वाहा

ॐ प्रकृतये स्वाहा

ॐ पुंसे स्वाहा

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा

ॐ विष्णवे स्वाहा

ॐ शिवाय स्वाहा
ॐ रुद्राय स्वाहा
ॐ ईशाय स्वाहा
ॐ शक्तये स्वाहा 760
ॐ सदाशिवाय स्वाहा
ॐ त्रिदशेभ्यः स्वाहा
ॐ पितृभ्यः स्वाहा
ॐ सिद्धेभ्यः स्वाहा
ॐ यक्षरक्षोभ्यः स्वाहा
ॐ किन्नरेभ्यः स्वाहा
ॐ सिद्धाविद्याधरेभ्यः स्वाहा
ॐ भूतेभ्यः स्वाहा
ॐ मनुष्येभ्यः स्वाहा
ॐ पशुभ्यः स्वाहा 770
ॐ खगेभ्यः स्वाहा
ॐ समुद्रेभ्यः स्वाहा
ॐ सरित्भ्यः स्वाहा
ॐ शैलेभ्यः स्वाहा
ॐ भूतभव्य-भवोद्भवाय स्वाहा
ॐ सांख्यपातञ्जल-योगेभ्यः स्वाहा
ॐ पुराणश्रुति-स्मृतिभ्यः स्वाहा
ॐ वेदाङ्गेभ्यः स्वाहा

ॐ समाचाराय स्वाहा
ॐ मीमांसान्याय-विस्ताराय स्वाहा 780
ॐ आयुर्वेदाय स्वाहा
ॐ धनुर्वेदाय स्वाहा
ॐ गन्धर्वाय स्वाहा
ॐ काव्याय स्वाहा
ॐ नाटकाय स्वाहा
ॐ वैखानसाय स्वाहा
ॐ भागवताय स्वाहा
ॐ मानुष्याय स्वाहा
ॐ पाञ्चरात्रिकाय स्वाहा
ॐ शैवाय स्वाहा 790
ॐ पाशुपताय स्वाहा
ॐ कालीमुखाय स्वाहा
ॐ भैरवशासनाय स्वाहा
ॐ शाक्ताय स्वाहा
ॐ वैनायकाय स्वाहा
ॐ सौरजैनार्ह-संहिताय स्वाहा
ॐ सते स्वाहा
ॐ विराजे स्वाहा
ॐ असते स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि
ज्योतिरसि धामाऽसि

ॐ गणनात्वा गणपतिं हवामहे, कविं कवीनां उपमश्रवस्तमं ज्येष्ठराजं
ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृष्वन्- ऊतिभिः सीद सादनम्।

ॐ व्यक्ताय स्वाहा८००

नमो शाश्वत-शान्ति-हेतवे, क्षमादया-पूरति-चारु-चेतसे
गजेन्द्र-रूपाय गणेश्वराय -ते, परस्य पुंसः प्रथमाय सूनवे (९)

ॐ अव्यक्ताय स्वाहा
ॐ सचेतनाय स्वाहा
ॐ अचेतनाय स्वाहा
ॐ बन्धकाय स्वाहा
ॐ मोक्षसुखदाय स्वाहा
ॐ भोगाय स्वाहा
ॐ योगाय स्वाहा
ॐ महते स्वाहा
ॐ अणवे स्वाहा
ॐ स्वस्तिहुंफट्स्वधा श्रौषट् वौषट्-वषणमयाय स्वाहा
ॐ ज्ञानाय स्वाहा
ॐ विज्ञानाय स्वाहा
ॐ आनन्दाय स्वाहा
ॐ बोधाय स्वाहा
ॐ संविदे स्वाहा
ॐ समाय स्वाहा
ॐ शमाय स्वाहा
ॐ एकाय स्वाहा
ॐ एकाक्षराधाराय स्वाहा
ॐ एकाक्षरपरयणाय स्वाहा 820
ॐ एकाग्रधिये स्वाहा
ॐ एकवीराय स्वाहा
ॐ एकानेकस्वरूपधृषे स्वाहा
ॐ द्विरूपाय स्वाहा
ॐ द्विभुजाय स्वाहा
ॐ द्व्यक्षाय स्वाहा
ॐ द्विरदाय स्वाहा
ॐ द्विपरक्षकाय स्वाहा
ॐ द्वैमाताराय स्वाहा
ॐ द्विवदनाय स्वाहा 830
ॐ द्वन्द्वहीनाय स्वाहा
ॐ दूयातिगाय स्वाहा
ॐ त्रिधामात्राकृत-स्नेहाय स्वाहा
ॐ त्रिवर्गफल-दायकाय स्वाहा

ॐ त्रिगुणात्मने स्वाहा
ॐ त्रिलोकादये स्वाहा
ॐ त्रिशक्त्यंशाय स्वाहा
ॐ त्रिलोचनाय स्वाहा
ॐ चतुर्बाहवे स्वाहा
ॐ चतुर्दन्ताय स्वाहा 840
ॐ चतुरात्मने स्वाहा
ॐ चतुर्मुखाय स्वाहा
ॐ चतुर्वर्गमयो-पायाय स्वाहा
ॐ चतुर्वर्णाश्रमा-श्रयाय स्वाहा
ॐ चतुर्वेदवचोवृत्ति-परिवृत्ति प्रवर्तकाय स्वाहा
ॐ चतुर्थीपूजन-प्रीताय स्वाहा
ॐ चतुर्थीतिथि-सम्भवाय स्वाहा
ॐ पञ्चाक्षराय स्वाहा
ॐ पञ्चात्मने स्वाहा
ॐ पञ्चास्याय स्वाहा 850
ॐ पञ्चकृत्यकृते स्वाहा
ॐ पञ्चधाराय स्वाहा
ॐ पञ्चवर्णाय स्वाहा
ॐ पञ्चाक्षर-परायणाय स्वाहा
ॐ पञ्चतालाय स्वाहा
ॐ पञ्चकराय स्वाहा
ॐ पञ्चप्रणव-भाविताय स्वाहा
ॐ पञ्चब्रह्ममय-स्फूर्तये स्वाहा
ॐ पञ्चावरण-वारिताय स्वाहा
ॐ पञ्चभक्ष्य-प्रियाय स्वाहा 860
ॐ पञ्चबाणाय स्वाहा
ॐ पञ्चशिवा-त्मकाय स्वाहा
ॐ षट्कोणपीठाय स्वाहा
ॐ षट्चक्रधाम्ने स्वाहा
ॐ षड्ग्रन्थिभेदकाय स्वाहा
ॐ षडङ्गध्वान्त-विध्वंसिने स्वाहा
ॐ षडङ्गुल-महाह्रदाय स्वाहा
ॐ षणमुखाय स्वाहा
ॐ षणमुखभ्रात्रे स्वाहा
ॐ षड्शक्ति-परिवारिताय स्वाहा 870
ॐ षड्वर्गवैरि-विध्वंसिने स्वाहा
ॐ षडूर्मि-भयभञ्जनाय स्वाहा
ॐ षट्कर्मदूराय स्वाहा
ॐ षट्कर्मिणे स्वाहा
ॐ षाड्गुण्याय स्वाहा
ॐ षड्साश्रयाय स्वाहा
ॐ सप्तपाताल-चरणाय स्वाहा
ॐ सप्तद्वीपोरु-मण्डलाय स्वाहा
ॐ सप्तस्वर्लोक-मुकुटाय स्वाहा

ॐ सप्तसप्ति-वरप्रदाय स्वाहा
ॐ सप्ताङ्गराज्य-सुखदाय स्वाहा
ॐ सप्तर्षिगण-वन्दिताय स्वाहा
ॐ सप्तच्छन्दोनिधये स्वाहा
ॐ सप्तहोत्रे स्वाहा
ॐ सप्तस्वराश्रयाय स्वाहा
ॐ सप्ताब्धिकेलि-कासाराय स्वाहा
ॐ सप्तमातृ-निषेविताय स्वाहा
ॐ सप्तच्छन्द-महामोदाय स्वाहा
ॐ सप्तच्छन्द-सुखप्रभवे स्वाहा
ॐ अष्टमूर्तये स्वाहा 890
ॐ ध्येयमूर्तये स्वाहा
ॐ अष्टप्रकृति-कारणाय स्वाहा
ॐ अष्टाङ्गयोग-फलभृते स्वाहा
ॐ अष्टपत्राम्बुजा-सनाय स्वाहा
ॐ अष्टशक्ति-समानश्रिये स्वाहा
ॐ अष्टैश्वर्य-प्रदायकाय स्वाहा
ॐ अष्टपीठो-पपीठश्रिये स्वाहा
ॐ अष्टमातृ-समावृताय स्वाहा
ॐ अष्टभैरव-सेव्याय स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि
ज्योतिरसि धामाऽसि

ॐ गणनात्वा गणपतिं हवामहे, कविं कवीनां उपमश्रवस्तमं ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः श्रृष्वन्- ऊतिभिः सीद सादनम्।

ॐ अष्टव सुवन्द्याय नमः स्वाहा ९००

देवं स्थूलतनूं गजेन्द्र वदनं लम्बोदरं सुन्दरम्
विघ्नेशं मदगन्धलोल मधुपण्यालोल गण्डस्थलम्।
दन्ताघातविदारिताहितजनं सिन्दूर शोभाकरं
वन्दे शैलसुता सुतं गणपतिं सिद्धि प्रदं कामदम्॥

नमो कारण-कारणायते नमो नमो मंगल-मंगलात्मने
नमो नमो वेदविदां मनीषिणाम् उपासनीयाय नमो-नमो-नमः १०

ॐ अष्ट,मूर्तिमते स्वाहा
ॐ अष्टवक्र,स्फुरन्मूर्तये स्वाहा
ॐ अष्ट,द्रव्यहविः-प्रियाय स्वाहा
ॐ अष्टश्रिये स्वाहा

ॐ अष्ट,सामश्रिये स्वाहा
ॐ अष्ट,हृष्टसंगीतकाय स्वाहा
ॐ नव,नागासना-धेयाय स्वाहा
ॐ नव,निविड-सेविताय स्वाहा
ॐ नवद्वारपुरा-धाराय स्वाहा
ॐ नवाधार-निकेतनाय स्वाहा
ॐ नवनारायण-स्तुत्याय स्वाहा
ॐ नवदुर्गा-निषेविताय स्वाहा
ॐ नवनाथमहा-नाथाय स्वाहा
ॐ नवनाग-विभूषणाय स्वाहा
ॐ नवरत्न-विचित्राङ्गाय स्वाहा
ॐ नवशक्तिश-राद्यताय स्वाहा
ॐ दशात्मकाय स्वाहा
ॐ दशभुजाय स्वाहा
ॐ दशदिक्पति-वन्दिताय स्वाहा
ॐ दशध्येयाय स्वाहा 920
ॐ दश,प्राणाय स्वाहा
ॐ दशेन्द्रिय-नियामकाय स्वाहा
ॐ दशाक्षर-महामन्त्राय स्वाहा
ॐ दशाशाव्यापि-विग्रहाय स्वाहा
ॐ एकादशरुद्र-स्तुत्याय स्वाहा
ॐ एकादशाक्षरैर्मनवे स्वाहा
ॐ द्वादशोद्दण्ड-दोर्दण्डाय स्वाहा
ॐ द्वादशान्त-निकेतनाय स्वाहा
ॐ त्रयोदशविधा-भिन्नविश्वे-
देवादिदैवताय स्वाहा
ॐ चतुर्दशेन्द्र,वरदाय स्वाहा 930
ॐ चतुर्दश,मनुप्रभवे स्वाहा
ॐ चतुर्दशाद्य-विद्याढ्याय स्वाहा
ॐ चतुर्दश,जगत्पतये स्वाहा
ॐ पञ्चदश,सामे स्वाहा
ॐ पञ्चदश,शीतांशुनिर्मलाय
स्वाहा
ॐ षोडशाधार-निलयाय स्वाहा
ॐ षोडशाम्बर-मातृकाय स्वाहा
ॐ षोडशान्त-पदावासाय स्वाहा
ॐ षोडशेन्दु-कलात्मकाय स्वाहा
ॐ सप्तदशी,कलायै स्वाहा 940
ॐ सप्तदशाक्षराय स्वाहा
ॐ अष्टादश-द्वीपपतये स्वाहा
ॐ अष्टादश,पुराकृते स्वाहा
ॐ अष्टादशौषधी-सृष्टये स्वाहा
ॐ अष्टादश-विधिप्रभवे स्वाहा
ॐ अष्टादश,लिपि-कृतये स्वाहा
ॐ अष्टादश-विजातिकृते स्वाहा
ॐ एकविंश,पुंसे स्वाहा
ॐ एकविंशत्यङ्गुलि-पल्लवाय
स्वाहा

ॐ चतुर्विंशति-तत्त्वात्मने स्वाहा 950

ॐ पञ्चविंशति-पूरुषाय स्वाहा

ॐ सप्तविंशति-तारेशाय स्वाहा

ॐ सप्तविंशति-योगकृते स्वाहा

ॐ द्वात्रिंशद्भैरवा-धीशाय स्वाहा

ॐ चतुस्त्रिंशत्-महाह्रदाय स्वाहा

ॐ षड्त्रिंशत्तत्त्व-सम्भूतये स्वाहा

ॐ अष्टात्रिंशत्-कलात्मकाय स्वाहा

ॐ नमदेकोनपञ्चाशन्मरुद्व र्गनिरर्गलाय स्वाहा

ॐ पञ्चाशद-अक्षरश्रेणये स्वाहा

ॐ पञ्चाश-द्रुद्र-विग्रहाय स्वाहा

ॐ पञ्चाशद्विष्णु-शक्तीशाय स्वाहा

ॐ पञ्चाशन्मातृकालयाय स्वाहा

ॐ द्विपञ्चाशत् द्विपश्रेणये स्वाहा

ॐ त्रिषष्ट्यक्षर-संश्रयाय स्वाहा

ॐ चतुःषष्टिमहासिद्धयोगिनी वृन्द वन्दिताय स्वाहा

ॐ चतुःष्ट्यर्णनिर्णेताय स्वाहा

ॐ चतुःषष्टिकला-निधये स्वाहा

ॐ अष्टषष्टिमहातीर्थ क्षेत्रभैरव भावनाय स्वाहा

ॐ चतुर्णवति-मन्त्रात्मने स्वाहा

ॐ षण्णवत्यधिक-प्रभवे स्वाहा

ॐ शतानन्दाय स्वाहा

ॐ शतधृतये स्वाहा

ॐ शतपत्रायते-क्षणाय स्वाहा

ॐ शतानेकाय स्वाहा

ॐ शतमुखाय स्वाहा

ॐ शतधार-वरायुधाय स्वाहा

ॐ सहस्त्रपत्रनिलयाय स्वाहा

ॐ सहस्त्रफणि-भूषणाय स्वाहा

ॐ सहस्त्रशीर्षाय-पुरुषाय स्वाहा

ॐ सहस्त्राक्षाय स्वाहा

ॐ सहस्त्रपादे स्वाहा

ॐ सहस्त्रनाम-संस्तुत्याय स्वाहा

ॐ सहस्त्राक्ष-बलापहाय स्वाहा

ॐ दशसहस्त्र-फणिभृते स्वाहा

ॐ फणिराज-कृतासनाय स्वाहा

ॐ अष्टाशीतिसहस्त्रौघ-महर्षि स्तोत्र पाठिताय स्वाहा

ॐ लक्ष्याधार-प्रियाधाराय स्वाहा

ॐ लक्ष्याधार-मनोलयाय स्वाहा

ॐ चतुर्लक्ष-जगत्प्रीताय स्वाहा

ॐ चतुर्लक्ष-प्रकाशकाय स्वाहा

ॐ कोटिसूर्य-प्रतीकाशाय स्वाहा

ॐ कोटिचन्द्रांशु-निर्मलाय स्वाहा

ॐ शिवोद्भवद्व्यष्टकोटि-विनायक धुरन्धराय स्वाहा

ॐ सप्तकोटिमहामन्त्र-मन्त्रितावयवद्युतये स्वाहा

ॐ त्रयस्त्रिंशत्कोटिसुरश्रेणी-प्रणत पादुकाय स्वाहा

ॐ चतुरशीतिलक्षात्मजीव-देह व्यवस्थितये स्वाहा

ॐ अनन्तनाम्ने स्वाहा

ॐ अनन्तश्रिये स्वाहा

ॐ अनन्ताय स्वाहा स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि
ज्योतिरसि धामाऽसि

ॐ गणनात्वा गणपतिं हवामहे, कविं कवीनां उपमश्रवस्तमं ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः श्रृष्वन्- ऊतिभिः सीद, सादनम्।

ॐ अनन्तसौख्यदाय नमः१०००

फल :

इति वैनायकस्येदं नाम्नां सहस्त्रम्-ईरितम्। इदं ब्राह्मे मुहूर्ते यः पठति प्रत्यहं नरः, करस्थं तस्य सकलम्-ऐहिकामुष्मिकं सुखम्, आयुर्-आरोग्यम्-ऐश्वर्यम्-धैर्यं शौर्यं बलं यशः। मेधा प्रजा धृतिः कान्तिः-सौभाग्यम्-अति-रूपता। सत्यं दया, क्षमा, शान्ति, दाक्षिण्यं धर्मशीलता, सभा-पाण्डित्यम्-औदार्यं गाम्भीर्यं ब्रह्म-वर्चसम्-ओजस्तेजः कुलं शीलं प्रतापं वीर्यम्-आर्यता। ज्ञानं विज्ञानम्-अस्तिक्यं धनं धान्यं भवेत्-ध्रुवम् शाकिनीं, डाकिनी, रक्षो-यक्ष-ग्रहाप-हारकम् साम्राज्य सुख सर्व-सपत्न-मद-मर्दनम्। दुःस्वप्न-नाशनं नित्यं स्वामि-चिन्ह प्रसादनम्। संग्राम-रंगे सर्वेषाम्-इदम्-एं जय-प्रदम्। गर्भरक्षा करं सर्व वंध्या दोष निवारकम्। पठ्यते प्रत्यहं यत्र स्तोत्र गणपतेर्-इदम्। देशे तत्र न-दुर्भिक्षम्-ईतयो दुरितानि च मनोरथप्रदं नित्यं, सर्वरोग-विनाशकम्, महागणपतये-नाम्नां सहस्त्रं पठ्यते होमे तुयः। सायं मध्यं दिने प्रातः तस्य सिद्धिर्- भवेत-ध्रुवम्।

पुनः तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि धामाऽसि

ॐ गणानात्वा गणपतिं हवामहे, कविं कवीनां उपमश्रवस्तमं ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनःश्रृष्वन्-ऊतिभिः सीदः, सादनम्।

स्वाहाः

तर्पण करते हुये पढ़ें :-

अनेन-श्रीगणपति स्वाहाकार-होमेन भगवान् विनायकः एकदन्तः कृष्णपिंगलः गजाननः लम्बोदरः भालचन्द्रः हेरम्ब विघ्नेशः वल्लभा-सहितः श्रीमहागणेशः प्रीयतां प्रीतोस्तु।

सूर्यसहस्त्रनामावली

सूर्यसहस्त्रनाम स्वाहाकार पूजन विधिः

अग्नि में फूल डालते हुये पढ़ें:-

श्रीदेव-उवाच-

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि सूर्य-नामसहस्त्रकम्। यस्य तु पाठ-मात्रेण सर्वे नश्यन्ति चामयाः॥

विनियोग करते हुये पढ़ें:-

अस्य श्री सूर्यसहस्त्रनाम मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, सूर्यो देवता, ह्रां बीजं, ह्रीं शक्तिः सः कीलकं आत्मनोवाङ्गमनः कायोपार्जितपापनिवारणार्थं होमे/पुष्पार्चने विनियोगः

(करन्यासः)

ॐ ह्रां अगुष्ठाभ्यां नमः,

ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः,

ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः

ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः

ॐ ह्रौं कनिष्ठकाभ्यां नमः

ॐ ह्रः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः स्वाहा

प्राणायाम करके हाथ में फूल लेकर पढ़िये (ध्यान)

(अगन्यासः)

ॐ ह्रां हृदयाय नमः,

ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा,

ॐ ह्रूँ शिरवायै वषट्,

ॐ ह्रैँ कवचाय हुँ,

ॐ ह्रौं नेत्राभ्यां वौषट,

ॐ ह्रः अस्त्राय फट्,

प्रत्यक्ष-देवं विशदं सहस्त्र-मरीचिभिः शोभित-भूमि देशम्। सप्ताश्वगं सत्-ध्वज हस्तम्-आद्यं, देवं भजेहं मिहिरं हृदब्जे।

आहुति डालिये–

(१) भास्कराय विद्महे स्वाहा, सहस्त्र-रश्मये धीमहि स्वाहा, तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् स्वाहा

(२) भास्कराय विद्महे, सहस्त्ररश्मये धीमहि स्वाहा, तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् स्वहा।

(३) भास्करायविद्महे सहस्त्र रश्मये धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् स्वाहा।

अग्नि में फूल डालते हुए–

१. ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती, नारायणः सरिसिजा-सनसन्निविष्टः। केयूरवान् मकरकुण्डलवानकिरीटी, हारी हिरण्य-मयवपुर्धृतशंखचक्रः।

केवल शकर तथा घी की आहुति देते हुए पढ़ें :-

ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्याय स्वाहा	ॐ सृष्टिहर्त्रे स्वाहा
ॐ भगवते स्वाहा	ॐ जगत्पतये स्वाहा
ॐ सर्वलोकेशाय स्वाहा	ॐ आदित्याय वरप्रदाय स्वाहा
ॐ भूतेशाय स्वाहा	ॐ वीराय स्वाहा10
ॐ भूतभावनाय स्वाहा	ॐ वीरलाय स्वाहा
ॐ भूतात्मने स्वाहा	ॐ विश्वदीप्ताय स्वाहा
ॐ सृष्टिकर्त्रे स्वाहा	ॐ विश्वकृते स्वाहा

ॐ विश्वहृते स्वाहा
ॐ भक्ताये स्वाहा
ॐ भोक्त्रे स्वाहा
ॐ भीमाय स्वाहा
ॐ भयापहाय स्वाहा
ॐ विश्त्रात्मने स्वाहा 20
ॐ पुरुषाय स्वाहा
ॐ साक्षिणे स्वाहा
ॐ परंब्रह्मणे स्वाहा
ॐ परमात्मने स्वाहा
ॐ प्रतापवते
ॐ विश्वयोनये स्वाहा
ॐ विश्वेशाय स्वाहा
ॐ विश्वतोमुखाय स्वाहा
ॐ कामिने स्वाहा
ॐ योगिने स्वाहा 30
ॐ महाबुद्धये स्वाहा
ॐ महसे स्वाहा
ॐ मनवे स्वाहा
ॐ अव्ययाय स्वाहा
ॐ प्रजापतये स्वाहा
ॐ विश्ववन्द्याय स्वाहा
ॐ वन्दिताय स्वाहा
ॐ भुवनेश्वराय स्वाहा

ॐ भूतभव्य,भविष्यात्मने स्वाहा
ॐ तत्त्वात्मने स्वाहा 40
ॐ ज्ञानवते स्वाहा
ॐ गुणिने स्वाहा
ॐ सात्विकाय स्वाहा
ॐ राजसाय स्वाहा
ॐ तामसाय स्वाहा
ॐ तपस्विने स्वाहा
ॐ करुणानिधये स्वाहा
ॐ सहस्त्रकिरणाय स्वाहा
ॐ भास्वते स्वाहा
ॐ भर्गवाय स्वाहा 50
ॐ भृगवे स्वाहा
ॐ ईश्वराय स्वाहा
ॐ निर्गुणाय स्वाहा
ॐ निर्दयाय स्वाहा
ॐ नित्याय स्वाहा
ॐ नित्यानन्दाय स्वाहा
ॐ निराश्रयाय स्वाहा
ॐ तपस्विने स्वाहा
ॐ कालकृते स्वाहा
ॐ कालाय स्वाहा 60
ॐ कामनीयतनवे स्वाहा
ॐ कृशाय स्वाहा

ॐ दुर्दर्शाय स्वाहा
ॐ सुदर्शनाय स्वाहा
ॐ दाशार्हाय स्वाहा
ॐ दीनबन्धवे स्वाहा
ॐ दयाकराय स्वाहा
ॐ द्विभुजाय स्वाहा
ॐ अष्टभुजाय स्वाहा
ॐ धीराय स्वाहा 70
ॐ दशबाहवे स्वाहा
ॐ दशातिगाय स्वाहा
ॐ दशांशफळदाय स्वाहा
ॐ विष्णवे स्वाहा
ॐ जिगीषवे स्वाहा
ॐ जयविज्जयिने स्वाहा
ॐ जटिलाय स्वाहा
ॐ निर्मायाय स्वाहा
ॐ भानवे स्वाहा
ॐ पद्महस्ताय स्वाहा 80
ॐ कुशीरकाय स्वाहा

ॐ समाहितगतये स्वाहा
ॐ धात्रे स्वाहा
ॐ विधात्रे स्वाहा
ॐ कृतमङ्गलाय स्वाहा
ॐ मार्तण्डाय स्वाहा
ॐ लोकभृते स्वाहा
ॐ त्रात्रे स्वाहा
ॐ रुद्राय स्वाहा
ॐ भद्रप्रदाय स्वाहा 90
ॐ प्रभवे स्वाहा
ॐ अरातिशमनाय स्वाहा
ॐ शान्ताय स्वाहा
ॐ शङ्कराय स्वाहा
ॐ कमलासनाय स्वाहा
ॐ अचिन्त्यवपुषे स्वाहा
ॐ श्रेष्ठाय स्वाहा
ॐ महाचीन,क्रमेश्वराय स्वाहा
ॐ महार्तिदमनाय स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि
ज्योतिरसि धामाऽसि

चित्रं देवानां उदगादनीकं चक्षुर्मित्त्रस्य वरुणस्याग्नेः आप्राद्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य अत्मा जगतस्तस्थुश्च।

ॐ दान्ताय स्वाहा१००

२. नमोस्तु सूर्याय सहस्त्ररश्मये, सहस्त्रशाखान्वितसम्भवात्मने। सहस्त्रयोगोत् भवभूतिभागिने, सहस्त्रसंख्यायुगधारिणे नमः यनमण्डलं दीप्तिकरं विशालं, तद्रत्नप्रभं तीव्रम् अनादिरूपम्। दारिद्र्यदुःख-क्षयकारणं च, पुनातु मां तत् सवितुर्वरेण्यम्।

ॐ महामोहहराय स्वाहा
ॐ हरये स्वाहा
ॐ नियतात्मने स्वाहा
ॐ कालेशाय स्वाहा
ॐ दिनेशाय स्वाहा
ॐ भक्तवत्सलाय स्वाहा
ॐ कल्याणकारिणे स्वाहा
ॐ कामदाय स्वाहा
ॐ र्कंकशाय स्वाहा
ॐ कामवल्लभाय स्वाहा 110
ॐ सामगाय स्वाहा
ॐ पञ्चमाय स्वाहा
ॐ द्रव्याय स्वाहा
ॐ ध्रुवाय स्वाहा
ॐ दीनजनप्रियाय स्वाहा
ॐ त्रिजटाय स्वाहा
ॐ रक्तवाससे स्वाहा
ॐ रक्तवाहनाय
ॐ रतिप्रियाय स्वाहा
ॐ कालयोगिने स्वाहा 120

ॐ महानादाय स्वाहा
ॐ निश्चलाय स्वाहा
ॐ अदृश्यरूपधृते स्वाहा
ॐ गम्भीरघोषये स्वाहा
ॐ निर्घोषाय स्वाहा
ॐ घटहस्ताय स्वाहा
ॐ महामायाय स्वाहा
ॐ रक्ताम्बरधराय स्वाहा 130
ॐ रक्ताय स्वाहा
ॐ रक्तमाल्याय स्वाहा
ॐ अनुलेपनाय स्वाहा
ॐ सहस्त्रहस्ताय स्वाहा
ॐ विजयाय स्वाहा
ॐ हरिगामिने स्वाहा
ॐ हरिश्वराय स्वाहा
ॐ मुण्डाय स्वाहा
ॐ कुण्डिने स्वाहा
ॐ भुजङ्गेशाय स्वाहा
ॐ रथिने स्वाहा
ॐ सुरथ,पूजिताय स्वाहा 140

ॐ न्यग्रोध,वासिने स्वाहा
ॐ न्यग्रोधाय स्वाहा
ॐ वृक्षकर्णाय स्वाहा
ॐ ऊरून्धराय स्वाहा
ॐ शिखिने स्वाहा
ॐ दण्डिने स्वाहा
ॐ जटिने स्वाहा
ॐ ज्वालिने स्वाहा
ॐ ज्वालाय स्वाहा
ॐ तेजोमयाय स्वाहा 150
ॐ विभवे स्वाहा
ॐ हेमाय स्वाहा
ॐ हेमकराय स्वाहा
ॐ हारिणे स्वाहा
ॐ हरिद्रत्ना,सनस्थिताय स्वाहा
ॐ हरिदश्वाय स्वाहा
ॐ जगद्वासिने स्वाहा
ॐ जगतांपत्तये स्वाहा
ॐ इङ्गलाय
ॐ विरोचनाय स्वाहा 160
ॐ विलासिने स्वाहा
ॐ विरूपाक्षाय स्वाहा
ॐ विकर्तनाय स्वाहा
ॐ विनायकाय स्वाहा
ॐ विभासाय स्वाहा
ॐ भासाय स्वाहा
ॐ भासांपतये स्वाहा
ॐ पतये स्वाहा
ॐ मतिमते स्वाहा
ॐ रतिमते स्वाहा 170
ॐ शोभनाक्षाय स्वाहा
ॐ विशालाक्षाय स्वाहा
ॐ विशांपतये स्वाहा
ॐ बालरूपाय स्वाहा
ॐ गिरिचराय स्वाहा
ॐ गीर्पतये स्वाहा
ॐ गोमतीपतये स्वाहा
ॐ गङ्गाधराय स्वाहा
ॐ गणाध्यक्षाय स्वाहा
ॐ गणसेव्याय स्वाहा 180
ॐ गणेश्वराय स्वाहा
ॐ गिरीशतनया;वासिने स्वाहा
ॐ सर्ववासिने स्वाहा
ॐ सतीप्रियाय स्वाहा
ॐ सत्यात्मकाय स्वाहा
ॐ सत्यधराय स्वाहा
ॐ सत्यसन्धाय स्वाहा
ॐ सहस्त्रगवे स्वाहा

ॐ अपारमहिम्ने स्वाहा
ॐ प्रजापवते स्वाहा 190
ॐ मुक्ताय स्वाहा
ॐ मक्तिदाय स्वाहा
ॐ मोक्षदायकाय स्वाहा
ॐ अमूर्तिमते स्वाहा
ॐ दुर्दराय स्वाहा
ॐ मूर्ताय स्वाहा
ॐ तुटिरूपाय स्वाहा
ॐ लबात्मकाय स्वाहा
ॐ प्राणेशाय स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि
ज्योतिरसि धामाऽसि
चित्रं देवानां उदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः आप्राद्यावापृथिवी
अन्तरिक्षं सूर्य अत्मा जगतस्तस्थुश्च।
ॐ व्यानाय स्वाहा२००

३. यन्-मण्डलं देवगणैः सुपूजितं, ब्रह्मर्षि-देवर्षि-नृपर्षि-भावितम्, तं देव-देवं प्रणमामि सूर्यं, पुनातु मां तत्-सवितु-र्वरेण्यम्।

ॐ अपानाय स्वाहा
ॐ समानाय स्वाहा
ॐ उदानरूपवते स्वाहा
ॐ पक्षाय स्वाहा
ॐ मासाय स्वाहा
ॐ ऋतवे स्वाहा
ॐ वर्षाय स्वाहा
ॐ दिनकालेश्वरे,श्वराय स्वाहा
ॐ अयनाय स्वाहा
ॐ युगरूपाय स्वाहा 210
ॐ कृतिने स्वाहा
ॐ त्रेतायुगाय स्वाहा
ॐ त्रिपादे स्वाहा
ॐ द्वापराय स्वाहा
ॐ कलियुगाय स्वाहा
ॐ कालाय स्वाहा
ॐ कालात्मने स्वाहा
ॐ कलिनाशनाय स्वाहा
ॐ मन्वन्तरात्मकाय स्वाहा
ॐ देवाय स्वाहा 220
ॐ चक्राय स्वाहा
ॐ त्रिभुवनेश्वराय स्वाहा

ॐ वासवाय स्वाहा
ॐ अग्नये स्वाहा
ॐ यमाय स्वाहा
ॐ रक्षसे स्वाहा
ॐ वरुणाय स्वाहा
ॐ यादसांपतये स्वाहा
ॐ वायवे स्वाहा
ॐ वैश्रवणाय स्वाहा 230
ॐ शैवाय स्वाहा
ॐ गिरिशाय स्वाहा
ॐ जलजासनाय स्वाहा
ॐ अनन्ताय स्वाहा
ॐ अनन्तमहिम्ने स्वाहा
ॐ परमेष्ठिने स्वाहा
ॐ गतज्वराय स्वाहा
ॐ कल्पान्त,कालाग्नये स्वाहा
ॐ क्रूराय स्वाहा
ॐ कालाय स्वाहा 240
ॐ दावाग्नये स्वाहा
ॐ कालसूदनाय स्वाहा
ॐ महाप्रलयेकृतिने स्वाहा
ॐ कृत्याय स्वाहा
ॐ कृत्यशिने स्वाहा
ॐ युगवर्तनाय स्वाहा
ॐ कालवर्तनाय स्वाहा
ॐ युगधराय स्वाहा
ॐ युगादये स्वाहा
ॐ शर्वरीश्वराय स्वाहा 250
ॐ आकाश,निधिरूपाय स्वाहा
ॐ सर्वकाल,प्रवर्तकाय स्वाहा
ॐ अचिन्त्याय स्वाहा
ॐ सुबलाय स्वाहा
ॐ बालिका,वल्लभाय स्वाहा
ॐ वराय स्वाहा
ॐ वरदाय स्वाहा
ॐ वीर्यदाय स्वाहा
ॐ वाग्मिने स्वाहा
ॐ वाक्पतये स्वाहा 260
ॐ वाग्विलासकाय स्वाहा
ॐ साङ्ख्येश्वराय स्वाहा
ॐ वेदरम्याय स्वाहा
ॐ मन्त्रेशाय स्वाहा
ॐ तन्त्रनायकाय स्वाहा
ॐ कुलाचारपराय स्वाहा
ॐ नुत्याय स्वाहा
ॐ स्तुतितुष्टाय स्वाहा
ॐ नतिप्रियाय स्वाहा
ॐ आलसाय स्वाहा 270

ॐ तुलसीसेव्याय स्वाहा
ॐ तुष्टाय स्वाहा
ॐ रोगनिवर्हणाय स्वाहा
ॐ प्रस्कन्दनाय स्वाहा
ॐ विभागाय स्वाहा
ॐ नीरगाय स्वाहा
ॐ दशदिक्पतये स्वाहा
ॐ वैराग्याय स्वाहा
ॐ विमानस्थाय स्वाहा
ॐ रक्तकुम्भधराय स्वाहा 280
ॐ आयुधाय स्वाहा
ॐ महापादाय स्वाहा
ॐ महाहस्ताय स्वाहा
ॐ महाकायाय स्वाहा
ॐ महाशयाय स्वाहा
ॐ ऋग्यजुषे स्वाहा
ॐ सामरूपाय स्वाहा
ॐ त्वष्ट्रे स्वाहा
ॐ अथर्वधाम,शाखिलाय स्वाहा
ॐ सहस्त्रशाखिने स्वाहा 290
ॐ सदऽसते स्वाहा
ॐ व्यक्ताय स्वाहा
ॐ महाकल्पप्रियाय स्वाहा
ॐ पुंसे स्वाहा
ॐ कलावृक्षाय स्वाहा
ॐ मन्दिराय स्वाहा
ॐ मन्दराचल,शोभनाय स्वाहा
ॐ मेरवे स्वाहा
ॐ हिमालयाय स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि
ज्योतिरसि धामाऽसि
र्चित्रं देवानां उदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः आप्राद्यावापृथिवी
अन्तरिक्षं सूर्य अत्मा जगतस्तस्थुश्च।
ॐ मालिने स्वाहा[३००]

४. यन्मण्डलं ज्ञानघनं त्वगम्यं, त्रैलोक्यपूज्यं त्रिगुणात्मरूपम्,
समस्ततेजोमयदिव्यरूपं, पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम्।

ॐ मलयाय स्वाहा
ॐ मालयद्रुमाय स्वाहा
ॐ सन्तानाय स्वाहा
ॐ कुसुमा,च्छन्नाय स्वाहा

ॐ सन्तान,फलदाय स्वाहा

ॐ विराजे स्वाहा

ॐ क्षीराम्भोधये स्वाहा

ॐ घृताम्भोधये स्वाहा

ॐ जलधये स्वाहा

ॐ क्लेश,नाशनाय स्वाहा 310

ॐ रत्नाकाय स्वाहा

ॐ महामान्याय स्वाहा

ॐ वेणवे स्वाहा

ॐ वीणाधराय स्वाहा

ॐ वणिजे स्वाहा

ॐ वसन्ताय स्वाहा

ॐ सरसामऽन्ताय स्वाहा

ॐ ग्रीष्माय स्वाहा

ॐ कल्मषनाशनाय स्वाहा

ॐ वर्षाकालाय स्वाहा 320

ॐ वर्षपतये स्वाहा

ॐ शरदम्भोज,वल्लभाय स्वाहा

ॐ हेमन्ताय स्वाहा

ॐ हेमकेयूराय स्वाहा

ॐ शिशिराय स्वाहा

ॐ शिशुवीर्यदाय स्वाहा

ॐ सुमतये स्वाहा

ॐ सुगतये स्वाहा

ॐ साधवे स्वाहा

ॐ विष्णवे स्वाहा 330

ॐ सस्वराय स्वाहा

ॐ अम्बिकासुताय स्वाहा

ॐ सारंग्रीवाय स्वाहा

ॐ महाराजाय स्वाहा

ॐ सानन्दाय स्वाहा

ॐ नन्दिसेविताय स्वाहा

ॐ सुमेरु,शिखर,वासिने स्वाहा

ॐ सप्त,पाताल,गोचराय स्वाहा

ॐ आकाशचारिणे स्वाहा

ॐ नित्यात्मने स्वाहा 340

ॐ विभवे स्वाहा

ॐ विजयप्रदाय स्वाहा

ॐ कुलकान्ताय स्वाहा

ॐ कुलाद्रीशाय स्वाहा

ॐ विनयाय स्वाहा

ॐ विजयिने स्वाहा

ॐ नियताय स्वाहा

ॐ विश्वम्भराय स्वाहा

ॐ वियच्चारिणे स्वाहा

ॐ वियद्रूपाय स्वाहा 350

ॐ वियद्रथाय स्वाहा

ॐ सुरथाय स्वाहा

ॐ सुगतये स्वाहा
ॐ स्तुत्याय स्वाहा
ॐ वेणुवादनतत्पराय स्वाहा
ॐ गोपालाय स्वाहा
ॐ गोपतये स्वाहा
ॐ गोप्त्रे स्वाहा
ॐ प्रतिष्ठायै स्वाहा
ॐ प्रजापतये स्वाहा 360
ॐ आवेदनीयाय स्वाहा
ॐ वेदाक्षाय स्वाहा
ॐ महादिव्यवपुषे स्वाहा
ॐ सुराजे स्वाहा
ॐ निर्जीवाय स्वाहा
ॐ जीवनाय स्वाहा
ॐ मन्त्रिणे स्वाहा
ॐ महार्णवाय स्वाहा
ॐ निनादभृते स्वाहा
ॐ वासनाय स्वाहा 370
ॐ आवर्तनाय स्वाहा
ॐ नित्याय स्वाहा
ॐ सर्वनाम्ने स्वाहा
ॐ प्रभवे स्वाहा
ॐ स्वधिये स्वाहा
ॐ न्यायनिर्वापणाय स्वाहा
ॐ शूलिने स्वाहा
ॐ कपालिने स्वाहा
ॐ पद्ममध्यगाय स्वाहा
ॐ त्रिकोणनिलयाय स्वाहा 380
ॐ देवदेवाय स्वाहा
ॐ बिन्दुमण्डलमध्यगाय स्वाहा
ॐ बहुमालाय स्वाहा
ॐ महामालाय स्वाहा
ॐ दिव्यमालाधराय स्वाहा
ॐ अजपाय स्वाहा
ॐ जपाकुसुमसङ्काशाय स्वाहा
ॐ जपपूजाफलप्रदाय स्वाहा
ॐ सहस्रमूर्ध्ने स्वाहा
ॐ देवेन्द्राय स्वाहा 390
ॐ सहस्रनयनाय स्वाहा
ॐ रवये स्वाहा
ॐ सर्वतत्त्वाश्रयाय स्वाहा
ॐ ब्रध्नाय स्वाहा
ॐ वीरवन्द्याय स्वाहा
ॐ विभावसवे स्वाहा
ॐ विश्वावसवे स्वाहा
ॐ वसुपतये स्वाहा
ॐ वसुनाथाय स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि
ज्योतिरसि धामाऽसि
चित्रं देवानां उदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्ने: आप्राद्यावापृथिवी
अन्तरिक्षं सूर्य अत्मा जगतस्तस्थुश्च।
ॐ विसर्गवते स्वाहा४००

५. यन्मण्डलं गूढम्-अति-प्रबोधं, धर्मस्य वृद्धिं कुरुते जनानाम्,
यत्-सर्व-पाप-क्षय- कारणं च, पुनातु मां तत् सवितु-र्वरेण्यम्।

ॐ आदये स्वाहा
ॐ आदित्य,लोकेशाय स्वाहा
ॐ सर्वगामिने स्वाहा
ॐ कलाश्रयाय स्वाहा
ॐ भोगीन्द्रशय्याय स्वाहा
ॐ देवदेवेन्द्राय स्वाहा
ॐ नरेन्द्राय स्वाहा
ॐ हव्यवाहनाय स्वाहा
ॐ विद्याधराय स्वाहा
ॐ विघेशाय 410
ॐ यक्षेशाय स्वाहा
ॐ रक्षणाय स्वाहा
ॐ गुरवे स्वाहा
ॐ रक्षायै स्वाहा
ॐ कुब्जैकवरदाय स्वाहा
ॐ गन्धर्व,कुलपूजिताय स्वाहा
ॐ अप्सरोवन्दिताय स्वाहा
ॐ जयाय स्वाहा

ॐ जेत्रे स्वाहा
ॐ दैत्यनिवर्हणाय स्वाहा 420
ॐ गुह्यकेशाय स्वाहा
ॐ पिशाचाय स्वाहा
ॐ किन्नरपूजिताय स्वाहा
ॐ कुलजाय स्वाहा
ॐ सिद्धसेव्याय स्वाहा
ॐ समाम्नायाय स्वाहा
ॐ साधुसेव्याय स्वाहा
ॐ सरित्पतये स्वाहा
ॐ ललाटाक्षाय स्वाहा
ॐ विश्वदेवाय स्वाहा 430
ॐ नियमाय स्वाहा
ॐ नियमेन्द्रियाय स्वाहा
ॐ अर्काय स्वाहा
ॐ अकर्कान्ताय स्वाहा
ॐ रत्नेशाय स्वाहा
ॐ अनन्तबाहवे स्वाहा

ॐ लेपकाय स्वाहा
ॐ अलिपात्रधराय स्वाहा
ॐ अङ्गनाय स्वाहा
ॐ अम्बरेशाय स्वाहा 440
ॐ अम्बेरशयाय स्वाहा
ॐ अकाराय स्वाहा
ॐ मातृकानाथाय स्वाहा
ॐ आदिदेवनाम्ने स्वाहा
ॐ देवानामादये स्वाहा
ॐ आकृतिने स्वाहा
ॐ आरोग्यकारिणे स्वाहा
ॐ आनन्दविग्रहाय स्वाहा
ॐ ग्रहाय स्वाहा
ॐ आलोककृते स्वाहा 450
ॐ आदित्याय स्वाहा
ॐ वीराय स्वाहा
ॐ अदिति,प्राणाधिकाय स्वाहा
ॐ आकाशरूपाय स्वाहा
ॐ स्वाकाराय स्वाहा
ॐ इन्द्रादि,स्वर,पूजिताय स्वाहा
ॐ इन्दिरापूजिताय स्वाहा
ॐ इन्दवे स्वाहा
ॐ इन्द्राय स्वाहा
ॐ लोक,त्रयाश्रयाय स्वाहा 460
ॐ इनाय स्वाहा
ॐ ईशानाय स्वाहा
ॐ चन्द्राय स्वाहा
ॐ ईशाय स्वाहा
ॐ ईशानवल्लभाय स्वाहा
ॐ उन्नतास्याय स्वाहा
ॐ उन्नतवपुषे स्वाहा
ॐ उन्नताङ्घ्रि,चराय स्वाहा
ॐ गुरवे स्वाहा
ॐ उत्पलाय स्वाहा 470
ॐ उच्चलत्केशवते स्वाहा
ॐ उच्चैर्हयाय स्वाहा
ॐ गतये स्वाहा
ॐ सुखिने स्वाहा
ॐ उकाराय स्वाहा
ॐ अकारसुखिताय स्वाहा
ॐ ऊष्माय स्वाहा
ॐ निधिभूषणाय स्वाहा
ॐ अनूरुसारथिने स्वाहा
ॐ उष्णभानवे स्वाहा 480
ॐ ऊकारवल्लभाय स्वाहा
ॐ ऋणहस्ताय स्वाहा
ॐ ऋलिहस्ताय स्वाहा
ॐ ऋऋभूषणाय स्वाहा

ॐ भूषिताय स्वाहा

ॐ क्लृप्ताङ्गाय स्वाहा

ॐ लृआसनस्थाय स्वाहा

ॐ लृलृगण्ड,युगोज्ज्वलाय स्वाहा

ॐ एणाङ्काय स्वाहा

ॐ अमृतदाय स्वाहा 490

ॐ चीनपट्टभृते स्वाहा

ॐ बहुशश्वराय स्वाहा

ॐ एकचक्ररथाय स्वाहा

ॐ एकाय स्वाहा

ॐ अनेकचक्षुषे स्वाहा

ॐ एकदेवाय स्वाहा

ॐ एक बीजरमणाय स्वाहा

ॐ ए ऐ ओष्टाय स्वाहा

ॐ अमृताकराय स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि
ज्योतिरसि धामाऽसि

चित्रं देवानां उदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः आप्राद्यावापृथिवी
अन्तरिक्षं सूर्य अत्मा जगतस्तस्थुश्च।

ॐ वैकर्तनाय स्वाहा५००

६. यन्मण्डलं व्याधि-विनाशदक्षं यत्-ऋक-यजुः सामसु संप्रगीतम्, प्रकाशितं येन च भूर्भुवः स्वः, पुनातु मां तत्सवितु-र्वरेण्यम्।

ॐ कारकारणाय स्वाहा

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा

ॐ औकारौचित्यमण्डनाय स्वाहा

ॐ ओऔदन्तालिरञ्जिताय स्वाहा

ॐ महते स्वाहा

ॐ महतांपतये स्वाहा

ॐ अविद्याभूषणाय स्वाहा

ॐ भूष्याय स्वाहा

ॐ लक्ष्मीशाय स्वाहा

ॐ बीजरूपवते स्वाहा 510

ॐ अप्स्वरूपाय स्वाहा

ॐ स्वरमयाय स्वाहा

ॐ सर्वस्वरपरात्मकाय स्वाहा

ॐ अं अः स्वरूपमन्त्रङ्गाय स्वाहा

ॐ कलिकालनिवर्तकाय स्वाहा

ॐ कर्मणे स्वाहा

ॐ एकवरदाय स्वाहा

ॐ कर्मसाक्षिणे स्वाहा

ॐ कल्मषनाशनाय स्वाहा
ॐ कचध्वंसिने स्वाहा 520
ॐ कपिलाय स्वाहा
ॐ कनकाचलचारकाय स्वाहा
ॐ कान्ताय स्वाहा
ॐ कामाय स्वाहा
ॐ कपये स्वाहा
ॐ क्रूराय स्वाहा
ॐ कीर्णाय स्वाहा
ॐ केशिनिसूदनाय स्वाहा
ॐ कृष्णाय स्वाहा
ॐ कपालिने स्वाहा 530
ॐ कपालमोचकाय स्वाहा
ॐ काशाय स्वाहा
ॐ कश्मीरघनसारभृते स्वाहा
ॐ कजत्किन्नरगीतेष्टाय स्वाहा
ॐ कुलराजाय स्वाहा
ॐ कुलन्धराय स्वाहा
ॐ कुलवासिने स्वाहा
ॐ कुलकौलेशाय स्वाहा
ॐ ककाराक्षरमण्डनाय स्वाहा
ॐ खवासिने स्वाहा 540
ॐ खेटकेशाय स्वाहा
ॐ खण्डमुण्डधराय स्वाहा
ॐ खगाय स्वाहा
ॐ खगेश्वराय स्वाहा
ॐ खेचराय स्वाहा
ॐ खेचरीगणसेविताय स्वाहा
ॐ खरांशवे स्वाहा
ॐ खेटकधराय स्वाहा
ॐ खलहस्ताय स्वाहा
ॐ खवर्णाय स्वाहा 550
ॐ गन्त्रे स्वाहा
ॐ गीतप्रियाय स्वाहा
ॐ गेयाय स्वाहा
ॐ गयावासिने स्वाहा
ॐ गुणाश्रयाय स्वाहा
ॐ गुणातीताय स्वाहा
ॐ गोलोकगतये स्वाहा
ॐ गुच्छलाय स्वाहा
ॐ गुणसेविताय स्वाहा
ॐ गदाधराय स्वाहा 560
ॐ पद्मधराय स्वाहा
ॐ गाङ्गेयवरप्रदाय स्वाहा
ॐ प्रयोगिने स्वाहा
ॐ गिङ्गिलाय स्वाहा
ॐ गटिलाय स्वाहा
ॐ गान्ताय स्वाहा

ॐ गकाराक्षरभास्कराय स्वाहा

ॐ घृणिमते स्वाहा

ॐ घुर्घुरारावाय स्वाहा

ॐ घण्टाहस्ताय स्वाहा 570

ॐ घटाक्षराय स्वाहा

ॐ घनच्छिन्नाय स्वाहा

ॐ घनगतये स्वाहा

ॐ घनवाहनतर्पिताय स्वाहा

ॐ ङान्ताय स्वाहा

ॐ ङेशाय स्वाहा

ॐ ङकाराङ्गाय स्वाहा

ॐ चन्द्रधराय स्वाहा

ॐ अच्युताय स्वाहा

ॐ चम्पकसन्निभाय स्वाहा 580

ॐ चामीकररुचये स्वाहा

ॐ चण्डभानवे स्वाहा

ॐ चण्डीवल्लभाय स्वाहा

ॐ चञ्चाय स्वाहा

ॐ चकोरकोष्टाय स्वाहा

ॐ चपलाय स्वाहा

ॐ चपलाश्रयाय स्वाहा

ॐ चलत्पताकाय स्वाहा

ॐ चण्डांशवे स्वाहा

ॐ चीवरैकधराय स्वाहा 590

ॐ चराय स्वाहा

ॐ वर्णभृते स्वाहा

ॐ छत्रभृते स्वाहा

ॐ हलहृते स्वाहा

ॐ छञ्छाय स्वाहा

ॐ च्छुरिकाच्छिन्नविग्रहाय स्वाहा

ॐ जाम्बूनदाङ्गदाय स्वाहा

ॐ जिनेन्द्राय स्वाहा

ॐ जिनैकवल्लभाय स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि
ज्योतिरसि धामाऽसि
चित्रं देवानां उदगादनीकं चक्षुर्मित्त्रस्य वरुणस्याग्नेः आप्राद्यावापृथिवी
अन्तरिक्षं सूर्य अत्मा जगतस्तस्थुश्च।
ॐ जम्भारये स्वाहा६००

७. यन्मण्डलं वेदविदो वदन्ति, गायान्ति यत्-चारण-सिद्ध-संघाः। यत्-योगिनो व्योम-रथस्थ-सिद्धाः, पुनातु मां तत्-सवितु-र्वरेण्यम्।

ॐ जङ्गिलाय स्वाहा
ॐ जङ्गिने स्वाहा
ॐ जनोलोकतमोपहाय स्वाहा
ॐ जयकारिणे स्वाहा
ॐ जयहर्त्रे स्वाहा
ॐ जरामृत्यु विनाशकाय
ॐ जगत्त्रात्रे स्वाहा
ॐ जगध्द्येयाय स्वाहा
ॐ जगन्निधये स्वाहा 610
ॐ जगत्साक्षिणे स्वाहा
ॐ जगच्चक्षुषे स्वाहा
ॐ जगन्नाथाय स्वाहा
ॐ जिताय स्वाहा
ॐ जकाराकारमुचे स्वाहा
ॐ झञ्झाच्छन्नाकृतये स्वाहा620
ॐ झिल्लेश्वराय स्वाहा
ॐ झकारेशाय स्वाहा
ॐ झञाङ्गुलिकराय स्वाहा
ॐ अम्बुजाय स्वाहा
ॐ झञाक्षराञ्चिताताय स्वाहा
ॐ झङ्काराय स्वाहा
ॐ टिटिभासन संस्थिताय स्वाहा
ॐ टङ्काराय स्वाहा
ॐ टङ्कधारिणे स्वाहा
ॐ ठःस्वरूपाय स्वाहा
ॐ ठधाधिपाय स्वाहा
ॐ डामरवे स्वाहा
ॐ डुमरवे स्वाहा
ॐ डिड्डाय स्वाहा
ॐ डामरीशाय स्वाहा 630
ॐ डाकिनीसेविताय स्वाहा
ॐ डाढ्याय स्वाहा
ॐ डढगुल्फाङ्गुलिप्रभाय स्वाहा
ॐ वेशप्रियाय स्वाहा
ॐ णवलेशाय स्वाहा
ॐ णकारपदपङ्कजाय स्वाहा
ॐ ताराधिपेश्वराय स्वाहा
ॐ तथ्याय स्वाहा
ॐ तन्त्रीवादनतत्पराय स्वाहा
ॐ त्रिपुरीशाय स्वाहा 640
ॐ त्रिनेत्रेशाय स्वाहा
ॐ त्रयीतनवे स्वाहा
ॐ अधोक्षजाय स्वाहा
ॐ तामसाय स्वाहा
ॐ तामसप्रेष्ठाय स्वाहा
ॐ तमोहर्त्रे स्वाहा
ॐ तमःकर्त्रे स्वाहा
ॐ तन्त्रकार्त्रे स्वाहा

ॐ तमोरूपाय स्वाहा

ॐ तपसःफलदायकाय स्वाहा 650

ॐ तज्जादिकलनाय स्वाहा

ॐ कान्ताय स्वाहा

ॐ तकाराक्षरभूषणाय स्वाहा

ॐ स्थाणवे स्वाहा

ॐ स्थूलस्थिताय स्वाहा

ॐ नित्यस्थविराय स्वाहा

ॐ स्थण्डिलाय स्वाहा

ॐ स्थूलाय स्वाहा

ॐ थकारजानवे स्वाहा

ॐ अध्यात्मने स्वाहा 660

ॐ देवनायकाय स्वाहा

ॐ दुर्जयाय स्वाहा

ॐ दुःखघ्ने स्वाहा

ॐ दात्रे स्वाहा

ॐ दरिद्रच्छेदनाय स्वाहा

ॐ धामिने स्वाहा

ॐ दौर्भाग्यहर्त्रे स्वाहा

ॐ देवेन्द्राय स्वाहा

ॐ द्वादशमुखाय स्वाहा

ॐ अब्जमध्यगाय स्वाहा 670

ॐ द्वादशान्तकवचमते स्वाहा

ॐ दूराय स्वाहा

ॐ दुरतिक्रमाय स्वाहा

ॐ दुर्ज्ञेयाय स्वाहा

ॐ दुष्टवंशघ्नाय स्वाहा

ॐ दयानाथाय स्वाहा

ॐ दयाकुलाय स्वाहा

ॐ दामोदराय स्वाहा

ॐ दीधितिमते स्वाहा

ॐ दकाराक्षरमातृकाय स्वाहा 680

ॐ धर्मबन्धवे स्वाहा

ॐ धर्मनिधये स्वाहा

ॐ धर्मराजाय स्वाहा

ॐ धनप्रदाय स्वाहा

ॐ धनदेष्टाय स्वाहा

ॐ धनाध्यक्षाय स्वाहा

ॐ धरादर्शनाय स्वाहा

ॐ धुरन्धराय स्वाहा

ॐ धूर्जटिने स्वाहा

ॐ क्षणवासिने स्वाहा 690

ॐ धर्मक्षेत्राय स्वाहा

ॐ धराधिपाय स्वाहा

ॐ धराधाराय स्वाहा

ॐ धुरीणाय स्वाहा

ॐ धर्मात्मजाय स्वाहा

ॐ धर्मवत्सलाय स्वाहा

ॐ धराभृद्वल्लभाय स्वाहा

ॐ धर्मिणे स्वाहा

ॐ धकाराक्षरभूषणाय स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि

ज्योतिरसि धामाऽसि

चित्रं देवानां उदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः आप्राद्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य अत्मा जगतस्तस्थुश्च।

ॐ नर्मप्रियाय स्वाहा७००

८. यन्मण्डलं सर्वजनेषु पुजितं, ज्योतिश्च कुर्यात्-इह मर्त्यलोके, यत्-काल-कालाद्यम्-अनादि-रूपं, पुनातु मां तत्सवितु-र्वरेण्यम्।

ॐ नन्दिरुद्राय स्वाहा

ॐ नेत्रे स्वाहा

ॐ नीतिप्रदाय स्वाहा

ॐ नलिनाय स्वाहा

ॐ नलिनीवल्लभाय स्वाहा

ॐ नुन्नाय स्वाहा

ॐ नाट्यकृते स्वाहा

ॐ नाट्यवर्धनाय स्वाहा

ॐ नरनाथाय स्वाहा

ॐ नृपस्तुत्याय स्वाहा 710

ॐ नभोगामिने स्वाहा

ॐ नभःप्रियाय स्वाहा

ॐ नभोनन्ताय स्वाहा

ॐ नमितारातये स्वाहा

ॐ नरनारायणाय स्वाहा

ॐ नारायणाय स्वाहा

ॐ नीलरुचे स्वाहा

ॐ नम्राङ्गाय स्वाहा

ॐ नीललोहिताय स्वाहा

ॐ नादरूपिणे स्वाहा 720

ॐ नादमयाय स्वाहा

ॐ नादबिन्दुस्वरूपकाय स्वाहा

ॐ नाथाय स्वाहा

ॐ नागपतये स्वाहा

ॐ नागाय स्वाहा

ॐ नागराजाश्रिताय स्वाहा
ॐ नाकस्थिताय स्वाहा
ॐ अनेकवपुषे स्वाहा
ॐ नकाराक्षरमातृकाय स्वाहा
ॐ पद्माशयाय स्वाहा 730
ॐ परस्मैज्योतिषे स्वाहा
ॐ पीवरास्याय स्वाहा
ॐ पटेश्वराय स्वाहा
ॐ प्रीतिप्रियाय स्वाहा
ॐ प्रेमकराय स्वाहा
ॐ प्रणतार्तिभयापहाय स्वाहा
ॐ परित्रात्रे स्वाहा
ॐ परंध्वंसिने स्वाहा
ॐ परारये स्वाहा
ॐ पुरसंस्थिताय स्वाहा 740
ॐ पूर्णानन्दमयाय स्वाहा
ॐ पूर्णतेजसे स्वाहा
ॐ पूर्णेश्वरेश्वराय स्वाहा
ॐ पाटलवर्णाय स्वाहा
ॐ पटिम्ने स्वाहा
ॐ पाटलेशाय स्वाहा
ॐ परात्मवते स्वाहा
ॐ परमेशवपुषे स्वाहा
ॐ प्रांशवे स्वाहा

ॐ प्रमत्ताय स्वाहा 750
ॐ प्रणतेष्टदाय स्वाहा
ॐ अपारपारदाय स्वाहा
ॐ पीनाय स्वाहा
ॐ पीताम्बरप्रियाय स्वाहा
ॐ पावकाय स्वाहा
ॐ पचनाय स्वाहा
ॐ पिचुलाय स्वाहा
ॐ प्लुष्टाय स्वाहा
ॐ प्रेमदाय स्वाहा
ॐ जनसौख्यदाय स्वाहा 760
ॐ प्रमोदिने स्वाहा
ॐ प्रतिपक्षघ्नाय स्वाहा
ॐ पकाराक्षरमातृकाय स्वाहा
ॐ फलाय स्वाहा
ॐ भोगापवर्गसुफलिनीशाय स्वाहा
ॐ फलात्मकाय स्वाहा
ॐ फुल्लदम्भोजमध्यस्थाय स्वाहा
ॐ फुल्लदम्भोजधाराय स्वाहा
ॐ स्फुटद्युतये स्वाहा
ॐ स्फुटाकाराय स्वाहा 770
ॐ स्फुटिकाचलचारकाय स्वाहा
ॐ स्फूर्जत्किरणमालिने स्वाहा

ॐ फकाराक्षरपार्श्वकाय स्वाहा
ॐ बालाय स्वाहा
ॐ बालप्रियाय स्वाहा
ॐ बान्ताय स्वाहा
ॐ बालध्वान्तहराय स्वाहा
ॐ बलिने स्वाहा
ॐ बलादये स्वाहा
ॐ बर्बरध्वंसिने स्वाहा 780
ॐ बर्बरामृतपानकाय स्वाहा
ॐ बुधाय स्वाहा
ॐ बृहस्पतये स्वाहा
ॐ वृक्षाय स्वाहा
ॐ बृहदश्वाय स्वाहा
ॐ बृहद्गतये स्वाहा

ॐ बृहत्पृष्ठाय स्वाहा
ॐ भीमरूपाय स्वाहा
ॐ भयापहाय स्वाहा
ॐ भिदुरप्रियाय स्वाहा 790
ॐ भर्गाय स्वाहा
ॐ भृगवे स्वाहा
ॐ भृगुस्थायिने स्वाहा
ॐ भार्गवाय स्वाहा
ॐ कवये स्वाहा
ॐ शेखराय स्वाहा
ॐ भाग्यदाय स्वाहा
ॐ भानवे स्वाहा
ॐ दीप्ताङ्गाय स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि
ज्योतिरसि धामाऽसि

चित्रं देवानां उदगादनीकं चक्षुर्मित्त्रस्य वरुणस्याग्नेः आप्राद्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य अत्मा जगतस्तस्थुश्च।

ॐ भनाभये स्वाहा८००

९. यन्मण्डलं वेदविदो वदन्ति गायन्ति यत् सिद्धगणा गुहासु, सन्ध्या विद्यौ ब्रह्मविदः स्मरन्ति, पुनातु मां तत्-सवितु-र्वरेण्यम्।

ॐ स्वाहाभमातृकाय स्वाहा
ॐ महाकालाय स्वाहा
ॐ महाध्यक्षाय स्वाहा

ॐ महानादाय स्वाहा
ॐ महामतये स्वाहा
ॐ महोज्ज्वलाय स्वाहा

ॐ मनोहारिणे स्वाहा
ॐ मनोगामिने स्वाहा
ॐ मनोभवाय स्वाहा
ॐ मानदाय स्वाहा 810
ॐ मल्लघ्ने स्वाहा
ॐ मल्लाय स्वाहा
ॐ मेरुमन्दिरमन्दाराय स्वाहा
ॐ मन्दारमालाभरणाय स्वाहा
ॐ माननीयाय स्वाहा
ॐ मनोभयाय स्वाहा
ॐ मोदिताय स्वाहा
ॐ सवित्रे स्वाहा
ॐ मार्तण्डाय स्वाहा
ॐ मुण्डमण्डिताय स्वाहा 620
ॐ महावराहाय स्वाहा
ॐ मीनेशाय स्वाहा
ॐ मेषगाय स्वाहा
ॐ मिथुनेष्टदाय स्वाहा
ॐ मदालसाय स्वाहा
ॐ अमरस्तुत्याय स्वाहा
ॐ सुरारये स्वाहा
ॐ वरदाय स्वाहा
ॐ माधवाय स्वाहा
ॐ मेदिनीशाय स्वाहा 830
ॐ मधुकैटभनाशनाय स्वाहा
ॐ माल्यवते स्वाहा
ॐ मेधनाय स्वाहा
ॐ माराय स्वाहा
ॐ मेधाविने स्वाहा
ॐ मुसलायुधाय स्वाहा
ॐ मुकुन्दाय स्वाहा
ॐ सुरारिघ्ने स्वाहा
ॐ सराशिफलदाय स्वाहा
ॐ मदाय स्वाहा 840
ॐ मदनाय स्वाहा
ॐ मोदकाहाराय स्वाहा
ॐ मकाराक्षरमातृकाय स्वाहा
ॐ यज्वने स्वाहा
ॐ यज्ञेश्वराय स्वाहा
ॐ यन्ताय स्वाहा
ॐ योगिनांहृदयस्थिताय स्वाहा
ॐ यात्रिकाय स्वाहा
ॐ यज्ञफलदाय स्वाहा
ॐ यज्ञिने स्वाहा 850
ॐ यमलनायकाय स्वाहा
ॐ योगनिद्राप्रियाय स्वाहा
ॐ योगकारणाय स्वाहा
ॐ योगवत्सलाय स्वाहा

ॐ यष्टिधारिणे स्वाहा

ॐ यन्त्रेशाय स्वाहा

ॐ व्योममण्डलमध्यगाय स्वाहा

ॐ युयुत्सवे स्वाहा

ॐ जयदाय स्वाहा

ॐ योगाय स्वाहा 860

ॐ योगधर्मानुर्वतकाय स्वाहा

ॐ योगिनीचक्रमध्यगाय स्वाहा

ॐ योगीश्वरपूजिताय स्वाहा

ॐ यान्ताय स्वाहा

ॐ यक्षैकतिलकाय स्वाहा

ॐ यक्षराक्षसभूषणाय स्वाहा

ॐ रामाय स्वाहा

ॐ रमणशीलाय स्वाहा

ॐ रत्नभानवे स्वाहा

ॐ रुरुप्रियाय स्वाहा 870

ॐ रत्नमौलये स्वाहा

ॐ रत्नतुङ्गाय स्वाहा

ॐ रत्नपीठान्तरस्थाय स्वाहा

ॐ रत्नांशुमाल्याय स्वाहा

ॐ रत्नाढ्याय स्वाहा

ॐ रत्नकङ्कणनूपुराढ्याय स्वाहा

ॐ रत्नङ्गदलसद्बाहवे स्वाहा

ॐ रत्नपादुकमण्डिताय स्वाहा

ॐ राहिण्याश्रयाय स्वाहा

ॐ रक्षाकराय स्वाहा 880

ॐ रात्रिञ्चरान्तकाय स्वाहा

ॐ रकाराक्षररूपाय स्वाहा

ॐ लज्जाबीजाश्रिताय स्वाहा

ॐ लवाय स्वाहा

ॐ लक्ष्मीभानवे स्वाहा

ॐ लतावासिने स्वाहा

ॐ लसत्कान्तये स्वाहा

ॐ लोकभृते स्वाहा

ॐ लोकातङ्कहराय स्वाहा 890

ॐ लासावल्लभाय स्वाहा

ॐ लोमशाय स्वाहा

ॐ अलिगाय स्वाहा

ॐ लिङ्गेश्वराय स्वाहा

ॐ लिङ्गनादाय स्वाहा

ॐ लीलाकारिणे स्वाहा

ॐ ललम्भसाय स्वाहा

ॐ लक्ष्मीवते स्वाहा

ॐ लोकविध्वंसिने स्वाहा

ॐ लकाराक्षरभूषणाय स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि
ज्योतिरसि धामाऽसि
चित्रं देवानां उदगादनीकं चक्षुर्मित्त्रस्य वरुणस्याग्नेः आप्राद्यावापृथिवी
अन्तरिक्षं सूर्य अत्मा जगतस्तस्थुश्च।
ॐ वामनाय स्वाहा९००

ॐ वीरवीरेन्द्राय स्वाहा
ॐ वाचालाय स्वाहा
ॐ वाक्पतिप्रियाय स्वाहा
ॐ वाचामगोचराय स्वाहा
ॐ वार्ताय स्वाहा
ॐ वीणायै स्वाहा
ॐ वेणुधराय स्वाहा
ॐ वराय स्वाहा
ॐ वाग्भवाय स्वाहा
ॐ बालिशध्वंसिने स्वाहा 910
ॐ विद्यानकाय स्वाहा
ॐ कनकाय स्वाहा
ॐ वकारमातृकामौलये स्वाहा
ॐ शाम्भवेष्टप्रदाय स्वाहा
ॐ शुकाय स्वाहा
ॐ शशिने स्वाहा
ॐ शोभकराय स्वाहा
ॐ शान्ताय स्वाहा
ॐ शान्तिकृते स्वाहा
ॐ शमनप्रियाय स्वाहा 920
ॐ शुभङ्कराय स्वाहा
ॐ शुक्लवस्त्राय स्वाहा
ॐ श्रीपतये स्वाहा
ॐ श्रीयुताय स्वाहा
ॐ श्रुताय स्वाहा
ॐ श्रुतगम्याय स्वाहा
ॐ शरद्बीजमण्डिताय स्वाहा
ॐ शिष्टसेविताय स्वाहा
ॐ शिष्टाचाराय स्वाहा
ॐ शुभाचाराय स्वाहा 930
ॐ शेषाय स्वाहा
ॐ शेवालताडनाय स्वाहा
ॐ शिपिविष्टाय स्वाहा
ॐ शिवाय स्वाहा
ॐ शुक्लाय स्वाहा
ॐ सेव्याय स्वाहा
ॐ शाक्षरमातृकाय स्वाहा
ॐ षडाननाय स्वाहा

ॐ षड्कारकाय स्वाहा
ॐ षोडशसुरभूषिताय स्वाहा 940
ॐ षड्पदस्वनतोषिणे स्वाहा
ॐ षडाम्नायप्रवर्तकाय स्वाहा
ॐ षड्रसास्वाद सन्तुष्टाय स्वाहा
ॐ षकाराक्षरमातृकाय स्वाहा
ॐ सूर्य बिन्दवे स्वाहा
ॐ सुखाकाराय स्वाहा
ॐ समस्तसाधकेशाय स्वाहा
ॐ समस्त कुलशेखराय स्वाहा
ॐ सूरसूर्याय स्वाहा
ॐ स्वधासूर्याय स्वाहा 950
ॐ स्वसूर्याय स्वाहा
ॐ साक्षरेशाय स्वाहा
ॐ हरित्सूर्याय स्वाहा
ॐ हरिद्धानवे स्वाहा
ॐ हव्यैकभुजे स्वाहा
ॐ हव्यवाहनाय स्वाहा
ॐ हालासूर्याय स्वाहा
ॐ सोम सूर्याय स्वाहा
ॐ हुत सूर्याय स्वाहा
ॐ हरिसूर्याय स्वाहा 960
ॐ ह्रां सूर्यबीजाय स्वाहा
ॐ ह्रीं सूर्याय स्वाहा

ॐ हकाराक्षरमातृकाय स्वाहा
ॐ लंबीजमण्डिताय स्वाहा
ॐ सूर्याय स्वाहा
ॐ क्षोणी सूर्याय स्वाहा
ॐ क्षमापतये स्वाहा
ॐ क्षुत्सूर्याय स्वाहा
ॐ क्षान्तसूर्याय स्वाहा
ॐ लक्ष्यसूर्याय स्वाहा 970
ॐ सदशिवाय स्वाहा
ॐ अकारसूर्याय स्वाहा
ॐ क्षःसूर्याय स्वाहा
ॐ सर्वसूर्याय स्वाहा
ॐ कृपानिधये स्वाहा
ॐ भूःसूर्याय स्वाहा
ॐ भुवःसूर्याय स्वाहा
ॐ स्वःसूर्याय स्वाहा
ॐ सूर्यानायकाय स्वाहा
ॐ ग्रहसूर्याय स्वाहा 980
ॐ ऋक्षसूर्याय स्वाहा
ॐ लग्नसूर्याय स्वाहा
ॐ महेश्वराय स्वाहा
ॐ राशिसूर्याय स्वाहा
ॐ योगसूर्याय स्वाहा
ॐ मन्त्रसूर्याय स्वाहा

ॐ अनुत्तमाय स्वाहा

ॐ तत्वसूर्याय स्वाहा

ॐ परासूर्याय स्वाहा

ॐ विष्णुसूर्याय स्वाहा ९९०

ॐ प्रतापवते स्वाहा

ॐ रुद्रसूर्याय स्वाहा

ॐ ब्रह्मसूर्याय स्वाहा

ॐ वीरसूर्याय स्वाहा

ॐ वरोत्तमाय स्वाहा

ॐ धर्मसूर्याय स्वाहा

ॐ कर्मसूर्याय स्वाहा

ॐ विश्वसूर्याय स्वाहा

ॐ वीनायकाय त्रिलोचनाय स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि
ज्योतिरसि धामाऽसि

चित्रं देवानां उदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्यागने: आप्राद्यावापृथिवी
अन्तरिक्षं सूर्य अत्मा जगतस्तस्थुश्च।

ॐ भुक्तिमुक्तिलक्ष्मीसुखदाय स्वाहा[१०००]

अग्नि में फूल डालते हुये फल श्रति पढ़ें–

यः पठेत् प्रातर्-उत्थाय भक्त्या नामसहस्त्रम्-इदं नरः। सौख्यम्-आयुः-तथा-आरोग्यं लभते-मोक्षम्-एवच। आदित्यस्य नमस्कारं ये कुर्वन्ति दिने दिने जन्मान्तर-सहस्त्रेषु दारिद्र्यं नोपजायते॥ नमो धर्म निधानाय, नमः सुकृत-साक्षिणे नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमोनमः, उदयन् तु महाभानुः-तेजसा चाभयंकरः, सहस्त्र-रश्मि दीप्तश्वः-त्वादित्यः प्रीयतां मम।

पुनः- तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि धामाऽसि

चित्रं देवानां उदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्रेः आपद्यावापृथिवी
अन्तरिक्षं सूर्यात्मा जगतस्तस्थुश्च।

स्वाहा

तर्पण :–

अनेन श्रीसूर्यसहस्त्र-नाम स्वाहाकार-होमेन भगवान् ह्राँ ह्रीं सः सूर्यः, सप्ताश्वः अनश्वः एकाश्वः नीलाश्वः प्रत्यक्षदेवः परमार्थसारः तेजोरूपः प्रभासहितः आदित्यः प्रीयतां प्रीतोस्तु।

आदित्यहृदयस्तोत्रम्

विनियोग

ॐ अस्य आदित्यहृदयस्तोत्रस्यागस्त्यऋषिरनुष्टुप् छन्दः, आदित्य-हृदयभूतो भगवान् ब्रह्मा देवता निरसतोशेषविघ्नतया ब्रह्मविद्यासिद्धौ सर्वत्र जयसिद्धौ च विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास

ॐ अगस्त्यऋषये नमः शिरसि॥ अनुष्टुप्छन्दसे नमः, मुखे। आदित्य-हृदयभूत-ब्रह्मदेवतायै नमः, हृदि। ॐ बीजाय नमः, गुह्ये। रश्मिमते शक्तये नमः, पादयोः। ॐ तत्सवितुरित्यादिगायत्रीकीलकाय नमः, नाभौ।

करन्यास

ॐ रश्मिमते अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ समुद्यते तर्जनीभ्यां नमः। ॐ देवा सुरनमस्कृताय मध्यमाभ्यां नमः। ॐ विवस्वते अनामिकाभ्यां नमः। ॐ भास्कराय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ भुवनेश्वराय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि अंगन्यास

ॐ रश्मिमते हृदयाय नमः। ॐ समुद्यते शिरसे स्वाहा। ॐ देवासुरनमस्कृताय शिखायै वषट्। ॐ विवस्वते कवचाय हुम्। ॐ भास्कराय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ भुवनेश्वराय अस्त्राय फट्।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न प्रचोदयात्॥

ततो युद्धपरिश्रान्तं समरे चिन्तया स्थितम्।
रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम्॥ 1॥

दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रणम्।
उपगम्याब्रवीद् राममगस्त्यो भगवांस्तदा॥ 2॥

राम राम महाबाहो शृणु गुह्यं सनातनम्।
येन सर्वानरीन् वत्स समरे विजयिष्यसे॥ 3॥

आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम्।
जयावहं जपं नित्यमक्षयं परमं शिवम्॥4॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम्।
चिन्ताशोकप्रशमनमायुर्वर्धनमुत्तमम्॥5॥

रश्मिमन्तं समुद्यन्तं देवासुरनमस्कृतम्।
पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम्॥6॥

सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावनः।
एष देवासुरगणाँल्लोकान् पाति गभस्तिभिः॥7॥

एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवः स्कन्दः प्रजापतिः।
महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यपां पतिः॥8॥

पितरो वसवः साध्या अश्विनौ मरुतो मनुः।
वायुर्वह्निः प्रजाः प्राण ऋतुकर्ता प्रभाकरः॥9॥

आदित्यः सविता सूर्यः खगः पूषा गभस्तिमान्।
सुवर्णसदृशो भानुर्हिरण्येरता दिवाकरः॥10॥

हरिदश्वः सहस्त्रार्चि सप्तसप्तिर्मरीचिमान्।
तिमिरोन्मथनः शम्भुस्त्वष्टा मार्तण्डकोंऽशुमान्॥11॥

हिरण्यगर्भः शिशिरस्तपनोऽहस्करो रविः।
अग्निगर्भोऽदितेः पुत्रः शङ्खः शिशिरनाशनः॥12॥

व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुःसामपारगः।
घनवृष्टिरपां मित्रो विन्ध्यवीथीप्लवंगमः॥13॥

आतपी मण्डली मृत्युः पिङ्गलः सर्वतापनः।
कविर्विश्वो महातेजा रक्तः सर्वभवोद्भवः॥14॥

नक्षत्रग्रहताराणामधिपो विश्वभावनः।
तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन् नमोऽस्तु ते॥ 15॥

नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः।
ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः॥ 16॥

जयाय जयभद्राय हर्यश्वाय नमो नमः।
नमो नमः सहस्रांशो आदित्याय नमो नमः॥17॥

नमः अग्राय वीराय सारङ्गाय नमो नमः।
नमः पद्मप्रबोधाय प्रचण्डाय नमोऽस्तु ते॥18॥

ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सूरायादित्यवर्चसे।
भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः॥19॥

तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने।
कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः॥20॥

तप्तचामीकराभाय हरये विश्वकर्मणे।
नमस्तमोऽभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे॥21॥

नाशयत्येष वै भूतं तमेष सृजपि प्रभुः।
पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः॥22॥

एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः।
एष चैवाग्निहोत्रं च फलं चैवाग्निहोत्रिणाम्॥23॥

देवाश्च क्रतवश्चैव क्रतूनां फलमेव च।
यानि कृत्यानि लोकेषु सर्वेषु परमप्रभुः॥24॥

एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कान्तारेषु भयेषु च।
कीर्तयन् पुरुषः कश्चिन्नावसीदति राघव॥25॥

पूजयस्वैनमेकाग्रो देवदेवं जगत्पतिम्।
एतत्त्रिगुणितं जप्त्वा युद्धेषु विजयिष्यति॥26॥

अस्मिन् क्षणे महाबाहो रावणं त्वं जहिष्यसि।
एवमुक्त्वा ततोऽगस्त्यो जगाम स यथागतम्॥27॥

एतचछ्रुत्वा महातेजा नष्टशोकोऽभवत् तदा।
धारयामास सुप्रीतो राघवः प्रयतात्मवान्॥28॥

आदित्यं प्रेक्ष्य जप्त्वेदं परं हर्षमवाप्तवान्।
त्रिराचम्य शुचिर्भूत्वा धनुरादाय वीर्यवान्॥29॥

रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा जयार्थं समुपागमत्।
सर्वयत्नेन महता वृतस्तस्य वधेऽभवत्॥30॥

अथ रविरवदन्निरीक्ष्य रामं मुदितमनाः परमं प्रहृष्यमाणः।
निशिचरपतिसंक्षयं विदित्वा सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति॥31॥

मधुराष्टकम्

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मुधराधिपतेरखिलं मधुरम्॥१॥

वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरम्।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥२॥

वेणुर्मधरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥३॥

गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम्।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥४॥

करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं स्मरणं मधुरम्।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥५॥

गुञ्जा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा।
सलिलं मधुरं कललं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥६॥

गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं भुक्तं मधुरम्।
दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥७॥

गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥८॥

(इति श्रीमद्वल्लभचार्यकृत मधुराष्टकं सम्पूर्णम्।)

फूल डालते हुए पढ़ें–

1. शुक्लान्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
   प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्व-विघ्नोपशान्तये॥

2. व्यासं वसिष्ठ-नप्तारं शक्तेः पौत्र-मकल्मषम्।
पराशरात्मजं वन्दे शुकतातं तपोनिधिम्।।

3. व्यासाय विष्णुरूपाय व्यासरूपाय विष्णवे।
नमो वै ब्रह्मनिधये वासिष्ठाय नमो नमः।।

4. अविकाराय शुद्धाय नित्याय परमात्मने।
सदैकरूप-रूपाय विष्णवे सर्वजिष्णवे।।

5. यस्य स्मरण-मात्रेण जन्मसंसार-बन्धनात्।
विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे।।
ओं नमो विष्णवे प्रभविष्णवे।।

श्री वैशंपायन उवाच–

1. श्रुत्वा धर्मानशेषेण पावनानि च सर्वशः।
युधिष्ठिरः शान्तनवं पुनरेवाभ्यभाषत।।

युधिष्ठिर उवाच–

2. किमेकं दैवतं लोके किं वाप्येकं परायणम्।
स्तुवन्तः कं कमर्चन्तः प्राप्नुयु-र्मानवाः शुभम्।।

3. को धर्मः सर्वधर्माणां भवतः परमो मतः।
किं जपन् मुच्यते जन्तु-र्जन्म-संसार-बन्धनात्।।

श्रीभीष्म उवाच–

4. जगत्प्रभुं देवदेव-मनन्तं पुरुषोत्तमम्।
स्तुवन् नामसहस्रेण पुरुषः सततोत्थितः।।

5. तमेव चार्चयन्नित्यं भक्त्या पुरुषमव्ययम्।
ध्यायन् स्तुवन् नमस्यंश्च यजमानस्तमेव च।।

6. अनादि-निधनं विष्णुं सर्व-लोक-महेश्वरम्।
लोकाध्यक्षं स्तुवन्नित्यं सर्वदुःखातिगो भवेत्।।

7. ब्रह्मण्यं सर्वधर्मज्ञं लोकानां कीर्ति-वर्धनम्।
लोकनाथं महद्भूतं सर्वभूत-भवोद्भवम्।।

8. एष मे सर्वधर्माणां धर्मोऽधिकतमो मतः।
यद्भक्त्या पुण्डरीकाक्षं स्तवैरर्चेन्नरः सदा॥

9 परमं यो महत्तेजः परमं यो महत्तपः।
परमं यो महद्ब्रह्म परमं यः परायणम्॥

10. पवित्राणां पवित्रं यो मङ्गलानां च मङ्गलम्।
दैवतं देवतानां च भूतानां योऽव्ययः पिता॥

11. यतः सर्वाणि भूतानि भवन्त्यादियुगागमे।
यस्मिंश्च प्रलयं यान्ति पुनरेव युगक्षये॥

12. तस्य लोकप्रधानस्य जगन्नाथस्य भूपते।
विष्णो-र्नाम-सहस्त्रं मे शृणु पाप-भयापहम्॥

13. यानि नामानि गौणानि विख्यातानि महात्मनः।
ऋषिभिः परिगीतानि तानि वक्ष्यामि भूतये॥

॥ पूर्व-न्यासः ॥

विष्णुसहस्त्रनाम स्वाहाकार पूजन विधिः

विनियोग

अस्य श्रीर्विष्णो-र्दिव्य-सहस्त्रनाम-स्तोत्र-महामन्त्रस्य। श्रीवेदव्यासो भगवान् ऋषिः। अनुष्टप् छन्दः। श्रीविष्णुः परमात्मा श्रीमन्नारायणो देवता अमृतांशूद्भवो भानुरिति बीजम्। देवकीनन्दनः स्त्रष्टेति शक्तिः। उद्भवः क्षोभणो देव इति परमो मन्त्रः। शङ्खभृन्नन्दकी चक्रीति कीलकम्। श्रीविश्वरूप इति ध्यानम्। श्रीमहाविष्णुप्रीत्यर्थे सहस्त्रनाम जपे/होमे विनियोगः।

करन्यास

ॐ नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः,

"ना" तर्जनीभ्यां नमः

"रा" मध्यमाभ्यां नमः

"य" अनामिकाभ्यां नमः

"णा" कनिष्ठिकाभ्यां नमः

"य" करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः स्वाहा

अंगन्यास

ॐ नमः हृदयाय नमः,

"ना" शिरसे स्वाहा

"रा" शिखायै वषट्

"य" कवचाय हुँ

"णा" नेत्राभ्यां वौषट्

"य" अस्त्राय फट्॥

प्राणायाम करके दोनों हाथों में फूल पकड़कर ध्यान पढ़िये–

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगन-सदृशं मेघवर्णं शुभांगम्। लक्ष्मी-कान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यान-गम्यं वन्दे विष्णुं भवभय-हरं सर्वलोकैक-नाथम्।

अग्नि में आहुति डालते हुये पढ़ें :-

(१) ॐ वासुदेवाय विद्महे स्वाहा, लक्ष्मी नारायणाय धीमहि स्वाहा, तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्-स्वाहा।

(२) ॐ वासुदेवाय विद्महे, लक्ष्मी नारायणाय धीमहि स्वाहा, तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्, स्वाहा

(३) ॐ वासुदेवाय विद्महे लक्ष्मीनारायणाय धीमहि तन्नोविष्णुः-प्रचोदयात्-स्वाहा।

फूल डालें–

ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती
नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः
केयूरवान् कनककुण्डलवान्किरीटी
हारी हिरण्यमयव-पुर्धृतिशङ्खचक्र।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देव देव।

आहुति डालें–

ॐ विश्वस्मैः स्वाहा
ॐ विष्णवे स्वाहा
ॐ वषट्काराय स्वाहा
ॐ भूतभव्यभवत्प्रभवे स्वाहा
ॐ भूतकृते स्वाहा
ॐ भावाय स्वाहा
ॐ भूतात्मने स्वाहा
ॐ भूतभृते स्वाहा
ॐ भूतभावनाय स्वाहा
ॐ पूतात्मने स्वाहा 10
ॐ परमात्मने स्वाहा
ॐ मुक्तानां परमायै गतये स्वाहा
ॐ अव्ययाय स्वाहा
ॐ पुरुषाय स्वाहा
ॐ साक्षिणे स्वाहा
ॐ क्षेत्रज्ञाय स्वाहा
ॐ अक्षराय स्वाहा
ॐ योगाय स्वाहा
ॐ योगविदां नेत्रे स्वाहा
ॐ प्रधानपुरुषेश्वराय स्वाहा 20
ॐ नारसिंहवपुषे स्वाहा
ॐ श्रीमते स्वाहा
ॐ केशवाय स्वाहा
ॐ पुरुषोत्तमाय स्वाहा
ॐ सर्वस्मै स्वाहा
ॐ शर्वाय स्वाहा

ॐ शिवाय स्वाहा
ॐ स्थाणवे स्वाहा
ॐ भूतादये स्वाहा
ॐ निधयेऽव्ययाय स्वाहा 30
ॐ संभवाय स्वाहा
ॐ भावनाय स्वाहा
ॐ भर्त्रे स्वाहा
ॐ प्रभवाय स्वाहा
ॐ प्रभवे स्वाहा
ॐ ईश्वराय स्वाहा
ॐ स्वयंभुवे स्वाहा
ॐ शंभवे स्वाहा
ॐ आदित्याय स्वाहा
ॐ पुष्कराक्षाय स्वाहा 40
ॐ महास्वनाय स्वाहा
ॐ अनादिनिधनाय स्वाहा
ॐ धात्रे स्वाहा
ॐ विधात्रे स्वाहा
ॐ धातवे उत्तमाय स्वाहा
ॐ अप्रमेयाय स्वाहा
ॐ हृषीकेशाय स्वाहा
ॐ पद्मनाभाय स्वाहा
ॐ अमरप्रभवे स्वाहा
ॐ विश्वकर्मणे स्वाहा 50

ॐ मनवे स्वाहा
ॐ त्वष्ट्रे स्वाहा
ॐ स्थविष्ठाय स्वाहा
ॐ स्थविराय ध्रुवाय स्वाहा
ॐ अग्राह्याय स्वाहा
ॐ शाश्वताय स्वाहा
ॐ कृष्णाय स्वाहा
ॐ लोहिताक्षाय स्वाहा
ॐ प्रतर्दनाय स्वाहा
ॐ प्रभूताय स्वाहा 60
ॐ त्रिककुब्धाम्ने स्वाहा
ॐ पवित्राय स्वाहा
ॐ मङ्गलाय परस्मै स्वाहा
ॐ ईशानाय स्वाहा
ॐ प्राणदाय स्वाहा
ॐ प्राणाय स्वाहा
ॐ ज्येष्ठाय स्वाहा
ॐ श्रेष्ठाय स्वाहा
ॐ प्रजापतये स्वाहा
ॐ हिरण्यगर्भाय स्वाहा 70
ॐ भूगर्भाय स्वाहा
ॐ माधवाय स्वाहा
ॐ मधुसूदनाय स्वाहा
ॐ ईश्वराय स्वाहा

ॐ विक्रमिणे स्वाहा
ॐ घन्विने स्वाहा
ॐ मेधाविने स्वाहा
ॐ विक्रमाय स्वाहा
ॐ क्रमाय स्वाहा
ॐ अनुत्तमाय स्वाहा 80
ॐ दुराधर्षाय स्वाहा
ॐ कृतज्ञाय स्वाहा
ॐ कृतये स्वाहा
ॐ आत्मवते स्वाहा
ॐ सुरेशाय स्वाहा
ॐ शरणाय स्वाहा
ॐ शर्मणे स्वाहा

ॐ विश्वरेतसे स्वाहा
ॐ प्रजाभवाय स्वाहा
ॐ अह्ने स्वाहा 90
ॐ संवत्सराय स्वाहा
ॐ व्यालाय स्वाहा
ॐ प्रत्ययाय स्वाहा
ॐ सर्वदर्शनाय स्वाहा
ॐ अजाय स्वाहा
ॐ सर्वेश्वराय स्वाहा
ॐ सिद्धाय स्वाहा
ॐ सिद्धये स्वाहा
ॐ सर्वादये स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि
ज्योतिरसि धामाऽसि
तत् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः, दिवीव चक्षुर्-आततम्।।
तत्-विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते-विष्णोर्यत् परमं पदम्।।
ॐ अच्युताय स्वाहा 100

शान्ताकारं भुजग-शयनं, पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगन-सुदृशं, मेघ-वर्णं शुभांगम्
लक्ष्मी-कांतं कमल-नयनं, योगिभि-र्ध्यानगम्यं
वन्देविष्णुं भव-भयहरं, सर्व-लोकैक-नाथम् (2)

ॐ वृषाकपये स्वाहा
ॐ अमेयात्मने स्वाहा

ॐ सर्वयोगविनिः सृताय स्वाहा
ॐ वसवे स्वाहा

ॐ वसुमनसे स्वाहा
ॐ सत्याय स्वाहा
ॐ समात्मने स्वाहा
ॐ असंमिताय स्वाहा
ॐ समाय स्वाहा
ॐ अमोघाय स्वाहा 110
ॐ पुण्डरीकाक्षाय स्वाहा
ॐ वृषकर्मणे स्वाहा
ॐ वृषाकृतये स्वाहा
ॐ रुद्राय स्वाहा
ॐ बहुशिरसे स्वाहा
ॐ बभ्रवे स्वाहा
ॐ विश्वयोनये स्वाहा
ॐ शुचिश्रवसे स्वाहा
ॐ अमृताय स्वाहा
ॐ शाश्वतस्स्थाणवे स्वाहा 120
ॐ वरारोहाय स्वाहा
ॐ महातपसे स्वाहा
ॐ सर्वगाय स्वाहा
ॐ सर्वविद्भानवे स्वाहा
ॐ विष्वक्सेनाय स्वाहा
ॐ जनार्दनाय स्वाहा
ॐ वेदाय स्वाहा
ॐ वेदविदे स्वाहा
ॐ अव्यङ्गाय स्वाहा
ॐ वेदाङ्गाय स्वाहा 130
ॐ वेदविदे स्वाहा
ॐ कवये स्वाहा
ॐ लोकाध्यक्षाय स्वाहा
ॐ सुराध्यक्षाय स्वाहा
ॐ धर्माध्यक्षाय स्वाहा
ॐ कृताकृताय स्वाहा
ॐ चतुरात्मने स्वाहा
ॐ चतुर्व्यूहाय स्वाहा
ॐ चतुर्दंष्ट्राय स्वाहा
ॐ चतुर्भुजाय स्वाहा
ॐ भ्राजिष्णवे स्वाहा
ॐ भोजनाय स्वाहा
ॐ भोक्त्रे स्वाहा
ॐ सहिष्णवे स्वाहा
ॐ जगदादिजाय स्वाहा
ॐ अनघाय स्वाहा
ॐ विजयाय स्वाहा
ॐ जेत्रे स्वाहा
ॐ विश्वयोनये स्वाहा
ॐ पुनर्वसवे स्वाहा 150
ॐ उपेन्द्राय स्वाहा
ॐ वामनाय स्वाहा

ॐ प्रांशवे स्वाहा
ॐ अमोघाय स्वाहा
ॐ शुचये स्वाहा
ॐ ऊर्जिताय स्वाहा
ॐ अतीन्द्राय स्वाहा
ॐ संग्रहाय स्वाहा
ॐ सर्गाय स्वाहा
ॐ धृतात्मने स्वाहा 160
ॐ नियमाय स्वाहा
ॐ यमाय स्वाहा
ॐ वेद्याय स्वाहा
ॐ वैद्याय स्वाहा
ॐ सदायोगिने स्वाहा
ॐ वीरघ्ने स्वाहा
ॐ माधवाय स्वाहा
ॐ मधवे स्वाहा
ॐ अतीन्द्रियाय स्वाहा
ॐ महामायाय स्वाहा 170
ॐ महोत्साहाय स्वाहा
ॐ महाबलाय स्वाहा
ॐ महाबुद्धये स्वाहा
ॐ महावीर्याय स्वाहा
ॐ महाशक्तये स्वाहा
ॐ महाद्युतये स्वाहा
ॐ अनिर्देश्यवपुषे स्वाहा
ॐ श्रीमते स्वाहा
ॐ अमेयात्मने स्वाहा
ॐ महाद्रिधृष स्वाहा 180
ॐ महेष्वासाय स्वाहा
ॐ महीभर्त्रे स्वाहा
ॐ श्रीनिवासाय स्वाहा
ॐ सतां गतये स्वाहा
ॐ अनिरुद्धाय स्वाहा
ॐ सुरानन्दाय स्वाहा
ॐ गोविन्दाय स्वाहा
ॐ गोविदां पतये स्वाहा
ॐ मरीचये स्वाहा
ॐ दमनाय स्वाहा 190
ॐ हंसाय स्वाहा
ॐ सुपर्णाय स्वाहा
ॐ भुजगोत्तमाय स्वाहा
ॐ हिरण्यनाभाय स्वाहा
ॐ सुतपसे स्वाहा
ॐ पद्मनाभाय स्वाहा
ॐ प्रजापतये स्वाहा
ॐ अमृत्यवे स्वाहा
ॐ सर्वदृशे स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि
ज्योतिरसि धामाऽसि
तत् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः, दिवीव चक्षुर-आततम्।।
तत्-विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते-विष्णोर्यत् परमं पदम्।।

ॐ सिंहाय स्वाहा 200

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र रुद्रमरूतः स्तुवन्ति दिव्यैःस्तवै
वेदैः सांगपद-क्रमोप-निषदै-र्गायन्ति यं सामगाः
ध्याना-वस्थित-तत्-गतेन मनसा, पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरा-सुर-गणा, देवाय तस्मै (3)

ॐ सधात्रे स्वाहा
ॐ संधिमते स्वाहा
ॐ स्थिराय स्वाहा
ॐ अजाय स्वाहा
ॐ दुर्मर्षणाय स्वाहा
ॐ शास्त्रे स्वाहा
ॐ विश्रुतात्मने स्वाहा
ॐ सुरारिघ्ने स्वाहा
ॐ गुरवे स्वाहा
ॐ गुरुतमाय स्वाहा 210
ॐ धाम्ने स्वाहा
ॐ सत्याय स्वाहा
ॐ सत्यपराक्रमाय स्वाहा
ॐ निमिषाय स्वाहा
ॐ अनिमिषाय स्वाहा
ॐ स्त्रग्विणे स्वाहा
ॐ वाचस्पतये उदारधिये स्वाहा
ॐ अग्रण्ये स्वाहा
ॐ ग्रामाण्ये स्वाहा
ॐ श्रीमते स्वाहा 220
ॐ न्यायाय स्वाहा
ॐ नेत्रे स्वाहा
ॐ समीरणाय स्वाहा
ॐ सहस्त्रमूर्ध्ने स्वाहा
ॐ विश्वात्मने स्वाहा
ॐ सहस्त्राक्षाय स्वाहा
ॐ सहस्त्रपदे स्वाहा
ॐ आवर्तनाय स्वाहा
ॐ निवृत्तात्मने स्वाहा
ॐ संवृताय स्वाहा 230

ॐ संप्रमर्दनाय स्वाहा
ॐ अहःसंवर्तकाय स्वाहा
ॐ वह्नये स्वाहा
ॐ अनिलाय स्वाहा
ॐ धरणीधराय स्वाहा
ॐ सुप्रसादाय स्वाहा
ॐ प्रसन्नात्मने स्वाहा
ॐ विश्वधृषे स्वाहा
ॐ विश्वभुजे स्वाहा
ॐ विभवे स्वाहा 240
ॐ सत्कर्त्रे स्वाहा
ॐ सत्कृताय स्वाहा
ॐ साधवे स्वाहा
ॐ जह्नवे स्वाहा
ॐ नारायणाय स्वाहा
ॐ नराय स्वाहा
ॐ असंख्येयाय स्वाहा
ॐ अप्रमेयात्मने स्वाहा
ॐ विशिष्टाय स्वाहा
ॐ शिष्टकृते स्वाहा
ॐ शुचये स्वाहा
ॐ सिद्धार्थाय स्वाहा
ॐ सिद्धसंकल्पाय स्वाहा
ॐ सिद्धिदाय स्वाहा

ॐ सिद्धिसाधनाय स्वाहा
ॐ वृषाहिणे स्वाहा
ॐ वृषभाय स्वाहा
ॐ विष्णवे स्वाहा
ॐ वृषपर्वणे स्वाहा
ॐ वृषोदराय स्वाहा 260
ॐ वर्धनाय स्वाहा
ॐ वर्धमानाय स्वाहा
ॐ विविक्ताय स्वाहा
ॐ श्रुतिसागराय स्वाहा
ॐ सुभुजाय स्वाहा
ॐ दुर्धराय स्वाहा
ॐ वाग्मिने स्वाहा
ॐ महेन्द्राय स्वाहा
ॐ वसुदाय स्वाहा
ॐ वसवे स्वाहा 270
ॐ नैकरूपाय स्वाहा
ॐ बृहद्रूपाय स्वाहा
ॐ शिपिविष्टाय स्वाहा
ॐ प्रकाशनाय स्वाहा
ॐ ओजस्तेजोद्युतिधराय स्वाहा
ॐ प्रकाशात्मने स्वाहा
ॐ प्रतापनाय स्वाहा
ॐ ऋद्धाय स्वाहा

ॐ स्पष्टाक्षराय स्वाहा
ॐ मन्त्राय स्वाहा 280
ॐ चन्द्रांशवे स्वाहा
ॐ भास्करद्युतये स्वाहा
ॐ अमृतांशूद्भवाय स्वाहा
ॐ भानवे स्वाहा
ॐ शशबिन्दवे स्वाहा
ॐ सुरेश्वराय स्वाहा
ॐ औषधाय स्वाहा
ॐ जगतः सेतवे स्वाहा
ॐ सत्यधर्मपराक्रमाय स्वाहा
ॐ भूतभव्यभवन्नाथाय स्वाहा
ॐ पवनाय स्वाहा
ॐ पावनाय स्वाहा
ॐ अनलाय स्वाहा
ॐ कामघ्ने स्वाहा
ॐ कामकृते स्वाहा
ॐ कान्ताय स्वाहा
ॐ कामाय स्वाहा
ॐ कामप्रदाय स्वाहा
ॐ प्रभवे स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि
ज्योतिरसि धामाऽसि
तत् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः, दिवीव चक्षुर-आततम्।।
तत्-विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते-विष्णोर्यत् परमं पदम्।।

ॐ युगादिकृते 300

ध्येयः सदा परिभवघ्नम्-अभीष्टदोहं,
तीर्थास्पदं शिव-वरिंचि-नुतं शरण्यम्
भृत्यार्तिहं प्रणतपाल भवाब्धियपोतं
वन्दे महापुरुष ते चरणार-बिन्दम् (4)

ॐ युगावर्ताय स्वाहा
ॐ नैकमायाय स्वाहा
ॐ महाशनाय स्वाहा
ॐ अदृश्याय स्वाहा
ॐ व्यक्तरूपाय स्वाहा
ॐ सहस्त्रजिते स्वाहा
ॐ अनन्तजिते स्वाहा
ॐ इष्टाय स्वाहा

ॐ अविशिष्टाय स्वाहा
ॐ शिष्टेष्टाय स्वाहा
ॐ शिखण्डिने स्वाहा
ॐ नहुषाय स्वाहा
ॐ वृषाय स्वाहा
ॐ क्रोधघ्ने स्वाहा
ॐ क्रोधकृत्कर्त्रे स्वाहा
ॐ विश्वबाहवे स्वाहा
ॐ महीधराय स्वाहा
ॐ अच्युताय स्वाहा
ॐ प्रथिताय स्वाहा
ॐ प्राणाय स्वाहा 320
ॐ प्राणदाय स्वाहा
ॐ वासवानुजाय स्वाहा
ॐ अपां निधये स्वाहा
ॐ अधिष्ठानाय स्वाहा
ॐ अप्रमत्ताय स्वाहा
ॐ प्रतिष्ठिताय स्वाहा
ॐ स्कन्दाय स्वाहा
ॐ स्कन्दधराय स्वाहा
ॐ धुर्याय स्वाहा
ॐ वरदाय स्वाहा 330
ॐ वायुवाहनाय स्वाहा
ॐ वासुदेवाय स्वाहा

ॐ बृहद्भानवे स्वाहा
ॐ आदिदेवाय स्वाहा
ॐ पुरन्दराय स्वाहा
ॐ अशोकाय स्वाहा
ॐ तारणाय स्वाहा
ॐ ताराय स्वाहा
ॐ शूराय स्वाहा
ॐ शौरये स्वाहा 340
ॐ जनेश्वराय स्वाहा
ॐ अनुकूलाय स्वाहा
ॐ शतावर्ताय स्वाहा
ॐ पद्मिने स्वाहा
ॐ पद्मनिभेक्षणाय स्वाहा
ॐ पद्मनाभाय स्वाहा
ॐ अरविन्दाक्षाय स्वाहा
ॐ पद्मगर्भाय स्वाहा
ॐ शरीरभृते स्वाहा
ॐ महर्द्धये स्वाहा 350
ॐ ऋद्धाय स्वाहा
ॐ वृद्धात्मने स्वाहा
ॐ महाक्षाय स्वाहा
ॐ गरुडध्वजाय स्वाहा
ॐ अतुलाय स्वाहा
ॐ शरभाय स्वाहा

ॐ भीमाय स्वाहा
ॐ समयज्ञाय स्वाहा
ॐ हविर्हरये स्वाहा
ॐ सर्वलक्षणलक्षण्याय स्वाहा
ॐ लक्ष्मीवते
ॐ समितिंजयाय स्वाहा
ॐ विक्षराय स्वाहा
ॐ रोहिताय स्वाहा
ॐ मार्गाय स्वाहा
ॐ हेतवे स्वाहा
ॐ दामोदराय स्वाहा
ॐ सहाय स्वाहा
ॐ महीधराय स्वाहा
ॐ महाभागाय स्वाहा 370
ॐ वेगवते स्वाहा
ॐ अमिताशनाय स्वाहा
ॐ उद्भवाय स्वाहा
ॐ क्षोभणाय स्वाहा
ॐ देवाय स्वाहा
ॐ श्रीगर्भाय स्वाहा
ॐ परमेश्वराय स्वाहा
ॐ करणाय स्वाहा

ॐ कारणाय स्वाहा
ॐ कर्त्रे स्वाहा 380
ॐ विकर्त्रे स्वाहा
ॐ गहनाय स्वाहा
ॐ गुहाय स्वाहा
ॐ व्यवसायाय स्वाहा
ॐ व्यवस्थानाय स्वाहा
ॐ संस्थानाय स्वाहा
ॐ स्थानदाय स्वाहा
ॐ ध्रुवाय स्वाहा
ॐ परर्द्धये स्वाहा
ॐ परमस्पष्टाय स्वाहा 390
ॐ तुष्टाय स्वाहा
ॐ पुष्टाय स्वाहा
ॐ शुभेक्षणाय स्वाहा
ॐ रामाय स्वाहा
ॐ विरामाय स्वाहा
ॐ विरजसे स्वाहा
ॐ मार्गाय स्वाहा
ॐ नेयाय स्वाहा
ॐ नयाय स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि
ज्योतिरसि धामाऽसि

तत् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः, दिवीव चक्षुर-आततम्।।
तत्-विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते-विष्णोर्यत् परमं पदम्।।

ॐ अनयाय स्वाहा ४००

त्यक्त्वा सुदुस्त्यज सुरेप्तिसत राज्यलक्ष्मीं
धर्मिष्ट आर्य वचसा यत् अगात् अरण्यम्
मायामृगं दयित येप्सितम् अनुधावत्
वन्दे महापुरुष ते चरणार-बिन्दम् (५)

ॐ वीराय स्वाहा
ॐ शक्तिमतां श्रेष्ठाय स्वाहा
ॐ धर्माय स्वाहा
ॐ धर्मविदुत्तमाय स्वाहा
ॐ वैकुण्ठाय स्वाहा
ॐ पुरुषाय स्वाहा
ॐ प्राणाय स्वाहा
ॐ प्राणदाय स्वाहा
ॐ प्रणवाय स्वाहा
ॐ पृथवे स्वाहा 410
ॐ हिरण्यगर्भाय स्वाहा
ॐ शत्रुघ्नाय स्वाहा
ॐ व्याप्ताय स्वाहा
ॐ वायवे स्वाहा
ॐ अधोक्षजाय स्वाहा
ॐ ऋतवे स्वाहा
ॐ सुदर्शनाय स्वाहा
ॐ कालाय स्वाहा
ॐ परमेष्टिने स्वाहा
ॐ परिग्रहाय स्वाहा 420
ॐ उग्राय स्वाहा
ॐ संवत्सराय स्वाहा
ॐ दक्षाय स्वाहा
ॐ विश्रामाय स्वाहा
ॐ विश्वदक्षिणाय स्वाहा
ॐ विस्ताराय स्वाहा
ॐ स्थावरस्थाणवे स्वाहा
ॐ प्रमाणाय स्वाहा
ॐ बीजायाव्ययाय स्वाहा
ॐ अर्थाय स्वाहा 430

ॐ अनर्थाय स्वाहा
ॐ महाकोशाय स्वाहा
ॐ महाभोगाय स्वाहा
ॐ महाधनाय स्वाहा
ॐ अनिर्विण्णाय स्वाहा
ॐ स्थविष्ठाय स्वाहा
ॐ अभुवे स्वाहा
ॐ धर्मयूपाय स्वाहा
ॐ महामखाय स्वाहा
ॐ नक्षत्रनेमये स्वाहा 440
ॐ नक्षत्रिणे स्वाहा
ॐ क्षमाय स्वाहा
ॐ क्षामाय स्वाहा
ॐ समीहनाय स्वाहा
ॐ यज्ञाय स्वाहा
ॐ इज्याय स्वाहा
ॐ महेज्याय स्वाहा
ॐ क्रतवे स्वाहा
ॐ सत्राय स्वाहा
ॐ सतां गतये स्वाहा 450
ॐ सर्वदर्शिने स्वाहा
ॐ विमुक्तात्मने स्वाहा
ॐ सर्वज्ञाय स्वाहा
ॐ ज्ञानायोत्तमाय स्वाहा
ॐ सुव्रताय स्वाहा
ॐ सुमुखाय स्वाहा
ॐ सूक्ष्माय स्वाहा
ॐ सुघोषाय स्वाहा
ॐ सुखदाय स्वाहा
ॐ सुहृदे स्वाहा 460
ॐ मनोहराय स्वाहा
ॐ जितक्रोधाय स्वाहा
ॐ वीरबाहवे स्वाहा
ॐ विदारणाय स्वाहा
ॐ स्वापनाय स्वाहा
ॐ स्ववशाय स्वाहा
ॐ व्यापिने स्वाहा
ॐ नैकात्मने स्वाहा
ॐ नैककर्मकृते स्वाहा
ॐ वत्सराय स्वाहा 470
ॐ वत्सलाय स्वाहा
ॐ वत्सिने स्वाहा
ॐ रत्नगर्भाय स्वाहा
ॐ धनेश्वराय स्वाहा
ॐ धर्मगुपे स्वाहा
ॐ धर्मकृते स्वाहा

ॐ धर्मणे स्वाहा
ॐ सते स्वाहा
ॐ असते स्वाहा
ॐ क्षराय स्वाहा 480
ॐ अक्षराय स्वाहा
ॐ अविज्ञात्रे स्वाहा
ॐ सहस्त्रांशवे स्वाहा
ॐ विधात्रे स्वाहा
ॐ कृतलक्षणाय स्वाहा
ॐ गभस्तिनेमये स्वाहा
ॐ सत्त्वस्थाय स्वाहा
ॐ सिंहाय स्वाहा

ॐ भूतमहेश्वराय स्वाहा
ॐ आदिदेवाय स्वाहा 490
ॐ महादेवाय स्वाहा
ॐ देवेशाय स्वाहा
ॐ देवभृद्गुरवे स्वाहा
ॐ उत्तराय स्वाहा
ॐ गोपतये स्वाहा
ॐ गोप्त्रे स्वाहा
ॐ ज्ञानगम्याय स्वाहा
ॐ पुरातनाय स्वाहा
ॐ शरीरभूतभृते स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि
ज्योतिरसि धामाऽसि
तत् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः, दिवीव चक्षुर-आततम्।।
तत्-विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते-विष्णोर्यत् परमं पदम्।।

ॐ भोक्त्रे स्वाहा 500

श्रीमत सरोरूह यवांकुशचक्रचापं
मत्स्यांकितं नवविलोहित पल्लवाभम्
लक्ष्म्यांलयं परममंगलम आत्मरूपे
वन्दे महापुरुष ते चरणारबन्दम् (6)

ॐ कपीन्द्राय स्वाहा
ॐ भूरिदक्षिणाय स्वाहा
ॐ सोमपाय स्वाहा
ॐ अमृतपाय स्वाहा

ॐ सोमाय स्वाहा
ॐ पुरुजिते स्वाहा
ॐ पुरुसत्तमाय स्वाहा
ॐ विनयाय स्वाहा

ॐ जयाय स्वाहा
ॐ सत्यसंधाय स्वाहा 510
ॐ दाशार्हाय स्वाहा
ॐ सात्त्वतां पतये स्वाहा
ॐ जीवाय स्वाहा
ॐ विनयितासाक्षिणे स्वाहा
ॐ मुकुन्दाय स्वाहा
ॐ अमितविक्रमाय स्वाहा
ॐ अम्भोनिधये स्वाहा
ॐ अनन्तात्मने स्वाहा
ॐ महोदधिशयाय स्वाहा
ॐ अन्तकाय स्वाहा 520
ॐ अजाय स्वाहा
ॐ महार्हाय स्वाहा
ॐ स्वाभाव्याय स्वाहा
ॐ जितामित्राय स्वाहा
ॐ प्रमोदनाय स्वाहा
ॐ आनन्दाय स्वाहा
ॐ नन्दनाय स्वाहा
ॐ नन्दाय स्वाहा
ॐ सत्यधर्मणे स्वाहा
ॐ त्रिविक्रमाय स्वाहा 530
ॐ महर्षये कपिलाचार्याय स्वाहा
ॐ कृतज्ञाय स्वाहा
ॐ मेदिनीपतये स्वाहा
ॐ त्रिपदाय स्वाहा
ॐ त्रिदशाध्यक्षाय स्वाहा
ॐ महा शृङ्गाय स्वाहा
ॐ कृतान्तकृते स्वाहा
ॐ महावराहाय स्वाहा
ॐ गोविन्दाय स्वाहा
ॐ सुषेणाय स्वाहा 540
ॐ कनकाङ्गदिने स्वाहा
ॐ गुह्याय स्वाहा
ॐ गभीराय स्वाहा
ॐ गहनाय स्वाहा
ॐ गुप्ताय स्वाहा
ॐ चक्रगदाधराय स्वाहा
ॐ वेधसे स्वाहा
ॐ स्वाङ्गाय स्वाहा
ॐ अजिताय स्वाहा
ॐ कृष्णाय स्वाहा 550
ॐ दृढाय स्वाहा
ॐ संकर्षणायाच्युताय स्वाहा
ॐ वरुणाय स्वाहा
ॐ वारुणाय स्वाहा
ॐ वृक्षाय स्वाहा
ॐ पुष्कराक्षाय स्वाहा

ॐ महामनसे स्वाहा
ॐ भगवते स्वाहा
ॐ भगघ्ने स्वाहा
ॐ आनन्दिने स्वाहा 560
ॐ वनमालिने स्वाहा
ॐ हलायुधाय स्वाहा
ॐ आदित्याय स्वाहा
ॐ ज्योतिरादित्याय स्वाहा
ॐ सहिष्णवे स्वाहा
ॐ गतिसत्तमाय स्वाहा
ॐ सुधन्वने स्वाहा
ॐ खण्डपरशवे स्वाहा
ॐ दारुणाय स्वाहा
ॐ द्रविणप्रदाय स्वाहा 570
ॐ दिवस्पृशे स्वाहा
ॐ सर्वदृग्व्यासाय स्वाहा
ॐ वाचस्पतयेऽयोनिजाय स्वाहा
ॐ त्रिसाम्ने स्वाहा
ॐ सामगाय स्वाहा
ॐ साम्ने स्वाहा
ॐ निर्वाणाय स्वाहा
ॐ भेषजाय स्वाहा

ॐ भिषजे स्वाहा
ॐ संन्यासकृते स्वाहा 580
ॐ शमाय स्वाहा
ॐ शान्ताय स्वाहा
ॐ निष्ठायै स्वाहा
ॐ शान्त्यै स्वाहा
ॐ परायणाय स्वाहा
ॐ शुभाङ्गाय स्वाहा
ॐ शान्तिदाय स्वाहा
ॐ स्त्रष्ट्रे स्वाहा
ॐ कुमुदाय स्वाहा
ॐ कुवलेशयाय स्वाहा 590
ॐ गोहिताय स्वाहा
ॐ गोपतये स्वाहा
ॐ गोप्त्रे स्वाहा
ॐ वृषभाक्षाय स्वाहा
ॐ वृषप्रियाय स्वाहा
ॐ अनिवर्तिने स्वाहा
ॐ निवृत्तात्मने स्वाहा
ॐ संक्षेप्त्रे स्वाहा
ॐ क्षेमकृते स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि
ज्योतिरसि धामाऽसि

तत् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः, दिवीव चक्षुर-आततम्।।
तत्-विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते-विष्णोर्यत् परमं पदम्।।

ॐ शिवाय स्वाहा 600

वृन्दा वनान्तरम् अगात् अनुगोकुलानां
संचार्य सर्वपशुभिः स्वविवृद्धिकामी
सञ्चिन्तयत् अजगुरो मृग पक्षिणां यत्
वन्दे महापुरुष ते तरणार बिन्दम् (7)

ॐ श्रीवत्सवक्षसे स्वाहा
ॐ श्रीवासाय स्वाहा
ॐ श्रीपतये स्वाहा
ॐ श्रीमतां वराय स्वाहा
ॐ श्रीदाय स्वाहा
ॐ श्रीशाय स्वाहा
ॐ श्रीनिवासाय स्वाहा
ॐ श्रीनिधये स्वाहा
ॐ श्रीविभावनाय स्वाहा
ॐ श्रीधराय स्वाहा 610
ॐ श्रीकराय स्वाहा
ॐ श्रेयसे स्वाहा
ॐ श्रीमते स्वाहा
ॐ लोकत्रयाश्रयाय स्वाहा
ॐ स्वक्षाय स्वाहा
ॐ स्वङ्गाय स्वाहा
ॐ शतानन्दाय स्वाहा
ॐ नन्दये स्वाहा
ॐ ज्योतिर्गणेश्वराय स्वाहा
ॐ विजितात्मने स्वाहा 620
ॐ अविधेयात्मने स्वाहा
ॐ सत्कीर्तये स्वाहा
ॐ छिन्नसंशयाय स्वाहा
ॐ उदीर्णाय स्वाहा
ॐ सर्वतश्चक्षुषे स्वाहा
ॐ अनीशाय स्वाहा
ॐ शाश्वतस्थिराय स्वाहा
ॐ भूशयाय स्वाहा
ॐ भूषणाय स्वाहा
ॐ भूतये स्वाहा 630

ॐ विशोकाय स्वाहा
ॐ शोकनाशनाय स्वाहा
ॐ अर्चिष्मते स्वाहा
ॐ अर्चिताय स्वाहा
ॐ कुम्भाय स्वाहा
ॐ विशुद्धात्मने स्वाहा
ॐ विशोधनाय स्वाहा
ॐ अनिरुद्धाय स्वाहा
ॐ अप्रतिरथाय स्वाहा
ॐ प्रद्युम्नाय स्वाहा 640
ॐ अमितविक्रमाय स्वाहा
ॐ कालनेमिनिघ्ने स्वाहा
ॐ वीराय स्वाहा
ॐ शौरये स्वाहा
ॐ शूरजनेश्वराय स्वाहा
ॐ त्रिलोकात्मने स्वाहा
ॐ त्रिलोकेशाय स्वाहा
ॐ केशवाय स्वाहा
ॐ केशिघ्ने स्वाहा
ॐ हरये स्वाहा 650
ॐ कामदेवाय स्वाहा
ॐ कामपालाय स्वाहा
ॐ कामिने स्वाहा

ॐ कान्ताय स्वाहा
ॐ कृतागमाय स्वाहा
ॐ अनिर्देश्यवपुषे स्वाहा
ॐ विष्णवे स्वाहा
ॐ वीराय स्वाहा
ॐ अनन्ताय स्वाहा
ॐ धनंजयाय स्वाहा 660
ॐ ब्रह्मण्याय स्वाहा
ॐ ब्रह्मकृते स्वाहा
ॐ ब्रह्मणे स्वाहा
ॐ ब्रह्मणे स्वाहा
ॐ ब्रह्मविवर्धनाय स्वाहा
ॐ ब्रह्मविदे स्वाहा
ॐ ब्राह्मणाय स्वाहा
ॐ ब्रह्मिणे स्वाहा
ॐ ब्रह्मज्ञाय स्वाहा
ॐ ब्राह्मणप्रियाय स्वाहा 670
ॐ महाक्रमाय स्वाहा
ॐ महाकर्मणे स्वाहा
ॐ महातेजसे स्वाहा
ॐ महोरगाय स्वाहा
ॐ महाक्रतवे स्वाहा
ॐ महायज्वने स्वाहा

ॐ महायज्ञाय स्वाहा
ॐ महाहविषे स्वाहा
ॐ स्तव्याय स्वाहा
ॐ स्तवप्रियाय स्वाहा 780
ॐ स्तोत्राय स्वाहा
ॐ स्तुतये स्वाहा
ॐ स्तोत्रे स्वाहा
ॐ रणप्रियाय स्वाहा
ॐ पूर्णाय स्वाहा
ॐ पूरयित्रे स्वाहा
ॐ पुण्याय स्वाहा

ॐ पुण्यकीर्तये स्वाहा
ॐ अनामयाय स्वाहा
ॐ मनोजवाय स्वाहा 690
ॐ तीर्थकराय स्वाहा
ॐ वसुरेतसे स्वाहा
ॐ वसुप्रदाय स्वाहा
ॐ वसुप्रदाय स्वाहा
ॐ वासुदेवाय स्वाहा
ॐ वसवे स्वाहा
ॐ वसुमनसे स्वाहा
ॐ हविषे स्वाहा
ॐ सद्गतये स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि
ज्योतिरसि धामाऽसि
तत् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः, दिवीव चक्षुर-आततम्।।
तत्-विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते-विष्णोर्यत् परमं पदम्।।

ॐ सत्कृतये स्वाहा 700

यत्गोपिका विरहजाग्नि परीतदेहाः
तप्तस्तनेषु विजहुः परिरभ्य तापम्
रासे त्वदीय कुचकुंकुमपंकल्पितम्
वन्दे महापुरुष ते चरणार बिन्दम् (8)

ॐ सत्तायै स्वाहा
ॐ सद्भूतये स्वाहा
ॐ सत्परायणाय स्वाहा

ॐ शूरसेनाय स्वाहा
ॐ यदुश्रेष्ठाय स्वाहा
ॐ सन्निवासाय स्वाहा

ॐ सुयामुनाय स्वाहा
ॐ भूतावासाय स्वाहा
ॐ वासुदेवाय स्वाहा
ॐ सर्वासुनिलयाय स्वाहा 710
ॐ अनलाय स्वाहा
ॐ दर्पघ्ने स्वाहा
ॐ दर्पदाय स्वाहा
ॐ दृप्ताय स्वाहा
ॐ दुर्धराय स्वाहा
ॐ अपराजिताय स्वाहा
ॐ विश्वमूर्तये स्वाहा
ॐ महामूर्तये स्वाहा
ॐ दीप्तमूर्तये स्वाहा
ॐ अभूर्तिमते स्वाहा 720
ॐ अनेकमूर्तये स्वाहा
ॐ अव्यक्ताय स्वाहा
ॐ शतमूर्तये स्वाहा
ॐ शताननाय स्वाहा
ॐ एकस्मै स्वाहा
ॐ नैकाय स्वाहा
ॐ सवाय स्वाहा
ॐ काय स्वाहा
ॐ कस्मै स्वाहा
ॐ यस्मै स्वाहा 730
ॐ तस्मै स्वाहा
ॐ पदायानुत्तमाय स्वाहा
ॐ लोकबन्धवे स्वाहा
ॐ लोकनाथाय स्वाहा
ॐ माधवाय स्वाहा
ॐ भक्तवत्सलाय स्वाहा
ॐ सुवर्णवर्णाय स्वाहा
ॐ हेमाङ्गाय स्वाहा
ॐ वराङ्गाय स्वाहा
ॐ चन्दनाङ्गदिने स्वाहा 740
ॐ वीरघ्ने स्वाहा
ॐ विषमाय स्वाहा
ॐ शून्याय स्वाहा
ॐ घृताशिषे स्वाहा
ॐ अचलाय स्वाहा
ॐ चलाय स्वाहा
ॐ अमानिने स्वाहा
ॐ मानदाय स्वाहा
ॐ मान्याय स्वाहा
ॐ लोकस्वामिने स्वाहा 750
ॐ त्रिलोकधृषे स्वाहा
ॐ सुमेधसे स्वाहा
ॐ मेधजाय स्वाहा
ॐ धन्याय स्वाहा

ॐ सत्यमेधसे स्वाहा
ॐ धराधराय स्वाहा
ॐ तेजोवृषाय स्वाहा
ॐ द्युतिधराय स्वाहा
ॐ सर्वशस्त्रभृतांवराय स्वाहा
ॐ प्रगहाय स्वाहा 760
ॐ निग्रहाय स्वाहा
ॐ व्यग्राय स्वाहा
ॐ नैक शृङ्गाय स्वाहा
ॐ गदाग्रजाय स्वाहा
ॐ चतुर्मूतये स्वाहा
ॐ चतुर्बाहवे स्वाहा
ॐ चतुर्व्यूहाय स्वाहा
ॐ चतुर्गतये स्वाहा
ॐ चतुरात्मने स्वाहा
ॐ चतुर्भावाय स्वाहा 770
ॐ चतुर्वेदविदे स्वाहा
ॐ एकपदे स्वाहा
ॐ समावर्ताय स्वाहा
ॐ अनिवृत्तात्मने स्वाहा
ॐ दुर्जयाय स्वाहा
ॐ दुरतिक्रमाय स्वाहा
ॐ दुर्लभाय स्वाहा
ॐ दुर्गमाय स्वाहा
ॐ दुर्गाय स्वाहा
ॐ दुरावासाय स्वाहा 780
ॐ दुरारिघ्ने स्वाहा
ॐ शुभाङ्गाय स्वाहा
ॐ लोकसारङ्गाय स्वाहा
ॐ सुतन्तवे स्वाहा
ॐ तन्तुवर्धनाय स्वाहा
ॐ इन्द्रकर्मणे स्वाहा
ॐ महाकर्मणे स्वाहा
ॐ कृतकर्मणे स्वाहा
ॐ कृतागमाय स्वाहा
ॐ उद्भवाय स्वाहा 790
ॐ सुन्दराय स्वाहा
ॐ सुन्दाय स्वाहा
ॐ रत्ननाभाय स्वाहा
ॐ सुलोचनाय स्वाहा
ॐ अर्काय स्वाहा
ॐ वाजसनाय स्वाहा
ॐ शृङ्गिणे स्वाहा
ॐ जयन्ताय स्वाहा
ॐ सर्वविज्जयिने स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि
ज्योतिरसि धामाऽसि
तत् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः, दिवीव चक्षुर-आततम्।।
तत्-विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते-विष्णोर्यत् परमं पदम्।।

ॐ सुवर्णबिन्दवे स्वाहा 800

कालीयमस्तकविघटनदक्षम् अस्य
मोक्षोप्सुभिर्विर्रहदीन मुखाभिर्आरात्
तत्पत्निभिः स्तुतम् अशेषनिकामरूपं
वन्दे महापुरुष ते चरणार बिन्दम् (9)

ॐ अक्षोभ्याम् स्वाहा
ॐ सर्ववागीश्वरेश्वराय स्वाहा
ॐ महाह्रदाय स्वाहा
ॐ महागर्ताय स्वाहा
ॐ महाभूताय स्वाहा
ॐ महानिधये स्वाहा
ॐ कुमुदाय स्वाहा
ॐ कुन्दराय स्वाहा
ॐ कुन्दाय स्वाहा
ॐ पर्जन्याय स्वाहा 810
ॐ पावनाय स्वाहा
ॐ अनिलाय स्वाहा
ॐ अमृताशाय स्वाहा
ॐ अमृतवपुषे स्वाहा
ॐ सर्वज्ञाय स्वाहा
ॐ सर्वतोमुखाय स्वाहा
ॐ सुलभाय स्वाहा
ॐ सुव्रताय स्वाहा
ॐ सिद्धाय स्वाहा
ॐ शत्रुजिते स्वाहा 820
ॐ शत्रुतापनाय स्वाहा
ॐ न्यग्रोधाय स्वाहा
ॐ उदुम्बराय स्वाहा
ॐ अश्वत्थाय स्वाहा
ॐ चाणूरान्ध्रनिषूदनाय स्वाहा
ॐ सहस्त्रार्चिषे स्वाहा
ॐ सप्तजिह्वाय स्वाहा
ॐ सप्तैधसे स्वाहा
ॐ सप्तवाहनाय स्वाहा
ॐ अमूर्तये स्वाहा 830

ॐ अनघाय स्वाहा
ॐ अचिन्त्याय स्वाहा
ॐ भयकृते स्वाहा
ॐ भयनाशनाय स्वाहा
ॐ अणवे स्वाहा
ॐ बृहते स्वाहा
ॐ कृशाय स्वाहा
ॐ स्थूलाय स्वाहा
ॐ गुणभृते स्वाहा
ॐ निर्गुणाय स्वाहा 840
ॐ महते स्वाहा
ॐ अधृताय स्वाहा
ॐ स्वधृताय स्वाहा
ॐ स्वास्याय स्वाहा
ॐ प्राग्वंशाय स्वाहा
ॐ वंशवर्धनाय स्वाहा
ॐ भारभृते स्वाहा
ॐ कथिताय स्वाहा
ॐ योगिने स्वाहा
ॐ योगीशाय स्वाहा 850
ॐ सर्वकामदाय स्वाहा
ॐ आश्रमाय स्वाहा
ॐ श्रमणाय स्वाहा
ॐ क्षामाय स्वाहा

ॐ सुपर्णाय स्वाहा
ॐ वायुवाहनाय स्वाहा
ॐ धनुर्धराय स्वाहा
ॐ धनुर्वेदाय स्वाहा
ॐ दण्डाय स्वाहा
ॐ दमयित्रे स्वाहा 860
ॐ दमाय स्वाहा
ॐ अपराजिताय स्वाहा
ॐ सर्वसहाय स्वाहा
ॐ नियन्त्रे स्वाहा
ॐ अनियमाय स्वाहा
ॐ अयमाय स्वाहा
ॐ सत्त्ववते स्वाहा
ॐ सात्त्विकाय स्वाहा
ॐ सत्याय स्वाहा
ॐ सत्यधर्मपरायणाय स्वाहा
ॐ अभिप्रायाय स्वाहा
ॐ प्रियार्हाय स्वाहा
ॐ अर्हाय स्वाहा
ॐ प्रियकृते स्वाहा
ॐ प्रीतिवर्धनाय स्वाहा
ॐ विहायसगतये स्वाहा
ॐ ज्योतिषे स्वाहा
ॐ सुरुचये स्वाहा

ॐ हुतभुजे स्वाहा
ॐ विभवे स्वाहा 880
ॐ रवये स्वाहा
ॐ विरोचनाय स्वाहा
ॐ सूर्याय स्वाहा
ॐ सवित्रे स्वाहा
ॐ रविलोचनाय स्वाहा
ॐ अनन्ताय स्वाहा
ॐ हुतभुजे स्वाहा
ॐ भोक्त्रे स्वाहा
ॐ सुखदाय स्वाहा
ॐ नैकजाय स्वाहा 890
ॐ अग्रजाय स्वाहा
ॐ अनिर्विण्णाय स्वाहा
ॐ सदामर्षिणे स्वाहा
ॐ लोकाधिष्ठानाय स्वाहा
ॐ अद्‌भुताय स्वाहा
ॐ सनाते स्वाहा
ॐ सनातनमाय स्वाहा
ॐ कपिलाय स्वाहा
ॐ कपये स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि
ज्योतिरसि धामाऽसि
तत् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः, दिवीव चक्षुर-आततम्।।
तत्-विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते-विष्णोर्यत् परमं पदम्।।

ॐ अप्ययाय स्वाहा 900

ज्ञानालयं श्रुति विमृग्यम् अनादिम्
अर्च्यंब्रह्मादिभिर्हृदि विचिन्त्यम् अगाध बोधैः
संसार कूपपतितोत्तरणावलम्बं
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् (10)

ॐ स्वस्तिदाय स्वाहा
ॐ स्वस्तिकृते स्वाहा
ॐ स्वस्तये स्वाहा
ॐ स्वस्तिभुजे स्वाहा
ॐ स्वस्तिदक्षिणाय स्वाहा
ॐ अरौद्राय स्वाहा
ॐ कुण्डलिने स्वाहा
ॐ चक्रिणे स्वाहा

ॐ विक्रमिणे स्वाहा
ॐ ऊर्जितशासनाय स्वाहा 910
ॐ शब्दातिगाय स्वाहा
ॐ शब्दसहाय स्वाहा
ॐ शिशिराय स्वाहा
ॐ शर्वरीकराय स्वाहा
ॐ अक्रूराय स्वाहा
ॐ पेशलाय स्वाहा
ॐ दक्षाय स्वाहा
ॐ दक्षिणाय स्वाहा
ॐ क्षमिणां वराय स्वाहा
ॐ विद्वत्तमाय स्वाहा 920
ॐ वीतभयाय स्वाहा
ॐ पुण्यश्रवणकीर्तनाय स्वाहा
ॐ उत्तारणाय स्वाहा
ॐ दुष्कृतिघ्ने स्वाहा
ॐ पुण्याय स्वाहा
ॐ दुःस्वप्ननाशनाय स्वाहा
ॐ वीरघ्ने स्वाहा
ॐ रक्षणाय स्वाहा
ॐ सद्भ्यो स्वाहा
ॐ जीवनाय स्वाहा 930
ॐ पर्यवस्थिताय स्वाहा
ॐ अनन्तरूपाय स्वाहा

ॐ अनन्तश्रिये स्वाहा
ॐ जितमन्यवे स्वाहा
ॐ भयापहाय स्वाहा
ॐ चतुरस्त्राय स्वाहा
ॐ गभीरात्मने स्वाहा
ॐ विदिशाय स्वाहा
ॐ व्यादिशाय स्वाहा
ॐ दिशाय स्वाहा 940
ॐ अनादये स्वाहा
ॐ भूर्भुवे स्वाहा
ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा
ॐ सुवीराय स्वाहा
ॐ रुचिराङ्गदाय स्वाहा
ॐ जननाय स्वाहा
ॐ जनजन्मादये स्वाहा
ॐ भीमाय स्वाहा
ॐ भीमपराक्रमाय स्वाहा 950
ॐ आधारनिलयाय स्वाहा
ॐ अधात्रे स्वाहा
ॐ पुष्पहासाय स्वाहा
ॐ प्रजागराय स्वाहा
ॐ ऊर्ध्वगाय स्वाहा
ॐ सत्पथाचाराय स्वाहा
ॐ प्राणदाय स्वाहा

ॐ प्रणवाय स्वाहा
ॐ पणाय स्वाहा
ॐ प्रमाणाय स्वाहा
ॐ प्राणनिलयाय स्वाहा
ॐ प्राणभृते स्वाहा
ॐ प्राणजीवनाय स्वाहा
ॐ तत्त्वाय स्वाहा
ॐ तत्वविदे स्वाहा
ॐ एकात्मने स्वाहा
ॐ जन्ममृत्युजरातिगाय स्वाहा
ॐ भूर्भुवः स्वस्तरवे स्वाहा
ॐ ताराय स्वाहा
ॐ सवित्रे स्वाहा
ॐ प्रपितामहाय स्वाहा 970
ॐ यज्ञाय स्वाहा
ॐ यज्ञपतये स्वाहा
ॐ यज्वने स्वाहा
ॐ यज्ञाङ्गाय स्वाहा
ॐ यज्ञवाहनाय स्वाहा
ॐ यज्ञभृते स्वाहा
ॐ यज्ञकृते स्वाहा
ॐ यज्ञिने स्वाहा
ॐ यज्ञभुजे स्वाहा
ॐ यज्ञसाधनाय स्वाहा
ॐ यज्ञान्तकृते स्वाहा
ॐ यज्ञगुह्याय स्वाहा
ॐ अन्नाय स्वाहा
ॐ अन्नादाय स्वाहा
ॐ आत्मयोनये स्वाहा
ॐ स्वयंजाताय स्वाहा
ॐ वैखानाय स्वाहा
ॐ सामगायनाय स्वाहा
ॐ देवकीनन्दनाय स्वाहा
ॐ स्त्रष्ट्रे स्वाहा 990
ॐ क्षितीशाय स्वाहा
ॐ पापनाशनाय स्वाहा
ॐ शङ्खभृते स्वाहा
ॐ नन्दकिने स्वाहा
ॐ चक्रिणे स्वाहा
ॐ शार्ङ्गधन्वने स्वाहा
ॐ गदाधराय स्वाहा
ॐ रथाङ्गपाणये स्वाहा
ॐ अक्षोभ्याय स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि
ज्योतिरसि धामाऽसि

तत् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः, दिवीव चक्षुर-आततम्।।
तत्-विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते-विष्णोर्यत् परमं पदम्।।

ॐ सर्वप्रहरणायुधाय नमः स्वाहा 1000

यत्र योगेश्वर कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीविजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।

अनन्याश्चिान्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।

जयतु जयतु देवो देवकीनन्दनोऽयं
जयतु जयतु कृष्णो वृष्णिवंशप्रदीपः।
जयतु जयतु मेघश्यामलः कोमलाङ्गो
जयतु जयतु पृथ्वीभारनाशो मुकुन्दः।।

कृष्ण त्वदीयपदपङ्कजपञ्जरान्तरद्येव
मे विशतु मानसराजहंसः।
प्राणप्रयाणसमये कफवातपित्तैः
कण्ठावरोधनविधौ स्मरणं कुतस्ते।।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारयणायेति समर्पयामि।।

क्षीरसागरतरङ्गशीकरासारतारकितचारुमूर्तये।
भोगिभोगशयनीयशायिने माधवाय मधुविद्विषे नमः।।

श्री हनूमते नमः

श्री हनुमान चालीसा

दोहा

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज, मन मुकुरू सुधारि।
बरनऊँ रघुबर बिमल जसु, जो दायक फल चारि।।
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुद्धि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस विकार।।

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।।
राम दूत अतुलित बल धामा।
अंजनि - पुत्र पवन सुत नामा।।

महावीर बिक्रम बजरंगी।
कुमति निवार सुमति के संगी।।
कंचन बरन बिराज सुबेसा।
कानन कुण्डल कुंचित केसा।।
हाथ बज्र और ध्वजा बिराजै।
काँधे मूँज जनेऊ साजै।।
शंकर सुवन केसरी नन्दन।
तेज प्रताप महा जग बन्दन।।
बिद्यावान गुनी अति चातुर।
राम काज करिबे को आतुर।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया।
राम लखन सीता मन बसिया।।

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।
विकट रूप धरि लंक जरावा।।

भीम रूप धरि असुर सँहारे।
रामचन्द्र के काज सँवारे।।

लाय संजीवन लखन जियाये।
श्री रघुबीर हरषि उर लाये।।

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।।

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं।।

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा।
नारद सारद सहित अहीसा।।

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते।
कविव कोबिद कहि सके कहाँ ते।।

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।
राम मिलाय राज पद दीन्हा।।

तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना।
लंकेश्वर भए सब जग जाना।।

जुग सहस्त्र जोजन पर भानू।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं।।

दुर्गम काज जगत के जेते।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।

राम दुआरे तुम रखवारे।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना।
तुम रक्षक काहू को डरना।।
आपन तेज सम्हारो आपै।
तीनों लोक हाँकतें काँपै।।
भूत पिशाच निकट नहिं आवै।
महाबीर जब नाम सुनावै।।
नासै रोग हरै सब पीरा।
जपत निरंतर हनुमत बीरा।।
संकट तें हनुमान छुड़ावै।
मन क्रम बचन ध्यान जे लावै।।
सब पर राम तपस्वी राजा।
तिन के काज सकल तुम साजा।।
और मनोरथ जो कोइ लावै।
सोइ अमित जीवन फल पावै।।
चारों जुग परताप तुम्हारा।
है परसिद्ध जगत उजियारा।।
साधु संत के तुम रखवारे।
असुर निकंदन राम दुलारे।।
अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता।
अस बर दीन जानकी माता।।
राम रसायन तुम्हरे पासा।
सदा रहो रघुपति के दासा।।

तुम्हरे भजन राम को भावै।
जनम जनम के दुख बिसरावै।।
अंत काल रघुबर पुर जाई।
जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई।
और देवता चित्त न धरई।
हनुमत सेइ सर्ब सुख करई।।
संकट कटै मिटै सब पीरा।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।
जै जै जै हनुमान गोसाईं।
कृपा करहु गुरु देव की नाईं।।
जो शत बार पाठ कर कोई।
छूटहि बंदि महा सुख होई।।
जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा।
होय सिद्धि साखी गौरीसा।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा।।

दोहा

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।।

फल

विष्णो-नाम सहस्त्र तत्-प्रत्यहं वृषभ-ध्वज।
नाम्नैकेन तु येन स्यातु, तत्-फलं ब्रूहि मे प्रभो!
श्री महोदव उवाचः रकारादीनि नामानि शृण्वतो मम
पार्वति मनः प्रसन्नताम-एति राम-नामाभि-शंकया,

रमन्तेयोगिनो यत्र सदानन्दे विदात्मनि इति राम पदेनासौ परं-ब्रह्म-अभिधीयते। श्री राम रामरामेति रमे रामे मनोरमे। सहस्त्रनाम तत्- तुल्य रामनाम वरानने॥

पुनः तेजोऽसि शुक्रमसिज्योतिरसि धामाऽसि

तत् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः, दिवीव चक्षुर-आततम्।।
तत्-विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते-विष्णोर्यत् परमं पदम्।।

स्वाहा

तर्पण करते हुए पढ़ें-

अनेन विष्णु-स्वाहाकार होमेन भगवान् वासुदेवः संकर्षणः प्रद्युम्नः अनिरुद्धः सत्य पुरुषः अच्युतः माधवः गोविन्दः सहस्त्रनामा विष्णु लक्ष्मीसहितः-नारायणः प्रीयतां प्रीतोस्तु।

शिवसहस्त्रनामावली

शिवसहस्त्रनाम स्वाहाकार पूजन विधिः

अग्नि में फूल डालते हुये पढ़ें :-

ॐ उपमन्युर्-उवाच-**यतो लोकाः सम्भवन्ति न भवन्ति यतः पुनः। सर्व-भूतात्मभूतस्य हरस्यामित-तेजसः अष्टोत्तर-सहस्त्रं तु नाम्नां शर्वस्य मे शृणु। यत्-श्रुत्वा मनुजश्रेष्ठः सर्वान्-कामान्-अवाप्स्यति।**

विनियोग करते हुये पढ़ें :-

अस्य श्रीशिव-सहस्त्रनाम-स्तवराजस्य तुण्डि-ॠषिः, अनुष्टप् छन्दः, श्रीशिवः परमात्मादेवता आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जित-पाप निवारणार्थं शिवप्रीत्यर्थं होमे/पुष्पार्चने वा विनियोगः।

(करन्यासः)

ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः,

"न" तर्जनीभ्यां नमः

'मः' मध्यमाभ्यां नमः,

"शि" अनामिकाभ्यां नमः,

"वा" कनिष्ठिकाभ्यां नमः

"य" करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः स्वाहा

(अगन्यासः)

"ॐ नमः शिवाय" मन्त्रः-

ॐ हृदयाय नमः

"न" शिरसे स्वाहा

"मः" शिखायै वषट्

"शि" कवचाय हुं

"वा" नेत्राभ्यां वौषट्,

"य" अस्त्राय फट्।

प्राणायाम करके फूल हाथ में लेकर (ध्यान) पढ़िये :-

देवं सदा-कलश-सोमकरं त्रिनेत्रं, पद्मासनं च वरदाभयदं सुशुभ्रम्शंखाभयाब्जवर-भूषितया च देव्या, वामेंकितं शमन-भंगहरं नमामि।

आहुति डालिये :-

तत्-पुरुषाय विद्महे स्वाहा, महादेवाय धीमहि स्वाहा, तन्नः शिवः प्रचोदयात्-स्वाहा।

तत्-पुरुषाय विद्महे, महादेवाय धीमहि स्वाहा, तन्नः शिवः प्रचोदयात्-स्वाहा।

तत्-पुरुषाय विद्महे, महादेवाय धीमहि, तन्नः शिवः प्रचोदयात्-स्वाहा।

शिव स्तुति

फूल डालें-

आधीनामं अगदं दिव्यं व्याधीनां मूल कृन्तनं
उपद्रवाणां दलनं महादेवम् उपास्महे।
अहं पापी पाप क्षपण निपुणः शंकर भवान्
अहं भीतो भीता-भय-वितरणे ते व्यसनिता।
अहं दीनो दीनोद्धरण विधि सज्जत्वमितरत
न जानेहं वक्तुं कुरु सकल शोचे मयि कृपाम्।
जनात्वद् पादाब्ज़ श्रवण मनन ध्यान निपुणाः
स्वयं ते निस्तीर्णा न खलु करुणा तेषु करुणा।
भवे लीने दीने मयि मननहीने न करुणा
कथं नाथ ख्यातस्तवमसि करुणा सागर इति।

अर्थ

अधियन हुन्द युस औषधि छु आसवुन,
व्याधियन हुन्द युस मूल गालान।
कठिञण उपद्रवन द्रोत युस छु वायान्,
तस महादेवस कर ब पूज़ा।

ही शंकर छुस ब पापी आसवुन,
च़्यय पापन छुख नाश करान।

खूच़्मुत छुस ब्ययि खोफ छुम म्य बासान,
च़्यय अभय दिवान च़्यय भय कासान।

छुस ब दीन ब्ययि आरत्यन हुन्द ओरूत,
आरत्यन भवसर च़्यय तारान।

कर दया म्य बुद्धि हीनस प्यठ च़ पानय,
अमि ख़ोत ज़्याद छुस न केंह ब ज़ानान।

ही शंकर चानि चरण कमलुक युस,
करि श्रवन मनन ब्ययि निदिध्यासन
तरि पानै सु भवसर हाजत तस,
चाञन कटाक्षण हुन्द कति रोज़ान।

संसारस मंज़ फटिमतिस म्य दुखियस,
विच़ार रुस्तिस त म्य अनाथस
यलि करख न दया म्य मूढ़ भाव सस्तिस,
नाव चोन दयासागर वन ब कस।
कति सपदि नाव चोन मशहूर ज़गतस,
शंकर छु तारान भवसागरस॥

शंकर छु तारान महादीव छु तारान,
सत्गुरु छु तारान भवसागरस॥

शिव महिम्नः स्तोत्रम्

श्रीपुष्पदन्त उवाच–

महिम्नः पारं ते परम विदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर् ब्रह्मादीनाम् अपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधिगृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर निर् अपवादः परिकरः (१)

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयोर्
अतद् व्यावृत्त्या यं चकितम्–अभिधते श्रुतिर् अपि।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः (२)

मधुस्फीता वाचः परमम् अमृतं निर्मितवतः
तव ब्रह्मन् किं वाग् अपि सुरगुरोर् विस्मयपदम्।
मम त्वेतां वाणीं गुण कथन पुण्येन भवतः।
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथनबुद्धिर्व्यवसिता (३)

आहुति डालें–

ॐ स्थिराय स्वाहा
ॐ स्थाणवे स्वाहा
ॐ प्रभवे स्वाहा
ॐ भानवे स्वाहा
ॐ प्रभवाय स्वाहा
ॐ वरदाय स्वाहा
ॐ वराय स्वाहा
ॐ सर्वात्मने स्वाहा
ॐ सर्वविख्याताय स्वाहा
ॐ सर्वस्मै स्वाहा 10

ॐ सर्वाकरोद्भवाय स्वाहा
ॐ जटिने स्वाहा
ॐ चर्मिणे स्वाहा
ॐ शिखण्डिने स्वाहा
ॐ सर्वाङ्गाय स्वाहा
ॐ सर्वभावनाय स्वाहा
ॐ हराय स्वाहा
ॐ हरिणाक्षाय स्वाहा
ॐ सर्वभूतहराय स्वाहा
ॐ विभवे स्वाहा

ॐ प्रवृत्तये स्वाहा 20
ॐ निवृत्तये स्वाहा
ॐ नियताय स्वाहा
ॐ शाश्वताय स्वाहा
ॐ ध्रुवाय स्वाहा
ॐ श्मशानचारिणे स्वाहा
ॐ भगवते स्वाहा
ॐ खचराय स्वाहा
ॐ गोचरोद्भवाय स्वाहा
ॐ अभिवाद्याय स्वाहा
ॐ महाकर्मणे स्वाहा 30
ॐ तपस्विने स्वाहा
ॐ भूतभावनाय स्वाहा
ॐ उन्मत्तवेशप्रच्छन्नाय स्वाहा
ॐ सर्वलोकपितामहाय स्वाहा
ॐ महारूपाय स्वाहा
ॐ महाकायाय स्वाहा
ॐ वृषरूपाय स्वाहा
ॐ महायशसे स्वाहा
ॐ महात्मने स्वाहा
ॐ सर्वभूतात्मने स्वाहा 40
ॐ विश्वरूपाय स्वाहा
ॐ महाहनवे स्वाहा
ॐ लोकपालाय स्वाहा
ॐ अन्तर्हितात्मने स्वाहा
ॐ प्रसादाय स्वाहा
ॐ हयगर्दभये स्वाहा
ॐ पवित्राय स्वाहा
ॐ महते स्वाहा
ॐ नियमाय स्वाहा
ॐ नियमाश्रयाय स्वाहा 50
ॐ सर्वकर्मणे स्वाहा
ॐ स्वयम्भूताय स्वाहा
ॐ आदये स्वाहा
ॐ आदिकराय स्वाहा
ॐ निधये स्वाहा
ॐ सहस्त्राक्षाय स्वाहा
ॐ विशालाक्षाय स्वाहा
ॐ सोमाय स्वाहा
ॐ नक्षत्रसाधकाय स्वाहा
ॐ चन्द्राय स्वाहा 60
ॐ सूर्याय स्वाहा
ॐ शनये स्वाहा
ॐ केतवे स्वाहा
ॐ ग्रहाय स्वाहा
ॐ ग्रहपतये स्वाहा
ॐ वराय स्वाहा
ॐ अत्रये स्वाहा

ॐ अत्र्यानमस्कर्त्रे स्वाहा
ॐ मृगबाणार्पणाय स्वाहा
ॐ अनघाय स्वाहा 70
ॐ महातपसे स्वाहा
ॐ घोरतपसे स्वाहा
ॐ अदीनाय स्वाहा
ॐ दीनसाधकाय स्वाहा
ॐ संवत्सरकराय स्वाहा
ॐ मन्त्रिणे स्वाहा
ॐ प्रमाणाय स्वाहा
ॐ परमंतपसे स्वाहा
ॐ योगिने स्वाहा
ॐ याज्याय स्वाहा 80
ॐ महाबीजाय स्वाहा
ॐ महारेतसे स्वाहा
ॐ महाबलाय स्वाहा
ॐ स्वर्वणरेतसे स्वाहा
ॐ सर्वज्ञाय स्वाहा
ॐ सुबीजाय स्वाहा
ॐ बीजवाहनाय स्वाहा
ॐ दशबाहवे स्वाहा
ॐ अनिमिषाय स्वाहा
ॐ नीलकण्ठाय स्वाहा 90
ॐ उमापतये स्वाहा
ॐ विश्वरूपाय स्वाहा
ॐ स्वयंश्रेष्ठाय स्वाहा
ॐ बलवीराय स्वाहा
ॐ अबलाय स्वाहा
ॐ गणाय स्वाहा
ॐ गणकर्त्रे स्वाहा
ॐ गणपतये स्वाहा
ॐ दिग्वाससे स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि
ज्योतिरसि धामाऽसि

यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु यो ओषधीषु यो वनस्पतिषु, यो
रुद्रो विश्वाः भुवनः विवेश तस्मै रूद्राय नमो अस्तु देवाः।।

ॐ कामाय स्वाहा 100

तवैश्वर्यं यत् तत् जगत् उदय रक्षा प्रलय कृत्
त्रयी वस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु।
अभव्यानाम् अस्मिन् वरद रमणीयाम् अरमणीम्
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः (४)

किमीहः किंकायः स खलु किमुपायः त्रिभुवनम्
किम् आधारो धाता सृजति किम् उपादानं इति च
अतर्क्यैश्वर्य्यै त्वय्यनवसर दुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः (५)

अजन्मानोलोकाः किम् अवयववन्तोपि जगताम्
अधिष्ठातारं किं भवविधिर् अनादृत्य भवति।
अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो।
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे (६)

ॐ मन्त्रविदे स्वाहा
ॐ परमाय स्वाहा
ॐ मन्त्राय स्वाहा
ॐ सर्वभावकराय स्वाहा
ॐ हराय स्वाहा
ॐ कमण्डलुधराय स्वाहा
ॐ धन्विने स्वाहा
ॐ बाणहस्ताय स्वाहा
ॐ कपालवते स्वाहा
ॐ अशनिने स्वाहा
ॐ शतघ्निने स्वाहा 110
ॐ खड्गिने स्वाहा
ॐ पट्टिसने स्वाहा
ॐ आयुधिने स्वाहा
ॐ बृहते स्वाहा
ॐ स्त्रुवहस्ताय स्वाहा
ॐ स्वरूपाय स्वाहा

ॐ तेजसे स्वाहा
ॐ तेजस्कराय स्वाहा
ॐ निधये स्वाहा
ॐ उष्णीषिणे स्वाहा 120
ॐ सुवक्ताय स्वाहा
ॐ उदग्राय स्वाहा
ॐ विनताय स्वाहा
ॐ दीर्घाय स्वाहा
ॐ हरिनेत्राय स्वाहा
ॐ सुतीक्ष्णाय स्वाहा
ॐ कृष्णाय स्वाहा
ॐ सृगालरूपाय स्वाहा
ॐ सिद्धार्थाय स्वाहा
ॐ मुण्डाय स्वाहा 130
ॐ सर्वशुभङ्कराय स्वाहा
ॐ अजाय स्वाहा
ॐ बहुरूपाय स्वाहा

ॐ गन्धधारिणे स्वाहा
ॐ कपर्दिने स्वाहा
ॐ ऊर्ध्वरेतसे स्वाहा
ॐ ऊर्ध्वलिङ्गाय स्वाहा
ॐ ऊर्ध्वशायिने स्वाहा
ॐ नभस्तलाय स्वाहा
ॐ त्रिजटिने स्वाहा 140
ॐ चीरवाससे स्वाहा
ॐ रुद्राय स्वाहा
ॐ सेनापतये स्वाहा
ॐ खगाय स्वाहा
ॐ अहश्चराय स्वाहा
ॐ नक्तञ्चराय स्वाहा
ॐ तिग्ममन्यवे स्वाहा
ॐ सुवर्चसाय स्वाहा
ॐ गजघ्ने स्वाहा
ॐ दैत्यघ्ने स्वाहा 150
ॐ कालाय स्वाहा
ॐ लोकधात्रे स्वाहा
ॐ गुणाकराय स्वाहा
ॐ सिंहशार्दूलरूपाय स्वाहा
ॐ आर्द्रचर्माम्बरावृताय स्वाहा
ॐ कालयोगिने स्वाहा
ॐ महानादाय स्वाहा

ॐ सर्वकामाय स्वाहा
ॐ चतुष्पथाय स्वाहा
ॐ निशाचराय स्वाहा 160
ॐ प्रेतचारिणे स्वाहा
ॐ भूतचारिणे स्वाहा
ॐ महेश्वराय स्वाहा
ॐ बहुरूपाय स्वाहा
ॐ बहुधराय स्वाहा
ॐ स्वर्भानवे स्वाहा
ॐ अमिताय स्वाहा
ॐ गतये स्वाहा
ॐ नृत्यप्रियाय स्वाहा 170
ॐ नृत्यतृप्ताय स्वाहा
ॐ नर्तकाय स्वाहा
ॐ सर्वलासकाय स्वाहा
ॐ घोराय स्वाहा
ॐ महातपसे स्वाहा
ॐ पाशाय स्वाहा
ॐ नित्याय स्वाहा
ॐ गिरिरुहाय स्वाहा
ॐ नभसे स्वाहा
ॐ सहस्रहस्ताय स्वाहा
ॐ विजयाय स्वाहा 180
ॐ व्यवसायाय स्वाहा

ॐ अतन्द्रिताय स्वाहा

ॐ अमर्षणाय स्वाहा

ॐ धर्षणात्मने स्वाहा

ॐ यज्ञेघ्ने स्वाहा

ॐ कामनाश्काय स्वाहा

ॐ दक्षयज्ञापहारिणे स्वाहा

ॐ स्ववर्णाय स्वाहा

ॐ मध्यमाय स्वाहा

ॐ तेजोपहारिणे स्वाहा 190

ॐ बलिघ्ने स्वाहा

ॐ मुदिताय स्वाहा

ॐ अर्थाय स्वाहा

ॐ अजिताय स्वाहा

ॐ अवराय स्वाहा

ॐ गम्भीरघोषाय स्वाहा

ॐ गम्भीराय स्वाहा

ॐ गम्भीरबलवाहनाय स्वाहा

ॐ न्यग्रोधरूपाय स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि

ज्योतिरसि धामाऽसि

यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु यो ओषधीषु यो वनस्पतिषु, यो रूद्रो विश्वा: भुवन: विवेश तस्मै रूद्राय नमो अस्तु देवा:।।

ॐ न्यग्रोधाय स्वाहा २००

त्रयी सांख्यं योग: पशुपतिमतं वैष्णवम् इति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परम् इदम् अद: पथ्यम् इति च।
रुचीनां वैचित्र्यात् ऋजु-कुटिलनानापथजुषाम्
नृणाम् एको गम्यस्त्वमसि पयसाम्अर्णव इव (७)

महोक्ष: खट्वाङ्गं परशुर् अजिनं भस्म फणिन:
कपालं चेती यत्तव वरद तन्त्रोपकरणम्।
सुरास्तां ताम् ऋद्धिं दधति तु भवद्–भ्रूप्रणिहितां
नहि स्वात्मा रामं विषयमृग-तृष्णा भ्रमयति (८)

ध्रुवं कश्चित् सर्वं सकलम् अपरस्त्वं ध्रुवम् इदं
परो ध्रौव्या ध्रौव्ये जगति गदति व्यस्त विषये।
समस्तेप्येतस्मिन् पुरमथनतैर्विस्मित इव
स्तुवन् जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता (९)

ॐ वृक्षकर्णस्थितये स्वाहा
ॐ स्वभुवे स्वाहा
ॐ सुतीक्ष्णदशनाय स्वाहा
ॐ महाकायाय स्वाहा
ॐ महाननाय स्वाहा
ॐ विष्वक्सेनाय स्वाहा
ॐ हरये स्वाहा
ॐ यज्ञाय स्वाहा
ॐ संयुगापीडवाहनाय स्वाहा
ॐ तीक्ष्णतपसे स्वाहा 210
ॐ हर्यश्वाय स्वाहा
ॐ सहायाय स्वाहा
ॐ कर्मकालविदे स्वाहा
ॐ विष्णुप्रसादिताय स्वाहा
ॐ यज्वने स्वाहा
ॐ समुद्राय स्वाहा
ॐ वडवामुखाय स्वाहा
ॐ हुताशनसहायाय स्वाहा 220
ॐ प्रशान्तात्मने स्वाहा
ॐ हुताशनाय स्वाहा
ॐ उग्रतेजसे स्वाहा
ॐ महातेजसे स्वाहा
ॐ जयाय स्वाहा
ॐ विजयाय स्वाहा

ॐ कालविदे स्वाहा
ॐ ज्योतिषामयनाय स्वाहा
ॐ सिद्धये स्वाहा
ॐ सर्वविग्रहाय स्वाहा
ॐ शिखिने स्वाहा
ॐ मुण्डिने स्वाहा 230
ॐ जटिने स्वाहा
ॐ ज्वालिने स्वाहा
ॐ मुर्तिजाय स्वाहा
ॐ दुर्बलाय स्वाहा
ॐ बलिने स्वाहा
ॐ वैणविने स्वाहा
ॐ पणविने स्वाहा
ॐ तालिने स्वाहा
ॐ खलिने स्वाहा
ॐ कालकटंकटाय स्वाहा 240
ॐ नक्षत्रविग्रहमतये स्वाहा
ॐ गुणवृद्धिलयाय स्वाहा
ॐ अगमाय स्वाहा
ॐ प्रजापतये स्वाहा
ॐ विश्वबाहवे स्वाहा
ॐ विभागाय स्वाहा
ॐ सर्वतोमुखाय स्वाहा
ॐ विमोचनाय स्वाहा

ॐ सर्वगणाय स्वाहा
ॐ हिरण्यकवचोद्भवाय स्वाहा
ॐ मेढ्रजाय स्वाहा
ॐ बलचारिणे स्वाहा
ॐ महीचारिणे स्वाहा
ॐ सृताय स्वाहा
ॐ सर्वतूर्यनिनादिने स्वाहा
ॐ सर्वतोद्यपरिग्रहाय स्वाहा
ॐ व्यालरूपाय स्वाहा
ॐ गुहावासिने स्वाहा
ॐ हंसमालिने स्वाहा
ॐ तुरङ्गविदे स्वाहा 260
ॐ त्रिदशाय स्वाहा
ॐ त्रिपदीभूमये स्वाहा
ॐ सर्वबन्धविमोचकाय स्वाहा
ॐ असुरेन्द्राणांबन्धनाय स्वाहा
ॐ युधिशत्रुविनाशनाय स्वाहा
ॐ सांख्यप्रसादाय स्वाहा
ॐ दुर्वाससे स्वाहा
ॐ र्सवसाधुनिषेविताय स्वाहा
ॐ प्रस्कन्दनाय स्वाहा
ॐ विभागज्ञाय स्वाहा 270
ॐ अतुल्याय स्वाहा
ॐ यज्ञभागविदे स्वाहा
ॐ सर्वावासाय स्वाहा
ॐ सर्वचारिणे स्वाहा
ॐ सुवाससे स्वाहा
ॐ वासवोपमाय स्वाहा
ॐ हैमाय स्वाहा
ॐ हेमकराय स्वाहा
ॐ अज्ञाय स्वाहा
ॐ सर्वाधारिणे स्वाहा 280
ॐ धरोत्तमाय स्वाहा
ॐ लोहिताक्षाय स्वाहा
ॐ महाक्षाय स्वाहा
ॐ विजयाक्षाय स्वाहा
ॐ विशारदाय स्वाहा
ॐ सङ्ग्रहाय स्वाहा
ॐ निग्रहाय स्वाहा
ॐ कर्त्रे स्वाहा
ॐ मृगचर्मनिवासनाय स्वाहा
ॐ मुख्याय स्वाहा 290
ॐ मुकुन्ददेहाय स्वाहा
ॐ काहलये स्वाहा
ॐ सर्वकामदाय स्वाहा
ॐ सर्वकामप्रसादाय स्वाहा
ॐ सुबलाय स्वाहा
ॐ बलरूपधृषे स्वाहा

ॐ सर्वकामवराय स्वाहा
ॐ सर्वतोमुखाय स्वाहा
ॐ वरदाय स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि
ज्योतिरसि धामाऽसि

यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु यो ओषधीषु यो वनस्पतिषु, यो
रूद्रो विश्वाः भुवनः विवेश तस्मै रूद्राय नमो अस्तु देवाः।।

ॐ आकाशनिर्विरूपाय स्वाहा३००

तवैश्वर्य्यं यत्नाद् यद् उपरि विरिंञ्चिर् हरिर्अधः
परिच्छेत्तुं याता–अनलम्–अनल–स्कन्ध वपुषः।
ततो भक्ति श्रद्धा भर गुरु गृणद्भ्यां गिरिश यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किम् अनुवृत्तिर्न फलति; (१०)

अयत्नाद् आसाद्य त्रिभुवनम् अवैर व्यतिकरम्
दशास्यो यत् बाहून् अभृत रण कण्डू पर वशान्
शिरः पद्मश्रेणी रचित चरणाम्भोरुह बलेः
स्थिरायास्–त्वद्–भक्तेः त्रिपुरहर! विस्फूर्जितम् इदम्(११)

अमुष्य त्वत्सेवा समधिगतसारं भुजवनम्
बलात् कैलासेऽपि त्वद् अधिवसतौ विक्रमयतः।
अलभ्या पातालेऽप्यल स चलितांगुष्ठ शिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीत् ध्रुवम् उपचितो मुह्यति खलः (१२)

ॐ निपातिने स्वाहा
ॐ बहुरश्मये स्वाहा
ॐ अवशाय स्वाहा
ॐ स्ववर्चसिने स्वाहा
ॐ खभुवे स्वाहा
ॐ वसुगाय स्वाहा
ॐ रौद्ररूपाय स्वाहा
ॐ महावेगाय स्वाहा 310
ॐ अंशुभ्यः स्वाहा
ॐ मनोवेगाय स्वाहा
ॐ आदित्याय स्वाहा
ॐ निशाचराय स्वाहा

ॐ सर्ववासिने स्वाहा
ॐ श्रियोवासिने स्वाहा
ॐ उपदेशकराय स्वाहा
ॐ हरये स्वाहा
ॐ मुनये स्वाहा
ॐ आत्मने स्वाहा
ॐ निरालोकाय स्वाहा
ॐ सम्भग्नाय स्वाहा 320
ॐ सहस्त्रदाय स्वाहा
ॐ पक्षिणे स्वाहा
ॐ पक्षिरूपाय स्वाहा
ॐ अतिदीप्ताय स्वाहा
ॐ विशांपतये स्वाहा
ॐ उन्मादाय स्वाहा
ॐ मदनाय स्वाहा
ॐ कामाय स्वाहा
ॐ अश्वत्थाय स्वाहा
ॐ अर्थकराय स्वाहा 330
ॐ यशसे स्वाहा
ॐ वामदेवाय स्वाहा
ॐ वामाय स्वाहा
ॐ प्राग्दक्षिणाय स्वाहा
ॐ वामनाय स्वाहा
ॐ सिद्धयोगिने स्वाहा
ॐ महर्षये स्वाहा
ॐ सिद्धार्थाय स्वाहा
ॐ सिद्धसाधकाय स्वाहा
ॐ भिक्षवे स्वाहा 340
ॐ भिक्षुरूपाय स्वाहा
ॐ विपणाय स्वाहा
ॐ मृदवे स्वाहा
ॐ अक्षयाय स्वाहा
ॐ महासेनाय स्वाहा
ॐ विशाखाय स्वाहा
ॐ षष्टिभागाय स्वाहा
ॐ गवाम्पतये स्वाहा
ॐ बज्रहस्ताय स्वाहा
ॐ प्रतिस्तम्भिने स्वाहा 350
ॐ सैन्यस्तभ्भनाय स्वाहा
ॐ गीतनृत्यकराय स्वाहा
ॐ तालाय स्वाहा
ॐ मधवे स्वाहा
ॐ मधुकलोचनाय स्वाहा
ॐ वाचस्पत्याय स्वाहा
ॐ वाजसनाय स्वाहा
ॐ नित्यमाश्रमपूजिताय स्वाहा
ॐ ब्रह्मचारिणे स्वाहा
ॐ लोकचारिणे स्वाहा 360

ॐ सर्वचारिणे स्वाहा
ॐ विचारविदे स्वाहा
ॐ ईशानाय स्वाहा
ॐ ईश्वराय स्वाहा
ॐ कालाय स्वाहा
ॐ निशाचारिणे स्वाहा
ॐ पिनाकधृषे स्वाहा
ॐ निमित्तस्थाय स्वाहा
ॐ निमित्ताय स्वाहा
ॐ शम्भवे स्वाहा 370
ॐ नन्दिकराय स्वाहा
ॐ हरये स्वाहा
ॐ नन्दीश्वराय स्वाहा
ॐ नन्दिने स्वाहा
ॐ नन्दनाय स्वाहा
ॐ नन्दिवर्धनाय स्वाहा
ॐ भगहारिणे स्वाहा
ॐ निहन्त्रे स्वाहा
ॐ कालाय स्वाहा
ॐ ब्रह्मविदांवराय स्वाहा 380

ॐ चतुर्मुखाय स्वाहा
ॐ महालिङ्गाय स्वाहा
ॐ चारूलिङ्गाय स्वाहा
ॐ लिङ्गाध्यक्षाय स्वाहा
ॐ सुराध्यक्षाय स्वाहा
ॐ लोकाध्यक्षाय स्वाहा
ॐ युगावहाय स्वाहा
ॐ बीजाध्यक्षाय स्वाहा
ॐ बीजकर्त्रे स्वाहा
ॐ अध्यात्मानुगतये स्वाहा 390
ॐ बलाय स्वाहा
ॐ इतिहासकराय स्वाहा
ॐ कल्पाय स्वाहा
ॐ गौतमाय स्वाहा
ॐ निशाकराय स्वाहा
ॐ दम्भाय स्वाहा
ॐ अदम्भाय स्वाहा
ॐ वैदम्भाय स्वाहा
ॐ वश्याय स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि
ज्योतिरसि धामाऽसि

यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु यो ओषधीषु यो वनस्पतिषु, यो
रूद्रो विश्वाः भुवनः विवेश तस्मै रूद्राय नमो अस्तु देवाः।।

ॐ वश्यकराय स्वाहा[४००]

यत् ऋद्धिं सुत्राम्णो वरद् परमोच्चैर् अपि सतीम्
अधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयस्त्रिभुवनः।
न तत् चित्रं तस्मिन् वरि वसि तरि त्वच्चरणयोः
न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः (१३)

अकाण्ड ब्रह्माण्ड क्षयचकित देवासुर कृपा
विधेयस्याऽसीद्य स्त्रिनयन विषं संहृतवतः।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोपि श्लाध्यो भुवनभय भंङ्ग व्यसनिनः (१४)

असिद्धार्था नैव क्वचित्–अपि सदेवा सुर नरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखः।
स पश्यन् ईश त्वाम् इतर सुर साधारणम् अभूत्
स्मरः स्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्यः परिभवः (१५)

ॐ कलये स्वाहा
ॐ लोककर्त्रे स्वाहा
ॐ पशुपतये स्वाहा
ॐ महाकर्त्रे स्वाहा
ॐ अनौषधाय स्वाहा
ॐ परमाक्षरमूर्तये स्वाहा
ॐ बलवत्ते स्वाहा
ॐ शक्राय स्वाहा
ॐ नीत्यै स्वाहा
ॐ अनीत्यै स्वाहा 410
ॐ शुद्धात्मने स्वाहा
ॐ शुद्धयमानाय स्वाहा
ॐ मनोगतये स्वाहा
ॐ बहुप्रसादाय स्वाहा
ॐ सुस्वप्नाय स्वाहा
ॐ धर्षणाय स्वाहा
ॐ अमित्रजिते स्वाहा
ॐ वेदकाराय स्वाहा
ॐ मन्त्रकाराय स्वाहा
ॐ विदुषे स्वाहा 420
ॐ समरमर्दनाय स्वाहा
ॐ महामेघनिवासिने स्वाहा
ॐ महाघोराय स्वाहा
ॐ वशीकराय स्वाहा

ॐ अग्निज्वालिने स्वाहा
ॐ महाज्वालिने स्वाहा
ॐ हुतिधूम्राय स्वाहा
ॐ हुताय स्वाहा
ॐ हविषे स्वाहा
ॐ वृषणाय स्वाहा 430
ॐ शङ्कराय स्वाहा
ॐ नित्यंवर्चस्विने स्वाहा
ॐ धूमकेतनाय स्वाहा
ॐ नीलाय स्वाहा
ॐ सर्वाङ्गलुब्धाय स्वाहा
ॐ शोभनाय स्वाहा
ॐ निरवग्रहाय स्वाहा
ॐ स्वस्तिदाय स्वाहा
ॐ स्वस्तिभोगाय स्वाहा
ॐ भागिने स्वाहा 440
ॐ भागकराय स्वाहा
ॐ लघवे स्वाहा
ॐ उत्सङ्गाय स्वाहा
ॐ महाङ्गाय स्वाहा
ॐ महागर्भपरायणाय स्वाहा
ॐ कृष्णवर्णाय स्वाहा
ॐ सुवर्णाय स्वाहा
ॐ सर्वदेहिनामिन्द्रियाय स्वाहा

ॐ महापादाय स्वाहा
ॐ महाहस्ताय स्वाहा 450
ॐ महाकायाय स्वाहा
ॐ महायशसे स्वाहा
ॐ महामूर्ध्ने स्वाहा
ॐ महामात्राय स्वाहा
ॐ महानेत्राय स्वाहा
ॐ महालयाय स्वाहा
ॐ महादन्ताय स्वाहा
ॐ महाकर्णाय स्वाहा
ॐ महामेढ्राय स्वाहा
ॐ महाहनवे स्वाहा 460
ॐ महासेनाय स्वाहा
ॐ महाकम्बवे स्वाहा
ॐ महाग्रीवाय स्वाहा
ॐ श्मशानधृते स्वाहा
ॐ महावक्षसे स्वाहा
ॐ महोरस्काय स्वाहा
ॐ अन्तरात्मने स्वाहा
ॐ मृगालयाय स्वाहा
ॐ महाकोटये स्वाहा
ॐ महान्तकाय स्वाहा 470
ॐ महौष्ठाय स्वाहा
ॐ महानासाय स्वाहा

ॐ लम्बनाय स्वाहा
ॐ लम्बितौष्ठाय स्वाहा
ॐ महामायाय स्वाहा
ॐ पयोनिधये स्वाहा
ॐ महाङ्गाय स्वाहा
ॐ महादंष्ट्राय स्वाहा
ॐ महाजिह्वाय स्वाहा
ॐ महामुखाय स्वाहा 480
ॐ महानखाय स्वाहा
ॐ महारोम्णे स्वाहा
ॐ महाकेशाय स्वाहा
ॐ महाजटाय स्वाहा
ॐ असपत्नाय स्वाहा
ॐ प्रसादाय स्वाहा
ॐ प्रत्ययाय स्वाहा
ॐ गिरिसादनाय स्वाहा
ॐ स्नेहनाय स्वाहा
ॐ अस्नेहनाय स्वाहा 490
ॐ अजिताय स्वाहा
ॐ महामुनये स्वाहा
ॐ वृक्षाकाराय स्वाहा
ॐ वृक्षहेतवे स्वाहा
ॐ अनलाय स्वाहा
ॐ वायुवाहनाय स्वाहा
ॐ मण्डलिने स्वाहा
ॐ मेरुधाम्ने स्वाहा
ॐ वेदवेदाङ्गदर्पघ्ने स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि
ज्योतिरसि धामाऽसि

यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु यो ओषधीषु यो वनस्पतिषु, यो रूद्रो विश्वाः भुवनः विवेश तस्मै रूद्राय नमो अस्तु देवाः।।

ॐ अथर्वशीर्ष्णे स्वाहा ५००

मही पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदम्
पदं विष्णोर् भ्राम्यद् भुज परिघरुग्ण ग्रहगणम्।
मुहर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनि भृत जटा ताडिततटा
जगत् रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता (१६)

वियत् व्यापी तारागण गुणितफेनोद् गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषत लघु दृष्टः शिरसि ते।

जगद् द्वीपाकारं जलधि वलयं तेन कृतमि–
त्यनेनैवोन्नेयं धृत महिम दिव्यं तव वपुः (17)

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिर् अगेन्द्रो धनुरथो
रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथ चरणपाणिः शर इति।
दिधक्षोस्ते कोयं त्रिपुर तृणमाडम्बर विधिः
विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्रः प्रभुधियः (18)

ॐ सामास्याय स्वाहा
ॐ ऋक्सहस्त्रामितेक्षणाय स्वाहा
ॐ यजुःपादभुजाय स्वाहा
ॐ गुह्याय स्वाहा
ॐ प्रकाशाय स्वाहा
ॐ जङ्गमाय स्वाहा
ॐ अमोघार्थाय स्वाहा
ॐ अभिगम्याय स्वाहा
ॐ स्वदर्शनाय स्वाहा
ॐ उपहारप्रियाय स्वाहा 510
ॐ सर्वकनकाय स्वाहा
ॐ काञ्चनच्छवये स्वाहा
ॐ नन्दिने स्वाहा
ॐ नन्दिकराय स्वाहा
ॐ भव्याय स्वाहा
ॐ पुष्करस्थाय स्वाहा
ॐ वृषस्थिराय स्वाहा
ॐ द्वापरत्रासनाय स्वाहा
ॐ आद्याय स्वाहा
ॐ यज्ञाय स्वाहा 520
ॐ यज्ञसमाहिताय स्वाहा
ॐ नक्तञ्चराय स्वाहा
ॐ कालाय स्वाहा
ॐ मकराय स्वाहा
ॐ कालपूजिताय स्वाहा
ॐ सुगणाय स्वाहा
ॐ गणकार्याय स्वाहा
ॐ भूतवाहनसारथये स्वाहा
ॐ भस्मशायिने स्वाहा
ॐ भस्मगोप्त्रे स्वाहा 530
ॐ भस्मरूपाय स्वाहा
ॐ तरवे स्वाहा
ॐ गणाय स्वाहा
ॐ लोकपालाय स्वाहा
ॐ अलोकाय स्वाहा
ॐ महात्मने स्वाहा

ॐ सर्वपूजिताय स्वाहा
ॐ शुक्लाय स्वाहा
ॐ त्रिशुक्लाय स्वाहा
ॐ सम्पन्नाय स्वाहा 540
ॐ शुचये स्वाहा
ॐ भूतनिषेविताय स्वाहा
ॐ आश्रमस्थाय स्वाहा
ॐ कपोतस्थाय स्वाहा
ॐ विश्वकर्मपतये स्वाहा
ॐ वराय स्वाहा
ॐ विशालशाखाय स्वाहा
ॐ ताम्रौष्ठाय स्वाहा
ॐ अम्बुजाक्षाय स्वाहा
ॐ सुनिश्चलाय स्वाहा 550
ॐ कपिलाय स्वाहा
ॐ कपिलकेशाय स्वाहा
ॐ आयुषे स्वाहा
ॐ परात्पराय स्वाहा
ॐ गन्धर्वाय स्वाहा
ॐ अदितये स्वाहा
ॐ ताक्ष्र्याय स्वाहा
ॐ सुविज्ञेयाय स्वाहा
ॐ सुशारदाय स्वाहा
ॐ परश्वधायुधाय स्वाहा 560
ॐ देवाय स्वाहा
ॐ अर्थाकारिणे स्वाहा
ॐ स्वबान्धवाय स्वाहा
ॐ तुम्बवीणाय स्वाहा
ॐ महाकोपाय स्वाहा
ॐ ऊर्ध्वरेतसे स्वाहा
ॐ जलेशयाय स्वाहा
ॐ उग्रवंशकराय स्वाहा
ॐ वंशाय स्वाहा
ॐ वंशनादाय स्वाहा 570
ॐ अनिन्दिताय स्वाहा
ॐ सर्वाङ्गरूपिणे स्वाहा
ॐ मायाविने स्वाहा
ॐ सुहृदाय स्वाहा
ॐ अनिलाय स्वाहा
ॐ अनलाय स्वाहा
ॐ बन्धनाय स्वाहा
ॐ बन्धकर्त्रे स्वाहा
ॐ सुबन्धनविमोचनाय स्वाहा
ॐ सयज्ञारये स्वाहा 580
ॐ सकामारये स्वाहा
ॐ महादंष्ट्रोद्धृतरिपवे स्वाहा
ॐ बहुधानिन्दिताय स्वाहा
ॐ सर्वाय स्वाहा

ॐ शंकराय स्वाहा

ॐ शम्बराय स्वाहा

ॐ अधनाय स्वाहा

ॐ अमरेशाय स्वाहा

ॐ महादेवाय स्वाहा

ॐ विश्वरूपाय स्वाहा 590

ॐ सुरारिघ्ने स्वाहा

ॐ अर्हिबुध्न्याय स्वाहा

ॐ अनिलाभाय स्वाहा

ॐ चिकितानाय स्वाहा

ॐ हविषे स्वाहा

ॐ अजैकपादे स्वाहा

ॐ कापालिने स्वाहा

ॐ त्रिशंकुवे स्वाहा

ॐ अजिताय स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि
ज्योतिरसि धामाऽसि

यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु यो ओषधीषु यो वनस्पतिषु, यो
रूद्रो विश्वाः भुवनः विवेश तस्मै रूद्राय नमो अस्तु देवाः।।

ॐ शिवाय स्वाहा 600

हरिस्ते साहस्त्रं कमलबलिम् आधाय पदयोः
यदेकोने तस्मिन् निजम् उदहरन्नेत्रकमलम्।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिम् असौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुर हर जागर्ति जगताम् (19)

क्रतौ सुप्ते जाग्रत् त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्धवा दृढपरिकरः कर्मसुजनः (20)

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिर्–अधीशस्तनुभृताम्
ऋषीणाम् आर्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः
क्रतुभ्रंशस् त्वत्तः क्रतुफल विधान व्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धा विधुरम् अभिचाराय हि मखाः (21)

ॐ धान्वन्तरये स्वाहा

ॐ धूमकेतवे स्वाहा

ॐ स्कन्दाय स्वाहा

ॐ वैश्रवणोपमाय स्वाहा

ॐ धात्रे स्वाहा

ॐ शक्राय स्वाहा

ॐ विष्णवे स्वाहा

ॐ मित्राय स्वाहा

ॐ त्वष्ट्रे स्वाहा

ॐ ध्रुवाय स्वाहा 610

ॐ वसवे स्वाहा

ॐ प्रभावाय स्वाहा

ॐ सर्वगाय स्वाहा

ॐ वायवे स्वाहा

ॐ अर्यम्णे स्वाहा

ॐ सवित्रे स्वाहा

ॐ रवये स्वाहा

ॐ उषङ्गाय स्वाहा

ॐ विधात्रे स्वाहा

ॐ सन्धात्रे स्वाहा 620

ॐ भूतभावनाय स्वाहा

ॐ अतितीक्ष्णाय स्वाहा

ॐ हराय स्वाहा

ॐ वाग्मिने स्वाहा

ॐ सर्वकामगुणावहाय स्वाहा

ॐ पद्मवक्त्राय स्वाहा

ॐ महावक्त्राय स्वाहा

ॐ चन्द्रवक्त्राय स्वाहा

ॐ मनोरमाय स्वाहा

ॐ बलवते स्वाहा 630

ॐ उपशान्ताय स्वाहा

ॐ पुराणाय स्वाहा

ॐ पुण्यचञ्चवे स्वाहा

ॐ कुरुकर्त्रे स्वाहा

ॐ कुलावासिने स्वाहा

ॐ कुरुभूताय स्वाहा

ॐ गुणौषधाय स्वाहा

ॐ सर्वाशयाय स्वाहा

ॐ दर्भशायिने स्वाहा

ॐ सर्वेषांप्राणिनांपतये स्वाहा640

ॐ देवदेवाय स्वाहा

ॐ सुखासक्ताय स्वाहा

ॐ सदसते स्वाहा

ॐ सर्वरत्नविदे स्वाहा

ॐ कैलासशिखरावासिने स्वाहा

ॐ हिमवद्गिरिसंश्रयाय स्वाहा

ॐ कुलहारिणे स्वाहा

ॐ कुलकर्त्रे स्वाहा

ॐ बहुविद्याय स्वाहा 650
ॐ बहुप्रदाय स्वाहा
ॐ वाणिज्याय स्वाहा
ॐ वर्धकिने स्वाहा
ॐ वृक्षाय स्वाहा
ॐ बकुलाय स्वाहा
ॐ चन्दनच्छदाय स्वाहा
ॐ सारग्रीवाय स्वाहा
ॐ महाजत्रवे स्वाहा
ॐ अलोलाय स्वाहा
ॐ महौषधये स्वाहा660
ॐ सिद्धार्थकारिणे स्वाहा
ॐ सिद्धार्थाय स्वाहा
ॐ छन्दोव्याकरणान्तगाय स्वाहा
ॐ सिंहनादाय स्वाहा
ॐ सिंहदंष्ट्राय स्वाहा
ॐ सिंहगाय स्वाहा
ॐ सिंहवाहनाय स्वाहा
ॐ प्रभावात्मने स्वाहा
ॐ जगत्कालाय स्वाहा
ॐ तालिने स्वाहा 670
ॐ लोकहिताय स्वाहा
ॐ तरवे स्वाहा
ॐ सारङ्गाय स्वाहा
ॐ नवचक्राङ्गाय स्वाहा
ॐ केतुमालिने स्वाहा
ॐ सुभावनाय स्वाहा
ॐ भूतालयाय स्वाहा
ॐ भूतपतये स्वाहा
ॐ अहोरात्रमनिन्दिताय स्वाहा
ॐ सर्वभूतानांवाहित्रे स्वाहा 680
ॐ सर्वभूतानांनिलयाय स्वाहा
ॐ करभुवे स्वाहा
ॐ भवाय स्वाहा
ॐ अमोघाय स्वाहा
ॐ संयुताय स्वाहा
ॐ अश्वाय स्वाहा
ॐ भोजनाय स्वाहा
ॐ प्राणधारणाय स्वाहा
ॐ धृतिमते स्वाहा
ॐ मतिमते स्वाहा 690
ॐ दक्षाय स्वाहा
ॐ सत्कृताय स्वाहा
ॐ युगाधिपाय स्वाहा
ॐ गोपालाय स्वाहा
ॐ गोपतये स्वाहा
ॐ ग्रामाय स्वाहा
ॐ गोचर्मवसनाय स्वाहा

ॐ हरये स्वाहा
ॐ हिरण्यबाहवे स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि
ज्योतिरसि धामाऽसि

यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु यो ओषधीषु यो वनस्पतिषु, यो रूद्रो विश्वाः भुवनः विवेश तस्मै रूद्राय नमो अस्तु देवाः।।

ॐ गुहापालाय स्वाहा ७००

प्रजानाथं नाथ! प्रसभम् अभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद् भूतां रिरमयिषु मृष्यस्य वपुषा
धनुष्पाणेर्यातं दिवम्अपि सपत्रा कृतममुं
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः (२२)

अपूर्वं लावण्यं विवसनतनोस्ते विमृशतां
मुनीनां दाराणां समजनि सकोप व्यतिकरः
यतो भग्ने गुह्येसकृदपि सपर्या विदधतां
ध्रुवं मोक्षोऽश्लीलं किम् अपि पुरुषार्थ प्रसविते (२३)

स्वलावण्या शंसा धृत धनुषमह्नानाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुर मथन! पुष्पायुधम् अपि।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत देहार्ध घटनात्
अवैति त्वाम् अद्धा वत वरद! मुग्धा युवतयः (२४)

ॐ प्रवेशिनांत्रात्रे स्वाहा
ॐ प्रकृष्टारये स्वाहा
ॐ महाहर्षाय स्वाहा
ॐ जितकामाय स्वाहा
ॐ जितेन्द्रयाय स्वाहा
ॐ गान्धाराय स्वाहा
ॐ सुवाससे स्वाहा

ॐ तपसे स्वाहा
ॐ कर्मरतये स्वाहा
ॐ नराय स्वाहा 710
ॐ महागीताय स्वाहा
ॐ महानृत्याय स्वाहा
ॐ अप्सरोगणसेविताय स्वाहा
ॐ महाकेतवे स्वाहा

ॐ धनुषे स्वाहा
ॐ धातवे स्वाहा
ॐ नैकसानुचराय स्वाहा
ॐ चलाय स्वाहा
ॐ आवेदनीयाय स्वाहा
ॐ आदेशाय स्वाहा 720
ॐ सर्वगन्धसुखावहाय स्वाहा
ॐ तोरणाय स्वाहा
ॐ तारणाय स्वाहा
ॐ वाताय स्वाहा
ॐ परिधिपतये स्वाहा
ॐ खेचराय स्वाहा
ॐ संयोगवर्धनाय स्वाहा
ॐ वृद्धाय स्वाहा
ॐ महावृद्धाय स्वाहा
ॐ गुणाधिपाय स्वाहा 730
ॐ नित्यंधर्मसहायाय स्वाहा
ॐ देवासुरपतये स्वाहा
ॐ रतये स्वाहा
ॐ युक्ताय स्वाहा
ॐ युक्तबाहवे स्वाहा
ॐ त्रिदशाय स्वाहा
ॐ सुपर्वणाय स्वाहा
ॐ आषाढाय स्वाहा

ॐ सुषाढाय स्वाहा
ॐ ध्रुवाय स्वाहा 740
ॐ हरिणाय स्वाहा
ॐ हराय स्वाहा
ॐ वपुषे स्वाहा
ॐ आवर्तनाय स्वाहा
ॐ नित्याय स्वाहा
ॐ वसुश्रेष्ठाय स्वाहा
ॐ महारथाय स्वाहा
ॐ शिरोहारिणे स्वाहा
ॐ विमर्षिणे स्वाहा 749
ॐ सर्वलक्षणलक्षिताय स्वाहा
ॐ अक्षराय स्वाहा
ॐ क्षराय स्वाहा
ॐ योगिने स्वाहा
ॐ सर्वयोगिने स्वाहा
ॐ महाबलाय स्वाहा
ॐ समाम्नायाय स्वाहा
ॐ असमाम्नायाय स्वाहा
ॐ तीर्थदेवाय स्वाहा
ॐ महाद्युतये स्वाहा
ॐ निर्जीवाय स्वाहा 760
ॐ जीवनाय स्वाहा
ॐ मन्त्राय स्वाहा

ॐ अनिन्दिताय स्वाहा
ॐ बहुकर्कशाय स्वाहा
ॐ रत्नप्रभूताय स्वाहा
ॐ रक्ताङ्गाय स्वाहा
ॐ महार्णव निनादभृते स्वाहा
ॐ मूलाय स्वाहा
ॐ विशालाय स्वाहा
ॐ अमृताय स्वाहा 770
ॐ व्यक्ताव्यक्ताय स्वाहा
ॐ तपोनिधये स्वाहा
ॐ आरोहणाय स्वाहा
ॐ अधिरोहाय स्वाहा
ॐ शीलधारिणे स्वाहा
ॐ महातपसे स्वाहा
ॐ सेनाकल्पाय स्वाहा
ॐ महाकल्पाय स्वाहा
ॐ योगाय स्वाहा
ॐ युगकराय स्वाहा 780
ॐ गतये स्वाहा
ॐ युगरूपाय स्वाहा
ॐ महारूपाय स्वाहा
ॐ पवनाय स्वाहा
ॐ गहनाय स्वाहा
ॐ अवधाय स्वाहा
ॐ न्यायनिर्वापणाय स्वाहा
ॐ पादाय स्वाहा
ॐ पण्डिताय स्वाहा
ॐ अचलोपमाय स्वाहा 790
ॐ बहुमालाय स्वाहा
ॐ महामालाय स्वाहा
ॐ सुमालाय स्वाहा
ॐ बहुलोचनाय स्वाहा
ॐ विस्ताराय स्वाहा
ॐ लवणाय स्वाहा
ॐ क्रूराय स्वाहा
ॐ कुसुमाय स्वाहा
ॐ सुफलोदयाय स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि
ज्योतिरसि धामाऽसि

यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु यो ओषधीषु यो वनस्पतिषु, यो रूद्रो विश्वाः भुवनः विवेश तस्मै रूद्राय नमो अस्तु देवाः।।

ॐ वृषभाय स्वाहा 800

श्मशानेष्वा क्रीडा स्मरहर! पिशाचाः सहचराः-
चिता भस्मालेपः स्त्रगपि नृकरोटी परिकरः।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवम् अखिलं
तथापि स्मर्तॄणां वरद! परमं मंगलम् असि (25)

मनः प्रत्यक् चित्ते सविधमविधायात्त मरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमद सलिलोत् संङ्गित दृशः।
यदा लोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्ज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत् किलभवान् (26)

त्वम् अर्कस्त्वं सोमस्त्वम्असि पवनस्त्वं हुतवहः
त्वम्आपस्त्वं व्योम त्वम् उधरणिर् आत्मा त्वमिति च।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरम्
न विद्मस्ततत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि (27)

त्रयीं तिस्त्रो वृत्तीस्त्रिभुवनम् अथो त्रीन् अपि सुरान्
अकाराद्यैर्वर्णै स्त्रिभिर्अभि–दधत्तीर्णविकृति।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिर् अवरुन्धानमणुभिः
समस्त व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम् (28)

ॐ वृषभाङ्गाय स्वाहा
ॐ मणिविद्धाय स्वाहा
ॐ जटाधराय स्वाहा
ॐ इन्द्राय स्वाहा
ॐ विसर्गाय स्वाहा
ॐ सुमुखाय स्वाहा
ॐ शराय स्वाहा
ॐ सर्वायुधाय स्वाहा
ॐ सहसे स्वाहा
ॐ निवेदनाय स्वाहा 810
ॐ सुधन्वने स्वाहा
ॐ सुगन्धाढ्याय स्वाहा
ॐ महाधनुषे स्वाहा
ॐ गन्धमालिने स्वाहा
ॐ भग्यवते स्वाहा
ॐ सर्वकर्मणामुत्थानाय स्वाहा
ॐ मन्थानाय स्वाहा
ॐ बहुलाय स्वाहा

ॐ बाहवे स्वाहा
ॐ सकलाय स्वाहा 820
ॐ सर्वलोचनाय स्वाहा
ॐ नराय स्वाहा
ॐ तालाय स्वाहा
ॐ करस्थालिने स्वाहा
ॐ ऊर्ध्वसंहननाय स्वाहा
ॐ वहाय स्वाहा
ॐ वृत्रपतये स्वाहा
ॐ सुविख्याताय स्वाहा
ॐ लोकाय स्वाहा
ॐ सर्वाश्रयाय स्वाहा 830
ॐ क्रमाय स्वाहा
ॐ मुण्डाय स्वाहा
ॐ विरूपाय स्वाहा
ॐ विकृताय स्वाहा
ॐ दण्डिने स्वाहा
ॐ कुण्डिने स्वाहा
ॐ विकुर्वाणाय स्वाहा
ॐ हर्यक्षाय स्वाहा
ॐ ककुभाय स्वाहा
ॐ वज्रिणे स्वाहा 840
ॐ शतजिह्वाय स्वाहा
ॐ सहस्त्रपादे स्वाहा
ॐ सहस्त्रमूर्ध्ने स्वाहा
ॐ देवेन्द्राय स्वाहा
ॐ सर्वभूतमयाय स्वाहा
ॐ गुरवे स्वाहा
ॐ सहस्त्रबाहवे स्वाहा
ॐ सर्वाङ्गाय स्वाहा
ॐ शरण्याय स्वाहा
ॐ सर्वलोककृते स्वाहा 850
ॐ विपन्नाशाय स्वाहा
ॐ मधवे स्वाहा
ॐ मन्त्राय स्वाहा
ॐ कनिष्ठाय स्वाहा
ॐ कृष्णपिङ्गलाय स्वाहा
ॐ ब्रह्मदण्डविनिमात्रे स्वाहा
ॐ शतघ्नीशतपाशभृते स्वाहा
ॐ पद्मगर्भाय स्वाहा
ॐ महागर्भाय स्वाहा
ॐ ब्रह्मगर्भाय स्वाहा 860
ॐ जलोद्भवाय स्वाहा
ॐ गभस्तिने स्वाहा
ॐ ब्रह्मकृते स्वाहा
ॐ ब्रह्मणे स्वाहा
ॐ ब्रह्मविदे स्वाहा
ॐ ब्राह्मणाय स्वाहा

ॐ गतये स्वाहा
ॐ अनन्तरूपाय स्वाहा
ॐ अनेकात्मने स्वाहा
ॐ तिग्मांश्वे स्वाहा 870
ॐ आत्मसम्भवाय स्वाहा
ॐ ऊर्ध्वगात्मने स्वाहा
ॐ पशुपतये स्वाहा
ॐ वातरंहसे स्वाहा
ॐ मनोजवाय स्वाहा
ॐ चन्दनाय स्वाहा
ॐ पद्ममालाग्ग्राय स्वाहा
ॐ अगण्याय स्वाहा
ॐ अन्तरंगाय स्वाहा
ॐ अन्तराय स्वाहा 880
ॐ कर्णिकारमहास्त्रग्विणे स्वाहा
ॐ नीलमौलये स्वाहा
ॐ पिनाकधृगे स्वाहा

ॐ उमापतये स्वाहा
ॐ उमाकान्ताय स्वाहा
ॐ जाह्नवीभृते स्वाहा
ॐ अनम्बराय स्वाहा
ॐ वराय स्वाहा
ॐ वराहाय स्वाहा
ॐ वरदाय स्वाहा 890
ॐ वरेशाय स्वाहा
ॐ सुमहास्तनाय स्वाहा
ॐ महाप्रसादाय स्वाहा
ॐ दमनाय स्वाहा
ॐ शत्रुघ्ने स्वाहा
ॐ श्वेतपिङ्गलाय स्वाहा
ॐ प्रीतात्मने स्वाहा
ॐ परमात्मने स्वाहा
ॐ प्रयतात्मने स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि
ज्योतिरसि धामाऽसि

यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु यो ओषधीषु यो वनस्पतिषु, यो
रूद्रो विश्वाः भुवनः विवेश तस्मै रूद्राय नमो अस्तु देवाः।।

ॐ प्रधानभृते स्वाहा 900

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सह महां
स्तथा भीमेशानाविति यद् अभिधान अष्टकम् इदम्
अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देवः श्रुतिर् अपि
प्रिया यास्मै धाम्ने प्रणिहित नमस्योस्मिभवति (29)

वपुष्प्रादुर्भावात् अनमितम् इदं जन्मनि पुरा
पुरारे नैवाहं क्वचित् अपि भवन्तं प्रणतवान्।
नमन् मुक्तः सम्प्रत्यतनुर् अहम् अग्रेप्यनतिमान्
महेश क्षन्तव्यं तत् इदम् अपराध द्वयमपि (30)

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव! दविष्ठाय च नमः
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर! महिष्ठाय च नमः
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन! यविष्ठाय च नमः
नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति सर्वाय च नमः (31)

बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबल तमसे तत् संहारे हराय नमो नमः
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः (32)

श्री पुष्पदन्त मुख पंङ्कज निर्गतेन
स्तोत्रेण किल्विषहरेण हर प्रियेण
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः (33)

इत्येषा वाङमयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः
अर्पिता तेन मे देवः प्रीयतां च सदाशिवः।

ॐ सर्वपार्श्वसुताय स्वाहा
ॐ ताक्षार्य स्वाहा
ॐ धर्मसाधारणाय स्वाहा
ॐ अचलाय स्वाहा
ॐ चराचरात्मने स्वाहा
ॐ सूक्ष्माय स्वाहा
ॐ अमृताय स्वाहा
ॐ गोवृषेश्वराय स्वाहा
ॐ साध्यर्षये स्वाहा
ॐ कृषये स्वाहा 910

ॐ आदित्याय स्वाहा
ॐ विवस्वते स्वाहा
ॐ सवित्रे स्वाहा
ॐ अमृताय स्वाहा
ॐ व्यासाय स्वाहा
ॐ सर्वस्यसंक्षेपाय स्वाहा
ॐ सर्वस्यविस्ताराय स्वाहा
ॐ पर्ययाय स्वाहा
ॐ अनराय स्वाहा
ॐ ऋतुभ्यः स्वाहा 920
ॐ संवत्सराय स्वाहा
ॐ मासेभ्यः स्वाहा
ॐ पक्षाभ्यां स्वाहा
ॐ सांख्यसमापनाय स्वाहा
ॐ कलाभ्यः स्वाहा
ॐ काष्ठाभ्यः स्वाहा
ॐ लवेभ्यः स्वाहा
ॐ मात्राभ्यः स्वाहा
ॐ मुहूर्ताय स्वाहा
ॐ अह्ने स्वाहा 930
ॐ क्षणदायै स्वाहा
ॐ क्षणेभ्यः स्वाहा
ॐ विश्वक्षेत्राय स्वाहा
ॐ प्रजाबीजाय स्वाहा

ॐ लिङ्गाय स्वाहा
ॐ आद्याय स्वाहा
ॐ निर्गमाय स्वाहा
ॐ सते स्वाहा
ॐ असते स्वाहा
ॐ व्यक्ताय स्वाहा 940
ॐ अव्यक्ताय स्वाहा
ॐ पित्रे स्वाहा
ॐ मात्रे स्वाहा
ॐ पितामहाय स्वाहा
ॐ स्वर्गद्वाराय स्वाहा
ॐ प्रजाद्वाराय स्वाहा
ॐ मोक्षद्वाराय स्वाहा
ॐ त्रिविष्टपाय स्वाहा
ॐ निर्वाणाय स्वाहा
ॐ ह्लादनाय स्वाहा 950
ॐ ब्रह्मलोकाय स्वाहा
ॐ परागतये स्वाहा
ॐ देवासुरविनिर्मात्रे स्वाहा
ॐ देवासुरपरायणाय स्वाहा
ॐ देवासुरगुरवे स्वाहा
ॐ देवाय स्वाहा
ॐ देवासुरनमस्कृताय स्वाहा
ॐ देवासुरमहामात्राय स्वाहा

ॐ देवासुरमहाश्रयाय स्वाहा
ॐ देवासुरमहाध्यक्षाय स्वाहा
ॐ देवासुरगणाग्रण्ये स्वाहा
ॐ देवातिदेवाय स्वाहा
ॐ देवर्षये स्वाहा
ॐ देवासुरसुपूजिताय स्वाहा
ॐ देवासुरेश्वराय स्वाहा
ॐ विश्वस्मै स्वाहा
ॐ देवासुरमहेश्वराय स्वाहा
ॐ सर्वदेवमयाय स्वाहा
ॐ अचिन्त्याय स्वाहा
ॐ देवात्मने स्वाहा 970
ॐ अर्थसाधकाय स्वाहा
ॐ उद्भिदे स्वाहा
ॐ त्रिविक्रमाय स्वाहा
ॐ वैद्याय स्वाहा
ॐ विरजसे स्वाहा
ॐ विरजोम्बराय स्वाहा
ॐ ईड्याय स्वाहा
ॐ हस्तीश्वराय स्वाहा
ॐ व्याघ्राय स्वाहा
ॐ देवसिंहाय स्वाहा 980
ॐ नरर्षभाय स्वाहा
ॐ विबुधाग्रचरश्रेष्ठाय स्वाहा
ॐ सर्वदेवोत्तमोत्तमाय स्वाहा
ॐ गुहाकान्ताय स्वाहा
ॐ अतिनिसर्गाय स्वाहा
ॐ स्वनाम्नासर्वपावनाय स्वाहा
ॐ शृङ्गिणे स्वाहा
ॐ शृङ्गिप्रियाय स्वाहा
ॐ बभ्रवे स्वाहा
ॐ राजराजातिपूजिताय स्वाहा
ॐ अभिरामाय स्वाहा
ॐ सुरगणातिरामाय स्वाहा
ॐ सर्वसाधनाय स्वाहा
ॐ ललाटाक्षाय स्वाहा
ॐ विश्वदेवाय स्वाहा
ॐ सर्वाधिब्रह्मवर्चस्विने स्वाहा
ॐ स्थावराणांपतये स्वाहा
ॐ नियतेन्द्रियवर्धनाय स्वाहा
ॐ सिद्धार्थाय स्वाहा
ॐ सर्वभूतार्थाय स्वाहा१०००
ॐ निमतव्रत संस्थिताय स्वाहा
ॐ व्रतादये स्वाहा
ॐ परंब्रह्मे स्वाहा
ॐ भक्तानां परमागतये स्वाहा
ॐ सुशान्तदीप्त तेजस्विने स्वाहा
ॐ श्रीमते स्वाहा
ॐ श्री वर्धनाय स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि धामाऽसि

यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु यो ओषधीषु यो वनस्पतिषु, यो
रूद्रो विश्वाः भुवनः विवेश तस्मै रूद्राय नमो अस्तु देवाः।।

ॐ जगते स्वाहा

इति महाभारते शान्तिपर्वणि शिवसहस्रनामस्तुतिः शिवार्पणम-अस्तु।

शिवपंचाक्षर स्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय, भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
देवाधिदेवाय दिगम्बराय, तस्मै नकाराय नमः शिवाय।।

मातङ्गचरमाम्बरभूषणाय, समस्तगीर्वाणगणार्चिताय।
त्रैलोक्यनाथाय पुरान्तकाय, तस्मै मकाराय नमः शिवाय।।

शिवामुखाम्भोज विकासनाय, दक्षस्य यज्ञस्य विनाशकाय।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय, तस्मै शिकाराय नमः शिवाय।।

वशिष्ठकुम्भोत्भव–गौतमादि, मुनीन्द्र–वन्द्याय गिरीश्वराय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय, तस्मै वकाराय नमः शिवाय।।

यज्ञस्वरूपाय जटाधराय, पिनाकहस्ताय सनातनाय,
नित्याय शुद्धाय निरञजनाय, तस्मै यकाराय नमः शिवाय।।

शिवषडाक्षर स्तोत्रम

ॐ कारं बिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ओंकारं त्वं नमाम्यहम्।।1।।

न जातो न मृतो यश्च क्षयो यस्य न विद्यते,
नमन्ति देवताः सर्वे नकारं त्वं नमाम्यहम्।।2।।

महादेवं महावक्रं महाध्यानपरायणम्,
महापापहरं देवं मकारं त्वं नमाम्यहम्।।3।।

शिवात्परतरो नास्ति शिवशास्त्रेषु निश्चयः
शमन्ति सर्वपापानि शिकारं त्वं नमाम्यहम्।।4।।

वाहनं वृषभो यस्य वासुकिः कण्ठ भूषणम्,
वामे शक्तिधरं देवं वकारं त्वं नमाम्यहम्॥5॥

यत्र तत्र स्थितो देवः सर्वव्यापीमहेश्वर,
यो गुरुः सर्वदेवानां यकारं त्वं नमाम्यहम्॥6॥

ॐ कारं कर्मचक्रेषु नकारं नाभिमण्डले,
मकारं हृदयेदेशे शकारं कण्ठ भूषणम्॥7॥

वकारं वक्त्रमध्ये तु यकारं ब्रह्मरन्ध्रगम्,
एवं षडक्षरस्तोत्रं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥

भैरव–स्तुतिः

व्याप्त-चराचर-भाव-विशेषम्,
चिन्मयमेकं अनन्तं अनादिम्।
भैरवनाथं अनाथशरण्यम्
तन्मयचित्ततया हृदि वंदे॥1॥

त्वन्मयमेतदशेषं इदानीं
भाति मम त्वद् अनुग्रह शक्त्या।
त्वं च महेश! सदैव ममात्मा
स्वात्ममयं मम तेन समस्तम्॥2॥

स्वात्मनि विश्वगते त्वयि नाथे,
तेन संसृतिभीतिः कथाऽस्ति।
सत्स्वपि दुर्धरदुःखविमोह,
त्रासविधायिषु कर्मगणेषु॥3॥

अन्तक मां प्रति मा दृशमेनां,
क्रोध करालतमां विदधीहि।
शंकर सेवन चिन्तन धीरो,
भीषण भैरव शक्ति मयोऽस्मि॥4॥

इत्थम् उपोढ भवन्मय संवित्,
दीधित-दारित-भूरितमिस्त्रः।
मृत्यु-यमान्तक-कर्म-पिशाचै,
नाथ! नमोऽस्तु न जातु विभेमि॥5॥

प्रोदित–सत्य–विबोध–मरीचि,
प्रोक्षित–विश्व पदार्थ सतत्त्वः।
भाव–परामृत–निर्भरपूर्णे
त्वय्यहमात्मनि निर्वृतिमेमि॥6॥

मनस गोचरम् एति यदैव,
क्लेश दशाऽ तनु ताप विधात्री।
नाथ! तदैव मम त्वत् अभेद,
स्तोत्र परामृत वृष्टिर् उदेति॥7॥

शंकर! सत्यमिदं व्रत दान,
स्नानतपो भव ताप विनाशि।
तावक शास्त्र परामृत चिन्ता,
स्यन्दति चेतसि निर्वृति धारा॥8॥

नृत्यति गायति हृष्यति गाढं,
संविद्–इंय मम भैरवनाथ।
त्वां प्रियमाप्य सुदर्शनम् एकं,
दुर्लभम् अन्यजनैः समयज्ञम्॥9॥

वसु–रस–पौषे कृष्ण–दशम्यां,
अभिनवगुप्तः स्तवमिदमकरोत्।
येन विभुर्भव मरु–सन्तापं,
शमयति झटिति जनस्य दयालुः॥10॥

हरिरेव जगज्जयदेव हरिं
हरितो जगतो नहि भिन्नमणुः
इति यस्य मतिः परमार्थगतिः
स नरो भवसागरमुत्तरति॥11॥

आदावन्ते चिद्रसरूपं
मध्येचिद्रसबुद्धद्रूपं
भातं भातं भारूपं स्यात्
नो भातं चेन्नितरांन स्यात्॥12॥

श्री रुद्राष्टकम्

नमामीशमी-निर्वाण-रूपं,
विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपम्।
अजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं,
चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम्॥

निराकारमोङ्कार मूलं तुरीयं
गिराज्ञानगोतीतमीशं गिरीशम्।
करालं महाकालकालं कृपालं,
गुणागारसंसारपारं नतोऽहम्॥

तुषाराद्रिसङ्काशगौरं गभीरं,
मनोभूतकोटिप्रभाश्रीशरीरम्।
स्फुरन् मौलिकल्लोलिनी चारुगंगा,
लसत् भालबालेन्दुः कण्ठे भुजंगा॥

चलत् कुण्डलं भ्रूसुनेत्रं विशालं
प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम्।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं
प्रियं शङ्करं सर्वनाथं भजामि॥

प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं,
अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम्।
त्रयः शूलनिर्मूलनं शूलपाणिं,
भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम्॥

कलातीतकल्याणकल्पान्तकारी,
सदा सज्जनानन्ददातापुरारिः।

चिदानन्दसन्दोहमोहापहारी,
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारिः॥

न यावत् उमानाथ पादारविन्दं,
भजन्तीह लोके परे वा नराणाम्।
न तावत सुखं शान्तिसन्तापनाशं
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं॥

न जानामि योगं जपं नैव पूजां,
नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यम्।
जराजन्मदुखौघतातप्यमानं,
प्रभो पाहिशापात नमामीश शम्भो॥

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं, विप्रेण हरतोषये।
ये पठन्ति नराः भक्त्या, तेषां शम्भुः प्रसीदति॥

श्री शिवाष्टकम्

प्रभुं प्राणनाथं विभुं विश्वनाथं
जगन्नाथनाथं सदानन्दभाजाम्।
भवद्भव्यभूतेश्वरं भूतनाथं।
शिवं शंकर शम्भुमीशानमीडे।
गले रुण्डमालं तनौ सर्पजालं
महाकालकालम् गणेशाधिपालम्
जटाजूट भन्गोतरन्गः विशालम्।
शिवं शंकर शम्भुमीशानमीडे॥
मुदामाकरम् मण्डनं मण्डयन्तं
महामण्डलं भस्मभूषाधरम् तम।
अनादिं ह्यपारम् महामोहमारं।
शिवं शँकरं शम्भुमीशानमीडे॥

तटाधोनिवासे महाटाटहासं
महापापनाशम् सदा सुप्रकाशम्।
गिरीशमं गणेशं सुरेशं महेशम्।

शिवं शकंर शम्भुमीशानमीडे।।
गिरेन्द्रात्मजासंग प्रहीतार्ध देहम।
गिरौ संस्थितं सर्वदासन्नगेहम्
परमब्रह्म ब्रह्मादिभर्वन्ध्यमानं।
शिव शँकरं शम्भुमीशानमीडे।।

कपालम् त्रिशूलं कराम्याम् दधानं
पदाम्भोजनम्राय कामम् ददानम्
बलीवर्दयानं सराणां प्रधानम्।
शिव शँकरं शम्भुमीशानमीडे।।

शरच्चन्द्रगात्रम् गुणानन्दपात्रम्।
त्रिनेत्रं पवित्रं धनेशस्य मित्रम्।
अपर्णा कलत्रं चरित्रं विचित्रम्।
शिवं शँकरं शम्भुमीशानमीडे।।

हरं सर्पहारं चित्ताभूविहारम्
भवं वेदसारं सदा निर्विकारम्
श्मशाने वसन्तम मनोजं दंहतं।
शिव शँकरं शम्भुमीशानमीडे।।

स्तवं यः प्रभाते नरः शूल पाणि,
पठेत्सर्वदा भर्गभावानुरक्तः,
स-पुत्रम् धनं धान्य मित्रं कलत्रं
विचित्रं समासाद्य मोक्षं प्रयान्ति।
शिवं शँकरं शम्भुमीशानमीडे।।

शिवं शँकरं शम्भुमीशानमीडे।।

भगस्य हृदयं लिङ्ग, लिङ्गस्य हृदयं भगः
तस्मै ते भगलिङ्गाय उमा रूद्राय वै नमः

स्त्रुव पर श्रीफल, कन्द रखकर यर्वातल अंजलि जटाधारी
को भी हाथ में लेकर पढ़ें.....

पुनः तेजोऽसि शुक्रमऽसि ज्योतिरऽसि धामाऽसि–

यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु यो ओषधीषु यो वनस्पतिषु, यो रूद्रो विश्वाः भुवनः विवेश तस्मै रूद्राय नमो अस्तु देवाः।।

–स्वाहा–

तर्पणः–

अनेन-शिवसहस्त्र-नाम-स्वाहाकारहोमेन भगवान् भवः देवः शर्वः देव, रुद्रः देवः, पशुपतिदेवः, उग्रः देवः, भीमः देवः महादेवः, ईशानः देवः, ईश्वरः देवः, उमासहितः शिवः, पार्वती सहितः परमेश्वरः प्रीयतां प्रीतोस्तु।

देवी नामावली

अथ श्रीभवानीसहस्त्रनामस्तुतिः।

ॐ नमो भवान्यै।

फूल डालते रहो—

अरिशंख कृपाणखेटबाणान्
सुधनुः शूलकतर्जनीं दधाना।
भवताम् महिषोत्तमाङ्गसंस्था
नवदूर्वासदृशी श्रियेऽस्तु दुर्गा॥

ॐ शङ्खत्रिशूलशरचापकरां त्रिनेत्रां
तिग्मेतरांशुकलया विकसत्किरीटाम्।
सिंहस्थितामसुरसिद्धनुतां च दुर्गां
दूर्वानिभां दुरितदुःखहरां नमामि॥

अकुलकुलपतन्ती चक्रमध्ये स्फुरन्ती।
मधुरमधुपिबन्ती कण्टकान्भक्षयन्ती॥

दुरितमपहरन्ती साधकान्पोषयन्ती।
जयति जगति देवी सुन्दरी क्रीडयन्ती॥

चतुर्भुजामेकवक्त्रां पूर्णेन्दुवदनप्रभाम्।
खड्गशक्तिधरां देवीं वरदाभयपाणिकाम्॥

प्रेतसंस्थां महारौद्रीं भुजगेनोपवीतिनीम्।
भवानीं कालसंहार बद्धमुद्राविभूषिताम्॥

जगत्स्थितिकरीं ब्रह्मविष्णुरुद्रादिभिः सुरैः।
स्तुतां तां परमेशानीं नौम्यहं विघ्नहारिणीम्॥

ॐ नमो भवान्यै।

कैलासशिखरे रम्ये देवदेवं महेश्वरम्।
ध्यानोपरतमासीनं प्रसन्नमुखपङ्कजम्॥

सुरासुरशिरोरत्नरञ्जिताङ्घ्रियुगं प्रभुम्।
प्रणम्य शिरसा नन्दी बद्धाञ्जलिरभाषत॥

श्री नन्दिकेश्वर उवाच।

देवदेव जगन्नाथ संशयोस्ति महान्मम।
रहीस्यमेकमिच्छामि प्रष्टुं त्वां भक्तवत्सलम्॥

देवतायास्त्वया कस्याः स्तोत्रमेतद्दिवानिशम्।
पठ्यतेऽविरतं नाथ! त्वत्तः किमपरं परम्॥

इति पृष्टस्तदा देवो नन्दिकेन जगद्गुरुः।
प्रोवाच भगवानेको विकसन्नेत्रपङ्कजः॥

श्रीभगवानुवाच।

साधु साधु गणश्रेष्ठ पृष्टवानसि मां च यत्।
स्कन्दस्यापि च यद्गोप्यं रहस्यम् कथयामि तत्॥

पुरा कल्पक्षये लोकान्सिसृक्षुर्मूढचेतसा।
गुणत्रयमयी शक्तिर्मूलप्रकृतिसंज्ञिता॥

तस्यामहं समुत्पन्नस्तत्त्वैस्तैर्महदादिभिः।
चेतनेति ततः शक्तिर्मां काप्यालिङ्ग्य तस्थुषी॥

हेतुः संकल्पजालस्य मनोधिष्ठायिनी शुभा।
इच्छेति परमा शक्तिरुन्मिमील ततः परम्॥

ततो वागिति विख्याता शक्तिः शब्दमयी परा।
प्रादुरासीज्जगन्माता वेदमाता सरस्वती॥

ब्राह्मी च वैष्णवी रौद्री कौमारो पार्वती शिवा।
सिद्धिदा बुद्धिदा शान्ता सर्वमङ्गलदायिनी॥

तयैतत्सृज्यते विश्वमनाधारं च धायते।
तयैतत्पाल्यते सर्वं तस्यामेव प्रलीयते॥

अर्चिता प्रणता ध्याता सर्वभावविनिश्चिता।
आराधिता स्तुता सैव सर्वसिद्धिप्रदायिनी॥

तस्या अनुग्रहादेव तामेव स्तुतवानहम्।
सहस्त्रैर्नामभिर्दिव्यै स्त्रैलोक्यप्राणिपूजितैः॥

स्तवेनानेन सन्तुष्टा मामेव प्रविवेश सा।
तदारभ्य मया प्राप्तमैश्वर्यं पदमुत्तमम्॥

तत्प्रभावान्मया सृष्टं जगदेतच्चराचरम्।
ससुरासुरगन्धर्वयक्षराक्षसमानवम्॥

सपन्नगं ससमुद्रं सशैलवनकाननम्।
सराशिग्रहनक्षत्रं पंचभूतगुणान्वितम्॥

नन्दिन्नामसहस्त्रेण स्तवेनानेन सर्वदा।
स्तुवे परापरां शक्तिं ममानुग्रहकारिणीम्॥

इत्युक्तोपरतं देवं चराचरगुरुं विभुम्।
प्रणम्य शिरसा नन्दी प्रोवाच परमेश्रम्॥

श्री नन्दिकेश्वर उवाच।

भगवन्देवदेवेश लोकनाथ जगत्पते।
भक्तोस्मि तव दासोस्मि प्रसादः क्रियतां मयि॥

देव्याः स्तवमिमं पुण्यं दुर्लभं यत्सुरैरपि।
श्रोतुमिच्छाम्यहं देव प्रभवामपि चास्य तु॥

श्रीभगवानुवाच।

शृणु नन्दिन्महाभाग स्तवराजमिमं शुभम्।
सहस्त्रैर्नामभिर्दिव्यैः सिद्धिदं सुखमोक्षदम्॥
शुचिभिः प्रातरुत्थाय पठितव्यं समाहितैः।
त्रिकालं श्रद्धया युक्तैर्नातः परतरः स्तवः॥

विनियोग करें –

अस्य श्रीभवानीसहस्त्रनामस्तवराजस्य, महादेवऋषिः अनुष्टुप्छन्दः, आद्या शक्तिः, भगवती भवानी देवता, ह्रीं बीजं श्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जित पापनिवारणार्थं श्री दुर्गा/शारिका/महाराज्ञा...देवी प्रसन्नार्थं शुभफल प्राप्त्यर्थं पाठे/होमे विनियोगः।

। अथ करन्यासः ।

ॐ एकवीरायै अङ्गुष्ठाभ्यां नमः,
ॐ महामायायै तर्जनीभ्यां नमः,
ॐ पार्वत्यै मध्यमाभ्यां नमः,
ॐ गिरिशप्रियायै अनामिकाभ्यां नमः,
ॐ गौर्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः,
ॐ करालिन्यै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः स्वाहा

। अथ षडङ्गन्यासः ।

ॐ एकवीरायै हृदयाय नमः,
ॐ महामायायै शिरसे स्वाहा,
ॐ पार्वत्यै शिखायै वषट्,
ॐ गिरीशप्रियायै कवचायहुम्,
ॐ गौर्यै नेत्राभ्यां वौषट्,
ॐ करालिन्यै अस्त्रायफट्।

प्राणायामः।

। अथ ध्यानम् ।

ॐ बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्।
पाशाङ्कुशशरांश्चापं धारयन्तीं शिवां भजे॥१॥
ॐ अर्धेन्दुमौलिममलाममराभिवन्द्याम्
अम्भोजपाशसृणिरक्तकपालहस्ताम्।

रक्ताङ्गरागरशनाभरणां त्रिनेत्राम्
ध्याये शिवस्य वनितां मधुविह्वलाङ्गीम्॥२॥

अग्नहोत्री व घी डालें–

ॐ बीजत्रयायै विद्महे, तत्प्रधानायैधीमहि,
तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् स्वाहा॥३॥

। अथ मूलम् ।

ॐ श्रीं श्रीं ॐ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं भवानि हुं फट् स्वाहा॥

॥ श्रीभवानीसहस्त्रनामस्वाहाकारः ॥

आहुतियाँ डालें–

ॐ महाविद्यायै स्वाहा
ॐ जगन्मात्रे स्वाहा
ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा
ॐ शिवप्रियायै स्वाहा
ॐ विष्णुमायायै स्वाहा
ॐ शुभायै स्वाहा
ॐ शान्तायै स्वाहा
ॐ सिद्धायै स्वाहा
ॐ सिद्धसरस्वत्यै स्वाहा
ॐ क्षमायै स्वाहा 10
ॐ कान्त्यै स्वाहा
ॐ प्रभायै स्वाहा
ॐ ज्योत्स्नायै स्वाहा
ॐ पार्वत्यै स्वाहा
ॐ सर्वमङ्गलायै स्वाहा
ॐ हिङ्गुलायै स्वाहा
ॐ चण्डिकायै स्वाहा
ॐ दान्तायै स्वाहा
ॐ पद्मायै स्वाहा
ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा 20
ॐ हरिप्रियायै स्वाहा
ॐ त्रिपुरायै स्वाहा
ॐ नन्दिन्यै स्वाहा
ॐ नन्दायै स्वाहा
ॐ सुनन्दायै स्वाहा
ॐ सुरवन्दितायै स्वाहा
ॐ यज्ञविद्यायै स्वाहा
ॐ महामायायै स्वाहा
ॐ वेदमात्रे स्वाहा
ॐ सुधायै स्वाहा
ॐ धृत्यै स्वाहा
ॐ प्रीतयै स्वाहा

ॐ प्रथायै स्वाहा
ॐ प्रसिद्धायै स्वाहा
ॐ मृडान्यै स्वाहा
ॐ विन्ध्यवासिन्यै स्वाहा
ॐ सिद्धविद्यायै स्वाहा
ॐ महाशक्त्यै स्वाहा
ॐ पृथ्व्यै स्वाहा
ॐ नारदसेवितायै स्वाहा
ॐ पुरहूतप्रियायै स्वाहा
ॐ कान्तायै स्वाहा
ॐ कामिन्यै स्वाहा
ॐ पद्मलोचनायै स्वाहा
ॐ प्रह्लादिन्यै स्वाहा
ॐ महामात्रे स्वाहा
ॐ दुर्गायै स्वाहा
ॐ दुर्गतिनाशिन्यै स्वाहा
ॐ ज्वालामुख्यै स्वाहा
ॐ सुगोत्रायै स्वाहा
ॐ ज्योतिषे स्वाहा
ॐ कुमुदहासिन्यै स्वाहा
ॐ दुर्गमायै स्वाहा
ॐ दुर्लभायै स्वाहा
ॐ विद्यायै स्वाहा
ॐ स्वर्गतये स्वाहा
ॐ पुरवासिन्यै स्वाहा
ॐ अपर्णायै स्वाहा
ॐ शाम्बरीमायायै स्वाहा
ॐ मदिरायै स्वाहा
ॐ मृदुहासिन्यै स्वाहा
ॐ कुलवागीश्वर्यै स्वाहा
ॐ नित्यायै स्वाहा
ॐ नित्यक्लिन्नायै स्वाहा
ॐ कृशोदर्यै स्वाहा
ॐ कामेश्वर्यै स्वाहा
ॐ नीलायै स्वाहा
ॐ भीरुण्डायै स्वाहा
ॐ वह्निवासिन्यै स्वाहा
ॐ लम्बोदर्यै स्वाहा
ॐ महाकाल्यै स्वाहा
ॐ विद्याविद्येश्वर्यै स्वाहा
ॐ नरेश्वर्यै स्वाहा
ॐ सत्यायै स्वाहा
ॐ सर्वसौभाग्यवर्धिन्यै स्वाहा
ॐ सङ्कर्षण्यै स्वाहा
ॐ नारसिंह्यै स्वाहा
ॐ वैष्णव्यै स्वाहा
ॐ महोदर्यै स्वाहा
ॐ कात्यायन्यै स्वाहा 80
ॐ चम्पायै स्वाहा
ॐ सर्वसम्पत्तिकारिण्यै स्वाहा

ॐ नारायण्यै स्वाहा

ॐ महानिद्रायै स्वाहा

ॐ योगनिद्रायै स्वाहा

ॐ प्रभावत्यै स्वाहा

ॐ प्रज्ञापारमितायै स्वाहा

ॐ प्रज्ञायै स्वाहा

ॐ तारायै स्वाहा

ॐ मधुमत्यै स्वाहा 90

ॐ मधवे स्वाहा

ॐ क्षीरार्णवसुधाहारायै स्वाहा

ॐ कालिकायै स्वाहा

ॐ सिंहवाहिन्यै स्वाहा

ॐ ॐकारायै स्वाहा

ॐ वसुधाकारायै स्वाहा

ॐ चेतनायै स्वाहा

ॐ कोपनाकृत्यै स्वाहा

ॐ अर्धबिन्दुधरायै स्वाहा 99

तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि धामाऽसि

जातवेदसे सुनवाम् सोममऽरातीयतो निदहाति वेदः। स नः
पर्षदऽतिदुगणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः।

ॐ धारायै स्वाहा॥100॥

फूल डालें–

या देवी शिवकेशवादिजननी या वै जगद्रूपिणी
या ब्रह्मादिपिपीलिकान्तजनतानन्दैकसंदायिनी।
या पञ्चप्रणमन्निलिम्पनयनी या चित्कलामालिनी
सा पायात्परदेवता भगवती राजराजेश्वरी।

ॐ विश्वमात्रे स्वाहा

ॐ कलावत्यै स्वाहा

ॐ पद्मावत्यै स्वाहा

ॐ सुवस्त्रायै स्वाहा

ॐ प्रबुद्धायै स्वाहा

ॐ सरस्वत्यै स्वाहा

ॐ कुण्डासनायै स्वाहा

ॐ जगद्धात्र्यै स्वाहा

ॐ बुद्धमात्रे स्वाहा

ॐ जिनेश्वर्यै स्वाहा

ॐ जिनमात्रे स्वाहा

ॐ जिनेन्द्रायै स्वाहा

ॐ शारदायै स्वाहा

ॐ हंसवाहनायै स्वाहा

ॐ राज्यलक्ष्म्यै स्वाहा

ॐ वषट्कारायै स्वाहा

ॐ सुधाकारायै स्वाहा

ॐ सुधात्मिकायै स्वाहा

ॐ राजनीत्यै स्वाहा

ॐ त्रय्यै स्वाहा

ॐ वार्तायै स्वाहा

ॐ दण्डनीतये स्वाहा

ॐ क्रियावत्यै स्वाहा

ॐ सद्भूतये स्वाहा

ॐ तारिण्यै स्वाहा

ॐ श्रद्धायै स्वाहा

ॐ सद्गतये स्वाहा

ॐ सत्परायणायै स्वाहा

ॐ सिन्धवे स्वाहा

ॐ मन्दाकिन्यै

ॐ गङ्गायै स्वाहा

ॐ यमुनायै स्वाहा

ॐ सरस्वत्यै स्वाहा

ॐ गोदावर्यै स्वाहा

ॐ विपाशायै स्वाहा

ॐ कावेर्यै स्वाहा

ॐ शतद्रुकायै स्वाहा

ॐ सरयवे स्वाहा

ॐ चन्द्रभागायै स्वाहा

ॐ कौशिक्यै स्वाहा 140

ॐ गण्डक्यै स्वाहा

ॐ शुचये स्वाहा

ॐ नर्मदायै स्वाहा

ॐ कर्मनाशायै स्वाहा

ॐ चर्मण्वत्यै स्वाहा

ॐ देविकायै स्वाहा

ॐ वेत्रवत्यै स्वाहा

ॐ वितस्तायै स्वाहा

ॐ वरदायै स्वाहा

ॐ नरवाहनायै स्वाहा 150

ॐ सत्यै स्वाहा

ॐ पतिव्रतायै स्वाहा

ॐ साध्व्यै स्वाहा

ॐ सुचक्षुषे स्वाहा

ॐ कुण्डवासिन्यै स्वाहा

ॐ एकचक्षुषे स्वाहा

ॐ सहस्राक्ष्यै स्वाहा

ॐ सुश्रोण्यैस्वाहा

ॐ भगमालिन्यै स्वाहा

ॐ सेनायै स्वाहा

ॐ श्रेणये स्वाहा

ॐ पताकायै स्वाहा

ॐ सुव्यूहायै स्वाहा

ॐ युद्धकांक्षिन्यै स्वाहा

ॐ पताकिन्यै स्वाहा

ॐ दयारम्भायै स्वाहा

ॐ विपञ्चीपञ्चमप्रियायै स्वाहा

ॐ परापरकलाकान्तायै स्वाहा

ॐ त्रिशक्तये स्वाहा

ॐ मोक्षदायिन्यै स्वाहा 170

ॐ ऐन्द्र्यै स्वाहा

ॐ माहेश्वर्यै स्वाहा

ॐ ब्राह्म्यै स्वाहा

ॐ कौमार्यै स्वाहा

ॐ कुलवासिन्यै स्वाहा

ॐ इच्छायै स्वाहा

ॐ भगवत्यै स्वाहा

ॐ शक्तये स्वाहा

ॐ कामधेन्वे स्वाहा

ॐ कृपावत्यै स्वाहा 180

ॐ वज्रयुधायै स्वाहा

ॐ वज्रहस्तायै स्वाहा

ॐ चण्ड्यै स्वाहा

ॐ चण्डपराक्रमायै स्वाहा

ॐ गौर्यै स्वाहा

ॐ सुवर्णवर्णायै स्वाहा

ॐ स्थितिसंहारकारिण्यै स्वाहा

ॐ एकायै स्वाहा

ॐ अनेकायै स्वाहा

ॐ महेज्यायै स्वाहा 190

ॐ शतबाहवे स्वाहा

ॐ महाभुजायै स्वाहा

ॐ भुजङ्गभूषणायै स्वाहा

ॐ भूषायै स्वाहा

ॐ षट्चक्रक्रमवासिन्यै स्वाहा

ॐ षट्चक्रभेदिन्यै स्वाहा

ॐ श्यामायै स्वाहा

ॐ कायस्थायै स्वाहा

ॐ कायवर्जितायै स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि धामाऽसि

जातवेदसे सुनवाम सोममऽरातीयतो निदहाति वेदः। स नः
पर्षदऽतिदुर्गाणि विश्वा नावेव सिंधुं दुरितात्यग्निः।

ॐ सुस्मितायै स्वाहा॥२००॥

बीजैः सप्तभिरुज्ज्वलाकृतिरसौ या सप्तसप्तिद्युतिः
सप्तर्षिप्रणताङ्घ्रिपङ्कजयुगा या सप्तलोकार्तिहृत्।
काश्मीरप्रवरेशमध्यनगरीप्रद्युम्नपीठे स्थिता
देवी सप्तकसंयुता भगवती श्रीशारिका पातु नः॥

त्वन्दयः तपाणिभ्यामभयवरदो दैवतगण-
स्त्वमेका नैवासि प्रकटितवराभीत्यभिनया।
भयात्त्रातुं दातुं फलमपि च वाञ्छासमधिकं
शरण्ये लोकानां तव हि चरणावेव निपुणौ॥7॥

ॐ सुमुख्यै स्वाहा 201
ॐ क्षामायै स्वाहा
ॐ मूलप्रकृतये स्वाहा
ॐ ईश्वर्यै स्वाहा
ॐ अजायै स्वाहा
ॐ बहुवर्णायै स्वाहा
ॐ पुरुषार्थप्रवर्तिन्यै स्वाहा
ॐ रक्तायै स्वाहा
ॐ नीलायै स्वाहा
ॐ सितायै स्वाहा 210
ॐ श्यामायै स्वाहा
ॐ कृष्णायै स्वाहा
ॐ पीतायै स्वाहा
ॐ कर्बुरायै स्वाहा
ॐ क्षुधायै स्वाहा
ॐ तृष्णायै स्वाहा
ॐ जरावृद्धायै स्वाहा
ॐ तरुण्यै स्वाहा
ॐ करुणालयायै स्वाहा
ॐ कलायै स्वाहा
ॐ काष्ठायै स्वाहा
ॐ मुहूर्त्तायै स्वाहा
ॐ निमेषायै स्वाहा
ॐ कालरूपिण्यै स्वाहा
ॐ सुकर्णरसनायै स्वाहा
ॐ नासायै स्वाहा
ॐ चक्षुषे स्वाहा
ॐ स्पर्शवत्यै स्वाहा
ॐ रसायै स्वाहा
ॐ गन्धप्रियायै स्वाहा 230
ॐ सुगन्धायै स्वाहा
ॐ सुस्पर्शायै स्वाहा
ॐ मनोगतये स्वाहा
ॐ मृगनाभये स्वाहा
ॐ मृगाक्ष्यै स्वाहा
ॐ कर्पूरामोदधारिण्यै स्वाहा
ॐ पद्मयोनये स्वाहा
ॐ सुकेश्यै स्वाहा
ॐ सुलिङ्गायै स्वाहा
ॐ भगरूपिण्यै स्वाहा 240
ॐ योनिमुद्रायै स्वाहा
ॐ महामुद्रायै स्वाहा
ॐ खेचर्यै स्वाहा
ॐ खगगामिन्यै स्वाहा
ॐ मधुश्रियै स्वाहा
ॐ माधवीवल्लयै स्वाहा
ॐ मधुमत्तायै स्वाहा
ॐ मदोद्धतायै स्वाहा
ॐ मातङ्गलायै स्वाहा
ॐ शुकहस्तायै स्वाहा 250

ॐ पुष्पबाणायै स्वाहा
ॐ इक्षुचापिन्यै स्वाहा
ॐ रक्ताम्बरधरायै स्वाहा
ॐ क्षीवायै स्वाहा
ॐ रक्तपुष्पावतंसिन्यै स्वाहा
ॐ शुभ्राम्भरधरायै स्वाहा
ॐ धीरायै स्वाहा
ॐ महाश्वेतायै स्वाहा
ॐ वसुप्रियायै स्वाहा
ॐ सुवेणये स्वाहा 260
ॐ पद्महस्तायै स्वाहा
ॐ मुक्ताहारविभूषणायै स्वाहा
ॐ कर्पूरामोदनि:श्वासायै स्वाहा
ॐ पद्मिन्यै स्वाहा
ॐ पद्ममन्दिरायै स्वाहा
ॐ खड्गिन्यै स्वाहा
ॐ चक्रहस्तायै स्वाहा
ॐ भुसुण्ड्यै स्वाहा
ॐ परिघायुधायै स्वाहा
ॐ चापिन्यै स्वाहा 270
ॐ पाशहस्तायै स्वाहा
ॐ त्रिशूलवरधारिण्यै स्वाहा
ॐ सुबाणायै स्वाहा
ॐ शक्तिहस्तायै स्वाहा
ॐ मयूरवाहनायै स्वाहा
ॐ वरायुधधरायै स्वाहा
ॐ वीरायै स्वाहा
ॐ वीरपानमदोत्कटायै स्वाहा
ॐ वसुधायै स्वाहा
ॐ वसुधारायै स्वाहा 280
ॐ जयायै स्वाहा
ॐ शाकम्भर्यै स्वाहा
ॐ शिवायै स्वाहा
ॐ विजयायै स्वाहा
ॐ जयन्त्यै स्वाहा
ॐ सुस्तन्यै स्वाहा
ॐ शत्रुनाशिन्यै स्वाहा
ॐ अन्तर्वत्न्यै स्वाहा
ॐ वेदशक्तये स्वाहा
ॐ वरदायै स्वाहा 290
ॐ वरधारिण्यै स्वाहा
ॐ शीतलायै स्वाहा
ॐ सुशीलायै स्वाहा
ॐ बालग्रहविनाशिन्यै स्वाहा
ॐ कुमार्यै स्वाहा
ॐ सुपर्वायै स्वाहा
ॐ कामाख्यायै स्वाहा
ॐ कामवन्दितायै स्वाहा
ॐ जालन्धरधरायै स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि धामाऽसि

जातवेदसे सुनवाम् सोममऽरातीयतो निदहाति वेदः। स नः
पर्षदऽतिदुर्गाणि विश्वा नावेव सिंधुं दुरितात्यग्निः।

ॐ अनन्तायै स्वाहा।।300।।

ॐ कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिकबद्धेन्दुरेखां
शङ्खं चक्रं कृपणां त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्।
सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः।।

ॐ कामरूपनिवासिन्यै स्वाहा
ॐ कामबीजवत्यै स्वाहा
ॐ सत्यायै स्वाहा
ॐ सत्यधर्मपरायणायै स्वाहा
ॐ स्थूलमार्गस्थितायै स्वाहा
ॐ सूक्ष्मायै स्वाहा
ॐ सूक्ष्मबुद्धिप्रबोधिन्यै स्वाहा
ॐ षट्कोणायै स्वाहा
ॐ त्रिकोणायै स्वाहा
ॐ त्रिनेत्रायै स्वाहा 310
ॐ त्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा
ॐ वृषप्रियायै स्वाहा
ॐ वृषारूढायै स्वाहा
ॐ महिषासुरघातिन्यै स्वाहा
ॐ सुम्भदर्पहरायै स्वाहा
ॐ दीप्तायै स्वाहा
ॐ दीप्तपावकसन्निभायै स्वाहा
ॐ कपालभूषणायै स्वाहा
ॐ काल्यै स्वाहा
ॐ कपालमालभारिण्यै स्वाहा
ॐ कपालकुण्डलायै स्वाहा
ॐ दीर्घायै स्वाहा
ॐ शिवादूत्यै स्वाहा
ॐ घनध्वनये स्वाहा
ॐ सिद्धिदायै स्वाहा
ॐ बुद्धिदायै स्वाहा
ॐ नित्यायै स्वाहा
ॐ सत्यमार्गप्रबोधिन्यै स्वाहा
ॐ कम्बुग्रीवायै स्वाहा
ॐ वसुमत्यै स्वाहा 330
ॐ छत्रच्छायाकृतालयायै स्वाहा

ॐ जगद्गर्भायै स्वाहा

ॐ कुण्डलिन्यै स्वाहा

ॐ भुजगाकारशायिन्यै स्वाहा

ॐ प्रोल्लसत्सप्तपद्मायै स्वाहा

ॐ नाभिनालमृणालिन्यै स्वाहा

ॐ मूलाधारायै स्वाहा

ॐ निराकारायै स्वाहा

ॐ वह्निकुण्डकृतालयायै स्वाहा

ॐ वायुकुण्डसुखासीनायै स्वाहा

ॐ निराधारायै स्वाहा

ॐ निराश्रयायै स्वाहा

ॐ श्वासोच्छ्वासगतये स्वाहा

ॐ जीवायै स्वाहा

ॐ ग्राहिण्यै स्वाहा

ॐ वह्निसंश्रयायै स्वाहा

ॐ वह्नितन्तुसमुत्थानायै स्वाहा

ॐ षड्रसास्वादलोलुपायै स्वाहा

ॐ तपस्विन्यै स्वाहा

ॐ तपःसिद्धये स्वाहा 350

ॐ तापस्यै स्वाहा

ॐ तपःप्रियायै स्वाहा

ॐ तपोनिष्ठायै स्वाहा

ॐ तपोयुक्तायै स्वाहा

ॐ तपसःसिद्धिदायिन्यै स्वाहा

ॐ सप्तधातुमयीमूर्तये स्वाहा

ॐ सप्तधात्वन्तराश्रयायै स्वाहा

ॐ देहपुष्टये स्वाहा

ॐ मनतुष्टये स्वाहा

ॐ अन्नपुष्टये स्वाहा 360

ॐ बलोद्धतायै स्वाहा

ॐ ओषधये स्वाहा

ॐ वैद्यमात्रे स्वाहा

ॐ द्रव्यशक्तये स्वाहा

ॐ प्रभाविन्यै स्वाहा

ॐ वैद्यायै स्वाहा

ॐ वैद्यचिकित्सायै स्वाहा

ॐ सुपथ्यायै स्वाहा

ॐ रोगनाशिन्यै स्वाहा

ॐ मृगयायै स्वाहा 370

ॐ मृगमांसादायै स्वाहा

ॐ मृगत्वचे स्वाहा

ॐ मृगलोचनायै स्वाहा

ॐ वागुरायै स्वाहा

ॐ बन्धरूपायै स्वाहा

ॐ वधरूपायै स्वाहा

ॐ वधोद्धतायै स्वाहा

ॐ वन्द्यै स्वाहा

ॐ वन्दिस्तुताकारायै स्वाहा

ॐ काराबन्धविमोचिन्यै स्वाहा

ॐ शृङ्खलायै स्वाहा

ॐ खलहायै स्वाहा

ॐ विद्युते स्वाहा

ॐ दृढबन्धविमोचन्यै स्वाहा

ॐ अम्बिकायै स्वाहा

ॐ अम्बालिकायै स्वाहा

ॐ अम्बायै स्वाहा

ॐ स्वक्षायै स्वाहा

ॐ साधुजनार्चितायै स्वाहा

ॐ कौलिक्यै स्वाहा 390

ॐ कुलविद्यायै स्वाहा

ॐ सुकुलायै स्वाहा

ॐ कुलपूजितायै स्वाहा

ॐ कालचक्रभ्रमायै स्वाहा

ॐ भ्रान्तायै स्वाहा

ॐ विभ्रमायै स्वाहा

ॐ भ्रमनाशिन्यै स्वाहा

ॐ वात्याल्यै स्वाहा

ॐ मेघमालायै स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि धामाऽसि

जातवदेवसे सुनववाम् सोममऽरातीयतो निदहाति वेदः। स नः
पर्षदऽतिदुर्गाणि विश्वा नावेव सिंधुं दुरितात्यग्निः।।

ॐ सुवृष्ट्यै स्वाहा।।400।।

भक्तानां सिद्धिदात्री नलिनयुगकरा श्वेतपद्मासनस्था,
लक्ष्मीरूपा त्रिनेत्रा हिमकरवदना सर्वदैत्येन्द्रहर्त्री।
वागीशीसिद्धिकर्त्री सकलमुनिजनैः सेविता या भवानी,
नौम्यहं नौम्यहंत्वा हरिहरप्रणतां शारिकां नौमि नौमि।।

~~पौ~~ पुनाव
अजानन्द

ॐ सस्यवर्द्धिन्यै स्वाहा

ॐ अकारायै स्वाहा

ॐ इकारायै स्वाहा

ॐ उकारायै स्वाहा

ॐ ऐकारूपिण्यै स्वाहा

ॐ ह्रींकार्यै स्वाहा

ॐ बीजरूपायै स्वाहा

ॐ क्लींरायै स्वाहा

ॐ अम्बरवासिन्यै स्वाहा

ॐ सर्वाक्षरमयी शक्त्ये स्वाहा

ॐ अक्षरायै स्वाहा 411

ॐ वर्णमालिन्यै स्वाहा

ॐ सिन्दूरारुणवक्त्रायै स्वाहा
ॐ सिन्दूरतिलकप्रियायै स्वाहा
ॐ वश्यायै स्वाहा
ॐ वश्यबीजायै स्वाहा
ॐ लोकवश्यविभाविन्यै स्वाहा
ॐ नृपवश्यायै स्वाहा
ॐ नृपैःसेव्यायै स्वाहा
ॐ नृपवश्यकर्यै स्वाहा 420
ॐ क्रियायै स्वाहा
ॐ महिष्यै स्वाहा
ॐ नृपमान्यायै स्वाहा
ॐ नृमान्यायै स्वाहा
ॐ नृपनन्दिन्यै स्वाहा
ॐ नृपधर्ममय्यै स्वाहा
ॐ धन्यायै स्वाहा
ॐ धनधान्यविवर्द्धिन्यै स्वाहा
ॐ चतुर्वर्णमयी मूर्तये
ॐ चतुर्वर्णैःसुपूजितायै स्वाहा
ॐ सर्वधर्ममयीसिद्धये स्वाहा
ॐ चतुराश्रमवासिन्यै स्वाहा
ॐ ब्राह्मण्यै स्वाहा
ॐ क्षत्रियायै स्वाहा
ॐ वैश्यायै स्वाहा
ॐ शूद्रायै स्वाहा
ॐ अवरवर्णजायै स्वाहा
ॐ वेदमार्गरतायै स्वाहा
ॐ यज्ञायै स्वाहा 439
ॐ वेदविश्वविभाविन्यै स्वाहा
ॐ अस्त्रशस्त्रमयीविद्यायै स्वाहा
ॐ वरशस्त्रास्त्रधारिण्यै स्वाहा
ॐ सुमेधायै स्वाहा
ॐ सत्यमेधायै स्वाहा
ॐ भद्रकाल्यै स्वाहा
ॐ अपराजितायै स्वाहा
ॐ गायत्र्यै स्वाहा
ॐ सत्कृतवे स्वाहा
ॐ सन्ध्यायै स्वाहा
ॐ सावित्र्यै स्वाहा 450
ॐ त्रिपदाश्रयायै स्वाहा
ॐ त्रिसन्ध्यायै स्वाहा
ॐ त्रिपद्यै स्वाहा
ॐ धात्र्यै स्वाहा
ॐ सुपर्वायै स्वाहा
ॐ सामगायन्यै स्वाहा
ॐ पाञ्चाल्यै स्वाहा
ॐ बालिकायै स्वाहा
ॐ बालायै स्वाहा
ॐ बालक्रीडायै स्वाहा 460

ॐ स्नातन्यै स्वाहा
ॐ गर्भाधारधरायै स्वाहा
ॐ शून्यायै स्वाहा
ॐ गर्भाशयनिवासिन्यै स्वाहा
ॐ सुरारिघातिनीकृत्यायै स्वाहा
ॐ पूतनायै स्वाहा
ॐ तिलोत्तमायै स्वाहा
ॐ लज्जायै स्वाहा
ॐ रसवत्यै स्वाहा
ॐ नन्दायै स्वाहा70
ॐ भवान्यै स्वाहा
ॐ पापनाशिन्यै स्वाहा
ॐ पट्टाम्बरधरायै स्वाहा
ॐ गीतये स्वाहा
ॐ सुगीतये स्वाहा
ॐ ज्ञानलोचनायै स्वाहा
ॐ सप्तस्वरमयीतन्त्र्यै स्वाहा
ॐ षड्जमध्यमधैवतायै स्वाहा
ॐ मूर्च्छनाग्रामसंस्थायै स्वाहा
ॐ स्वस्थायै स्वाहा 480

ॐ स्वस्थानवासिन्यै स्वाहा
ॐ अट्टाटहासिन्यै स्वाहा
ॐ प्रेतायै स्वाहा
ॐ प्रेतासननिवासिन्यै स्वाहा
ॐ नृत्तगीतप्रियायै स्वाहा
ॐ अकामायै स्वाहा
ॐ तुष्टिदायै स्वाहा
ॐ पुष्टिदायै स्वाहा
ॐ अक्षयायै स्वाहा
ॐ निष्ठायै स्वाहा 490
ॐ सत्यप्रियायै स्वाहा
ॐ प्रज्ञायै स्वाहा
ॐ लोकेश्यै स्वाहा
ॐ सुरोत्तमायै स्वाहा
ॐ सविषायै स्वाहा
ॐ ज्वालिन्यै स्वाहा
ॐ ज्वालायै स्वाहा
ॐ विषमोहार्त्तिनाशिन्यै स्वाहा
ॐ विषारये स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि धामाऽसि

जातवेदसे सुनवाम सोममऽरातीयतो निदहाति वेदः।
स नः पर्षदऽतिदुर्गाणि विश्वा नावेव सिंधुं दुरितात्यग्निः

ॐ नागदमन्यै स्वाहा॥500॥

विद्यां परां कतिचिदम्बरमम्ब केचित्-
आनन्देव कतिचित्कतिचित् च मायाम्।
त्वां विश्वमाहुरपरे वयमामनाम्
साक्षादपारकरुणां गुरुमूर्तिमेव॥

ॐ कुरुकुल्लायै स्वाहा
ॐ अमृतोदभावयै स्वाहा
ॐ भूतभीतिहरारक्षायै स्वाहा
ॐ भूतावेशविनाशिन्यै स्वाहा
ॐ रक्षोघ्न्यै स्वाहा
ॐ राक्षस्यै स्वाहा
ॐ रात्रये स्वाहा
ॐ दीर्घनिद्रायै स्वाहा
ॐ दिवागतये स्वाहा
ॐ चन्द्रिकायै स्वाहा 510
ॐ चन्द्रकान्तये स्वाहा
ॐ सूर्यकान्तये स्वाहा
ॐ निशाचर्यै स्वाहा
ॐ डाकिन्यै स्वाहा
ॐ शाकिन्यै स्वाहा
ॐ शिष्यायै स्वाहा
ॐ हाकिन्यै स्वाहा
ॐ चक्रवाकिन्यै स्वाहा
ॐ सितासितप्रियायै स्वाहा
ॐ स्वङ्गायै स्वाहा 520

ॐ सकलायै स्वाहा
ॐ वनदेवतायै स्वाहा
ॐ गुरुरूपधरायै स्वाहा
ॐ गुर्व्यै स्वाहा
ॐ मृत्यवे स्वाहा
ॐ मार्यै स्वाहा
ॐ विशारदायै स्वाहा
ॐ महामार्यै स्वाहा
ॐ विनिद्रायै स्वाहा
ॐ तन्द्रायै स्वाहा 530
ॐ मृत्युविनाशिन्यै स्वाहा
ॐ चन्द्रमण्डलसंकाशायै स्वाहा
ॐ चन्द्रमण्डलवासिन्यै स्वाहा
ॐ अणिमादिगुणोपेतायै स्वाहा
ॐ सुस्पृहायै स्वाहा
ॐ कामरूपिण्यै स्वाहा
ॐ अष्टसिद्धिप्रदायै स्वाहा
ॐ प्रौढायै स्वाहा
ॐ दुष्टदानवघातिन्यै स्वाहा
ॐ अनादिनिधनापुष्टये स्वाहा

ॐ चतुर्बाहवे स्वाहा 541
ॐ चतुर्मुख्यै स्वाहा
ॐ चतुःसमुद्रशयनायै स्वाहा
ॐ चतुर्वर्गफलप्रदायै स्वाहा
ॐ काशपुष्पप्रतीकाशायै स्वाहा
ॐ शरत्कुमुदलोचनायै स्वाहा
ॐ भूतायै स्वाहा
ॐ भव्यायै स्वाहा
ॐ भविष्यायै स्वाहा
ॐ शैलजायै स्वाहा 550
ॐ शैलवासिन्यै स्वाहा
ॐ वाममार्गरतायै स्वाहा
ॐ वामायै स्वाहा
ॐ शिववामाङ्गवासिन्यै स्वाहा
ॐ वामाचारप्रियायै स्वाहा
ॐ तुष्टायै स्वाहा
ॐ लोपामुद्रायै स्वाहा
ॐ प्रबोधिन्यै स्वाहा
ॐ भूतात्मने स्वाहा
ॐ परमात्मने स्वाहा 560
ॐ भूतभाविविभाविन्यै स्वाहा
ॐ मङ्गलायै स्वाहा
ॐ सुशीलायै स्वाहा
ॐ परमार्थप्रबोधिकायै स्वाहा
ॐ दक्षिणायै स्वाहा
ॐ दक्षिणामूर्त्तये स्वाहा
ॐ सुदक्षिणायै स्वाहा
ॐ हरिप्रियायै स्वाहा
ॐ योगिन्यै स्वाहा
ॐ योगयुक्तायै स्वाहा 570
ॐ योगाङ्गायै स्वाहा
ॐ ध्यानशालिन्यै स्वाहा
ॐ योगपट्टधरायै स्वाहा
ॐ मुक्तायै स्वाहा
ॐ मुक्तानांपरमागत्यै स्वाहा
ॐ नारसिंह्यै स्वाहा
ॐ सुजन्मायै स्वाहा
ॐ त्रिवर्गफलदायिन्यै स्वाहा
ॐ धर्मदायै स्वाहा
ॐ धनदायै स्वाहा 580
ॐ कामदायै स्वाहा
ॐ मोक्षदायै स्वाहा
ॐ द्युतये स्वाहा
ॐ साक्षिण्यै स्वाहा
ॐ क्षणदायै स्वाहा
ॐ दक्षायै स्वाहा
ॐ दक्षजायै स्वाहा
ॐ कोटिरूपिण्यै स्वाहा

ॐ क्रतवे स्वाहा	ॐ सत्यागमायै स्वाहा
ॐ कात्यायन्यै स्वाहा 590	ॐ बहि:स्थायै स्वाहा
ॐ स्वच्छायै स्वाहा	ॐ काव्यशक्तये स्वाहा
ॐ स्वच्छन्दायै स्वाहा	ॐ कवित्वदायै स्वाहा
ॐ कविप्रियायै स्वाहा	ॐ मेनापुत्र्यै स्वाहा
	ॐ सतीमात्रे स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि धामाऽसि

जातवेदसे सुनवाम सोममऽरातीयतो निदहाति वेदः। स नः
पर्षदऽतिदुर्गाणि विश्वा नावेव सिंधुं दुरितात्यग्निः

ॐ मैनाकभगिन्यै स्वाहा॥600॥

भवानि त्वं दासे मयि वितर दृष्टि सकरुणा
इति स्तोतुं वाञ्छन् कथयति भवानि त्वमिति यः।
तदैव त्वं तस्मै दिशसि निजसायुज्यपदवीं
मुकुन्दब्रह्मेन्द्रस्फुटमकुटराजितपदाम्॥

ॐ तडिते स्वाहा	ॐ कङ्काल्यै स्वाहा
ॐ सौदामिन्यै स्वाहा	ॐ कलिनाशिन्यै स्वाहा
ॐ स्वधामायै स्वाहा	ॐ रक्तबीजवधोद्दृप्तायै स्वाहा
ॐ सुधामायै स्वाहा	ॐ सुतन्तवे स्वाहा
ॐ धामशालिन्यै स्वाहा	ॐ बीजसन्ततये स्वाहा
ॐ सौभाग्यदायिन्यै स्वाहा	ॐ जगज्जीवायै स्वाहा
ॐ दिवे स्वाहा	ॐ जगद्बीजायै स्वाहा
ॐ सुभगायै स्वाहा	ॐ जगत्त्रयहितैषिण्यै स्वाहा
ॐ द्युतिवर्द्धिन्यै स्वाहा	ॐ चामीकररुचये स्वाहा 620
ॐ श्रियै स्वाहा 610	ॐ चान्द्रीसाक्षयाषोडशीकलायै
ॐ कृतिवसनायै स्वाहा	ॐ यत्तत्पदानुबन्धायै स्वाहा

ॐ यक्षिव्यै स्वाहा
ॐ धनदार्चितायै स्वाहा
ॐ चित्रिण्यै स्वाहा
ॐ चित्रमायायै स्वाहा
ॐ विचित्रायै स्वाहा
ॐ भुवनेश्वर्यै स्वाहा
ॐ चामुण्डायै स्वाहा
ॐ मुण्डहस्तायै स्वाहा 630
ॐ चण्डमुण्डवधोद्धुरायै स्वाहा
ॐ अष्टम्यै स्वाहा
ॐ एकादश्यै स्वाहा
ॐ पूर्णायै स्वाहा
ॐ नवम्यै स्वाहा
ॐ चतुर्दश्यै स्वाहा
ॐ अमायै स्वाहा
ॐ कलशहस्तायै स्वाहा
ॐ पूर्णकुम्भधरायै स्वाहा
ॐ धरायै स्वाहा 640
ॐ अभीरवे स्वाहा
ॐ भैरव्यै स्वाहा
ॐ भीमायै स्वाहा
ॐ भीरायै स्वाहा
ॐ त्रिपुरभैरव्यै स्वाहा
ॐ महारुण्डायै स्वाहा

ॐ रौद्र्यै स्वाहा
ॐ महाभैरवपूजितायै स्वाहा
ॐ निर्मुण्डायै स्वाहा
ॐ हस्तिन्यै स्वाहा 650
ॐ चण्डायै स्वाहा
ॐ करालदशनाननायै स्वाहा
ॐ करालायै स्वाहा
ॐ विकरालायै स्वाहा
ॐ घोरघुर्घुरनादिन्यै स्वाहा
ॐ रक्तदन्तायै स्वाहा
ॐ ऊर्ध्वकेश्यै स्वाहा
ॐ बन्धूककुसुमारुणायै स्वाहा
ॐ कादम्बर्यै स्वाहा
ॐ पटासायै स्वाहा 660
ॐ काश्मीर्यै स्वाहा
ॐ कुंकुमप्रियायै स्वाहा
ॐ क्षान्तये स्वाहा
ॐ बहुसुवर्णायै स्वाहा
ॐ रतये स्वाहा
ॐ बहुसुर्वणदायै स्वाहा
ॐ मातङ्गिन्यै स्वाहा
ॐ वरारोहायै स्वाहा
ॐ मत्तमातङ्गगामिन्यै स्वाहा
ॐ हिंसायै स्वाहा 670

ॐ हंसगतये स्वाहा

ॐ हंस्यै स्वाहा

ॐ हंसोज्ज्वलशिरोरुहायै स्वाहा

ॐ पूर्णचन्द्रमुख्यै स्वाहा

ॐ श्यामायै स्वाहा

ॐ स्मितास्यायै स्वाहा

ॐ श्यामकुण्डलायै स्वाहा

ॐ मष्यै स्वाहा

ॐ लेखिन्यै स्वाहा

ॐ लेख्यायै स्वाहा 680

ॐ सुलेखायै स्वाहा

ॐ लेखकप्रियायै स्वाहा

ॐ शङ्खिन्यै स्वाहा

ॐ शङ्खहस्तायै स्वाहा

ॐ जलस्थायै स्वाहा

ॐ जलदेवतायै स्वाहा

ॐ कुरुक्षेत्रावनये स्वाहा

ॐ काश्यै स्वाहा

ॐ मथुरायै स्वाहा

ॐ काञ्च्यै स्वाहा 690

ॐ अवन्तिकायै स्वाहा

ॐ अयोध्यायै स्वाहा

ॐ द्वारकायै स्वाहा

ॐ मायायै स्वाहा

ॐ तीर्थायै स्वाहा

ॐ तीर्थकरप्रियायै स्वाहा

ॐ त्रिपुष्करायै स्वाहा

ॐ अप्रमेयायै स्वाहा

ॐ कोशस्थायै स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि धामाऽसि

जातवेदसे सुनवाम सोममऽरातीयतो निदहाति वेदः। स नः
पर्षदऽतिदुर्गाणि विश्वा नावेव सिंधुं दुरितात्यग्निः

ॐ कोशवासिन्यै स्वाहा॥700॥

मुक्ताहारलसत्किरीटरुचिरां पूर्णेन्दुवक्त्रप्रभाम्
शिञ्जन्नूपुरकिङ्किणीमणिधरां पद्मप्रभाभासुराम्।
सुर्वाभीष्टफलप्रदां गिरिसुतां वाणीरमासेविताम्
मीनाक्षीम् प्रणतोऽस्मि संततमहं कारुण्यवारां निधिम्॥

ॐ कौशिक्यै स्वाहा
ॐ कुशावर्तायै स्वाहा
ॐ कौशाम्ब्यै स्वाहा
ॐ कोशवर्द्धिन्यै स्वाहा
ॐ कोशदायै स्वाहा
ॐ पद्मकोशाक्ष्यै स्वाहा
ॐ कुसुमायै स्वाहा
ॐ कुसुमप्रियायै स्वाहा
ॐ तोतलायै स्वाहा
ॐ तुलाकोटये स्वाहा 710
ॐ कूटस्थायै स्वाहा
ॐ कोटराश्रयायै स्वाहा
ॐ स्वयम्भुवे स्वाहा
ॐ सुरूपायै स्वाहा
ॐ स्वरूपायै स्वाहा
ॐ रूपवर्द्धिन्यै स्वाहा
ॐ तेजस्विन्यै स्वाहा
ॐ सुभिक्षायै स्वाहा
ॐ बलदायै स्वाहा
ॐ बलदायिन्यै स्वाहा 720
ॐ महाकोश्यै स्वाहा
ॐ महावर्तायै स्वाहा
ॐ बुद्धिसदसदात्मिकायै स्वाहा
ॐ महाग्रहहरायै स्वाहा

ॐ सौम्यायै स्वाहा
ॐ विशोकायै स्वाहा
ॐ शोकनाशिन्यै स्वाहा
ॐ सात्विक्यै स्वाहा
ॐ सत्त्वसंस्थायै स्वाहा
ॐ राजस्यै स्वाहा 730
ॐ रजोव्रतायै स्वाहा
ॐ तामस्यै स्वाहा
ॐ तमोयुक्तायै स्वाहा
ॐ गुणत्रयविभाविन्यै स्वाहा
ॐ अव्यक्तायै स्वाहा
ॐ व्यक्तरूपायै स्वाहा
ॐ वेदविद्यायै स्वाहा
ॐ शाम्भव्यै स्वाहा
ॐ शङ्कराकल्पिनीकल्पायै स्वाहा
ॐ मनःसङ्कल्पसन्ततये स्वाहा
ॐ सर्वलोकमयी शक्तये स्वाहा
ॐ सर्वश्रवणगोचरायै स्वाहा
ॐ सर्वज्ञानवती वाञ्छायै स्वाहा
ॐ सर्वतत्त्वानुबोधिन्यै स्वाहा
ॐ जागृत्यै स्वाहा
ॐ सुषुप्तये स्वाहा
ॐ स्वप्नावस्थायै स्वाहा
ॐ तुरीयकायै स्वाहा

ॐ त्वरायै स्वाहा
ॐ मन्दगतये स्वाहा 750
ॐ मन्दायै स्वाहा
ॐ मदिरामोदधारिण्यै स्वाहा
ॐ पानभूमये स्वाहा
ॐ पानपात्रायै स्वाहा
ॐ पानदानकरोद्यतायै स्वाहा
ॐ आघूर्णारुणनेत्रायै स्वाहा
ॐ किञ्चिदव्यक्तभाषिण्यै स्वाहा
ॐ आशापूरायै स्वाहा
ॐ दीक्षायै स्वाहा
ॐ दक्षायै स्वाहा760
ॐ दीक्षितपूजितायै स्वाहा
ॐ नागवल्लयै स्वाहा
ॐ नागकन्यायै स्वाहा
ॐ भोगिन्यै स्वाहा
ॐ भोगवल्लभायै स्वाहा
ॐ सर्वशास्त्रवतीविद्यायै स्वाहा
ॐ सुस्मृतये स्वाहा
ॐ धर्मवादिन्ये स्वाहा
ॐ श्रुतये स्वाहा
ॐ श्रुतिधरायै स्वाहा 770
ॐ ज्येष्ठायै स्वाहा
ॐ श्रेष्ठायै स्वाहा

ॐ पातालवासिन्यै स्वाहा
ॐ मीमांसायै स्वाहा
ॐ तर्कविद्यायै स्वाहा
ॐ सुभक्तये स्वाहा
ॐ भक्तवत्सलायै स्वाहा
ॐ सुनाभये स्वाहा
ॐ यातनायै स्वाहा
ॐ जातये स्वाहा 780
ॐ गम्भीरायै स्वाहा
ॐ भाववर्जितायै स्वाहा
ॐ नागपाशधरामूर्तये स्वाहा
ॐ अगाधायै स्वाहा
ॐ नागकुण्डलायै स्वाहा
ॐ सुचक्रायै स्वाहा
ॐ चक्रमध्यस्थायै स्वाहा
ॐ चक्रकोणनिवासिन्यै स्वाहा
ॐ सर्वमन्त्रमयीविद्यायै स्वाहा
ॐ सर्वमन्त्राक्षरावलये स्वाहा790
ॐ मधुस्त्रवायै स्वाहा
ॐ स्त्रवन्त्यै स्वाहा
ॐ भ्रामर्यै स्वाहा
ॐ भ्रमरालकायै स्वाहा
ॐ मातृमण्डलमध्यस्थायै स्वाहा
ॐ मातृमण्डलवासिन्यै स्वाहा

ॐ कुमारजनन्यै स्वाहा

ॐ सुमुख्यै स्वाहा

ॐ क्रूरायै स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि धामाऽसि

जातवेदसे सुनवाम सोममऽरातीयतो निदहाति वेदः। स नः
पर्षदऽतिदुर्गाणि विश्वा नावेव सिंधुं दुरितात्यग्निः

ॐ ज्वरनाशिन्यै स्वाहा॥800॥

शिवस्त्वं शक्तिस्त्वं त्वमसि समया त्वं समयिनी
त्वमात्मा दीक्षा त्वमयमणिमादिर्गुणगणः।
अविद्या त्वं विद्या त्वमसि निखिलं त्वं किमपरं
पृथक्तत्त्वं त्वत्तो भगवति न वीक्षामहे इमे॥

ॐ अतीतायै स्वाहा

ॐ विद्यमानायै स्वाहा

ॐ भाविन्यै स्वाहा

ॐ प्रीतिमञ्जर्यै स्वाहा

ॐ सर्वसौख्यवतीयुक्तये स्वाह

ॐ आहारपरिणामिन्यै स्वाहा

ॐ पञ्चभूतानांनिधानायै स्वाहा

ॐ भवसागरतारिण्यै स्वाहा

ॐ अक्रूरायै स्वाहा

ॐ ग्रहवत्यै स्वाहा 810

ॐ विग्रहायै स्वाहा

ॐ ग्रहवर्जितायै स्वाहा

ॐ रोहिण्यै स्वाहा 813

ॐ भूमिगर्भायै स्वाहा

ॐ कालभुवे स्वाहा

ॐ कालवर्तिन्यै स्वाहा

ॐ कलङ्करहितानार्यै स्वाहा

ॐ चतुष्षष्ट्यभिधावत्यै स्वाहा

ॐ जीर्णायै स्वाहा

ॐ जीर्णवस्त्रायै स्वाहा 820

ॐ नूतनायै स्वाहा

ॐ नववल्लभायै स्वाहा

ॐ अरजायै स्वाहा

ॐ रतये स्वाहा

ॐ प्रीतये स्वाहा

ॐ रतिरागविवर्द्धिन्यै स्वाहा

ॐ पञ्चवातगतिर्भिन्नायै स्वाहा

ॐ पञ्चश्लेष्माशयाधरायै स्वाहा

ॐ पञ्चपित्तवतीशक्तये
ॐ पञ्चस्थानविबोधिन्यै स्वाहा
ॐ उदक्यायै स्वाहा
ॐ वृषस्यन्त्यै स्वाहा
ॐ त्र्यहंबहि:प्रस्त्रविण्यै स्वाहा
ॐ रज:शुक्रधराशक्तये स्वाहा
ॐ जरायवे स्वाहा
ॐ गर्भधारिण्यै स्वाहा
ॐ त्रिकालज्ञायै स्वाहा
ॐ त्रिलिङ्गायै स्वाहा
ॐ त्रिमूर्तये स्वाहा
ॐ त्रिपुरवासिन्यै स्वाहा 840
ॐ अरागायै स्वाहा
ॐ शिवतत्त्वायै स्वाहा
ॐ कामतत्त्वानुरागिण्यै स्वाहा
ॐ प्राच्यै स्वाहा
ॐ अवाच्यै स्वाहा
ॐ प्रतीच्यै स्वाहा
ॐ उदीच्यै स्वाहा
ॐ विदिग्दिशायै स्वाहा
ॐ अहङ्कृतये स्वाहा
ॐ अहङ्कारायै स्वाहा 850
ॐ बलिमायायै स्वाहा
ॐ बलिप्रियायै स्वाहा

ॐ स्त्रुचे स्वाहा
ॐ स्त्रुवायै स्वाहा
ॐ सामिधेन्यै स्वाहा
ॐ सश्रद्धायै स्वाहा
ॐ श्राद्धदेवतायै स्वाहा
ॐ मात्रे स्वाहा
ॐ मातामह्यै स्वाहा
ॐ तृप्तये स्वाहा 860
ॐ पितृमात्रे स्वाहा
ॐ पितामह्यै स्वाहा
ॐ स्नुषायै स्वाहा
ॐ दौहित्रिण्यै स्वाहा
ॐ पुत्र्यै स्वाहा
ॐ पौत्र्यै स्वाहा
ॐ नप्त्र्यै स्वाहा
ॐ शिशुप्रियायै स्वाहा
ॐ स्तनदायै स्वाहा
ॐ स्तनधारायै स्वाहा 870
ॐ विश्वयोनये स्वाहा
ॐ स्तनन्धय्यै स्वाहा
ॐ शिशूत्सङ्गधरायै स्वाहा
ॐ दोलायै स्वाहा
ॐ दोलाक्रीडाभिनन्दिन्यै स्वाहा
ॐ उर्वश्यै स्वाहा

ॐ कदल्यै स्वाहा
ॐ केकायै स्वाहा
ॐ विशिखायै स्वाहा
ॐ शिखिवर्तिन्यै स्वाहा८८०
ॐ खट्वाङ्गधारिण्यै स्वाहा
ॐ खट्वायै स्वाहा
ॐ बाणपुङ्खानुवर्तिन्यै स्वाहा
ॐ लक्ष्यप्राप्त्यै स्वाहा
ॐ कलायै स्वाहा
ॐ अलक्ष्यायै स्वाहा
ॐ लक्ष्यायै स्वाहा
ॐ शुभलक्षणायै स्वाहा

ॐ वर्तिन्यै स्वाहा
ॐ सुपथाचारायै स्वाहा
ॐ परिखायै स्वाहा
ॐ खनये स्वाहा
ॐ वृतये स्वाहा
ॐ प्राकारवलयायै स्वाहा
ॐ वेलायै स्वाहा
ॐ महोदधौमर्यादायै स्वाहा
ॐ पोषिणी शक्तये स्वाहा
ॐ शोषणीशक्तये स्वाहा
ॐ दीर्घकेश्यै स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि धामाऽसि

जातवेदसे सुनवाम सोममऽरातीयतो निदहाति वेदः। स नः
पर्षदऽतिदुर्गाणि विश्वा नावेव सिंधुं दुरितात्यग्निः

ॐ सुलोमशायै स्वाहा॥९००॥

यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो
ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च।
सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय
नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु॥

ॐ ललितायै स्वाहा
ॐ मांसलायै स्वाहा
ॐ तन्व्यै स्वाहा
ॐ वेदवेदाङ्गधारिण्यै स्वाहा

ॐ नरासृक्पानमत्तायै स्वाहा
ॐ नरमुण्डास्थिभूषणायै स्वाहा
ॐ अक्षक्रीडारतये स्वाहा
ॐ शार्यै स्वाहा

ॐ शारिकाशुकभाषिण्यै स्वाहा
ॐ शाम्बर्यै स्वाहा 910
ॐ गारुडीविद्यायै स्वाहा
ॐ वारुण्यै स्वाहा
ॐ वरुणार्चितायै स्वाहा
ॐ वाराह्यै स्वाहा
ॐ मुण्डहस्तायै स्वाहा
ॐ दंष्ट्रोद्‌धृतवसुन्धरायै स्वाहा
ॐ मीनमूर्त्तिधरायै स्वाहा
ॐ मूर्त्तायै स्वाहा
ॐ वदन्यायै स्वाहा
ॐ प्रतिमाश्रयायै स्वाहा 920
ॐ अमूर्तायै स्वाहा
ॐ निधिरूपायै स्वाहा
ॐ सालिग्रामशिलाशुचये स्वाहा
ॐ स्मृतये स्वाहा
ॐ संस्काररूपायै स्वाहा
ॐ सुसंस्कारायै स्वाहा
ॐ संस्कृतये स्वाहा
ॐ प्राकृतायै स्वाहा
ॐ देशभाषायै स्वाहा
ॐ गाथायै स्वाहा 930
ॐ गीतये स्वाहा
ॐ प्रहेलिकायै स्वाहा
ॐ इडायै स्वाहा
ॐ पिङ्गलायै स्वाहा
ॐ पिङ्गायै स्वाहा
ॐ सुषुम्णायै स्वाहा
ॐ सूर्यवाहिन्यै स्वाहा
ॐ शशिस्त्रवायै स्वाहा
ॐ तालुस्थायै स्वाहा
ॐ काकिन्यै स्वाहा 940
ॐ अमृतजीविन्यै स्वाहा
ॐ अणुरूपायै स्वाहा
ॐ बृहद्रूपायै स्वाहा
ॐ लघुरूपायै स्वाहा
ॐ गुरुस्थिरायै स्वाहा
ॐ स्थावरायै स्वाहा
ॐ जङ्गमायै स्वाहा
ॐ देव्यै स्वाहा
ॐ कृतकर्मफलप्रदायै स्वाहा
ॐ विषयाक्रान्तदेहायै स्वाहा 950
ॐ निर्विशेषायै स्वाहा
ॐ जितेन्द्रियायै स्वाहा
ॐ विश्वरूपायै स्वाहा
ॐ चिदानन्दायै स्वाहा
ॐ परब्रह्मप्रबोधिन्यै स्वाहा
ॐ निर्विकारायै स्वाहा

ॐ निर्वैरायै स्वाहा
ॐ विरतये स्वाहा
ॐ सत्यवर्धिन्यै स्वाहा
ॐ पुरुषाज्ञायै स्वाहा 960
ॐ भिन्नायै स्वाहा
ॐ क्षातिः कैवल्यदायिन्यै स्वाहा
ॐ विविक्तसेविन्यै स्वाहा
ॐ प्रज्ञाजनयित्र्यै स्वाहा
ॐ बहुश्रुतये स्वाहा
ॐ निरीहायै स्वाहा
ॐ समस्तैकायै स्वाहा
ॐ सर्वलोकैकसेवितायै स्वाहा
ॐ सेवायै स्वाहा
ॐ सेवाप्रियायै स्वाहा 970
ॐ सेव्यायै स्वाहा
ॐ सेवाफलविवर्द्धिन्यै स्वाहा
ॐकलौकल्किप्रियायैकाल्यै स्वाहा
ॐ दुष्टम्लेच्छविनाशिन्यै स्वाहा
ॐ प्रत्यञ्चायै स्वाहा
ॐ धनुर्यष्टये स्वाहा
ॐ खड्गधारायै स्वाहा
ॐ दुरानतये स्वाहा
ॐ अश्वप्लुत्यै स्वाहा
ॐ वल्गायै स्वाहा 980
ॐ सृणये स्वाहा
ॐ सन्मत्तवारणायै स्वाहा
ॐ वीरभुवे स्वाहा
ॐ वीरमात्रे स्वाहा
ॐ वीरसुवे स्वाहा
ॐ वीरनन्दिन्यै स्वाहा
ॐ जयश्रियै स्वाहा
ॐ जयदीक्षायै स्वाहा
ॐ जयदायै स्वाहा
ॐ जयवर्द्धिन्यै स्वाहा 990
ॐ सौभाग्यसुभगाकारायै स्वाहा
ॐ सर्वसौभाग्यवर्द्धिन्यै स्वाहा
ॐ क्षेमङ्कर्यै स्वाहा
ॐ सिद्धिरूपायै स्वाहा
ॐ सत्कीर्त्तये स्वाहा
ॐ पथिदेवतायै स्वाहा
ॐ सर्वतीर्थमयीमूतर्ये स्वाहा
ॐ सर्वदेवमयीप्रभायै स्वाहा
ॐ सर्वदेवमसीशक्तये स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि धामाऽसि

जातवेदसे सुनवाम सोममऽरातीयतो निदहाति वेदः। स नः

पर्षदऽतिदुर्गाणि विश्वा नावेव सिंधुं दुरितात्यग्निः

ॐ सर्वमङ्गलमङ्गलायै स्वाहा॥1000॥

फलश्रुतिः

पुण्यं सहस्त्रनामेदमम्बाया रुद्रभाषितम्।
चतुर्वर्गप्रदं सत्यं नन्दिकेन प्रकाशितम्॥
नातः परतरो मन्त्रो नातः परतरः स्तवः।
नातः परतरा विद्या तीर्थं नातः परात्परम्॥
ते धन्याः कृतपुण्यास्ते त एव भुवि पूजिताः।
एकभावं मुदा नित्यं येर्चयन्ति महेश्वरीम्॥
देवतानां देवता या ब्रह्माद्यैर्या च पूजिता।
भूयात्सा वरदा लोके साधूनां विश्वमंगला॥
एतामेव पुराराध्य विद्यां त्रिपुरभैरवीम्।
त्रैलोक्यमोहनं रूपमकार्शीद्भगवद्धरिः॥

तर्पन करें–

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला मालिनी
मातङ्गी विजया जया भगवती देवी शिवा शम्भवी।
शक्तिः शंकरवल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी
ह्रींकारी त्रिपुरा परापरमयी माता कुमारीत्यसि॥

अनेन मन्त्रपाठेन/होमेन आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जित-पापनिवारणार्थं श्रीइष्टदेवीप्रीत्यर्थं भगवती अमा कामा चार्वंगी टङ्कधारिणी तारा पार्वती यक्षिणी श्रीशारिका भगवती श्रीशारदा भगवती श्रीमहाराज्ञनी भगवती श्रीज्वाला भगवती व्रीडा भगवती वैखरी भगवती वितस्ता भगवती गङ्गा भगवती यमुना भगवती कालिका भगवती सिद्धलक्ष्मी महालक्ष्मी महात्रिपुरसुन्दरी सहस्त्रनाम्नी देवी भवानी सपरिवारा सवाहना सायुधा सांगा प्रीयतां प्रीतास्तु।

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे नन्दिकेश्वरसंवादे

भवानीनामसहस्त्रस्तवराजः सम्पूर्णः।

अथ श्री इन्द्राक्षी नामावली

विनियोग कीजिए

ॐ अस्य श्री इन्द्राक्षी स्तोत्र महामंत्रस्य शची पुरन्दरऋषिः अनुष्टुपछन्दः श्री इन्द्राक्षी भगवती देवता, लक्ष्मीः बीजं, भुवनेश्वरी शक्ति, माहेश्वरी कीलकम्, गायत्री सावित्री सरस्वती कवचं आत्मनः वाङ्-मनः कायोपार्जित पाप निवारणार्थम् श्री इन्द्राक्षी भगवती प्रसन्नार्थम् स्तोत्र महामंत्रस्य पाठे/होमे/जपे विनियोगः।

अथ करन्यासः

१. ॐ महालक्ष्म्यै	अङ्गुष्ठाभ्यां	नमः
२. ॐ भुवनेश्वर्यै	तर्जनीभ्यां	नमः
३. ॐ माहेश्वर्यै	मध्यमाभ्यां	नमः
४. ॐ वज्रहस्तायै	अनामिकाभ्यां	नमः
५. ॐ सहस्त्रनयनायै	कनिष्ठकाभ्यां	नमः
६. ॐ इन्द्राक्ष्यै	करतलकरपृष्ठाभ्यां	नमः

(अथ अङ्गन्यासः)

१. ॐ महालक्ष्म्यै	हृदयाय	नमः
२. ॐ भुवनेश्वर्यै	शिरसे	स्वाहा
३. ॐ माहेश्वर्यै	शिखायै	वषट्
४. ॐ वज्रहस्तायै	कवचायै	हुँ
५. ॐ सहस्त्रनयनायै	नेत्राभ्यां	वौषट्
६. ॐ इन्द्राक्ष्यै	अस्त्राय	फट्

प्राणायाम करके फूल डालें–

ॐ इन्द्राक्षी द्विभुजां देवीं पीतवस्त्रधरां शुभाम्।
वामे हस्ते वज्रधरां दक्षिणेचाभत्रेदान्।।

सहस्त्रनेत्रां सूर्याभां नानालङ्कारभूषिताम्।
प्रसन्नवदनां नित्यामप्सरोगणसेविताम्।।

श्री दुर्गां सौम्यवदनां पाशाङ्कुशधरां पराम्।
त्रैलोक्यमोहिनीं देवीं भवानीं प्रणमाम्यहम्।।

अग्नहोत्री व घी डालें–

ॐ शचीपतये विद्महे पाकशासानाय धीमहि तन्नो इन्द्रः प्रचोदयात्।।3।।

निम्नलिखित मंत्र से दशाम कीजिए

ॐ ह्रीं श्रीं इन्द्राक्षीं श्रीं पें स्वाहा।

अथ श्री इन्द्राक्षी नामावली

आहुति डालें–

१. ॐ इन्द्राक्षी नाम्न्यै देव्यै स्वाहा
२. ॐ देवतैः समुदाहृतायै स्वाहा
३. ॐ गौर्यै स्वाहा
४. ॐ शाकम्भर्यै स्वाहा
५. ॐ देव्यै स्वाहा
६. ॐ दुर्गानाम्नीति विश्रुतायै स्वाहा
७. ॐ कात्यायन्यै स्वाहा
८. ॐ महादेव्यै स्वाहा
९. ॐ चण्द्रघण्टायै स्वाहा
१०. ॐ महातपसे स्वाहा
११. ॐ गायत्र्यै स्वाहा
१२. ॐ सावित्र्यै स्वाहा
१३. ॐ ब्रह्माण्यै स्वाहा
१४. ॐ ब्रह्मवादिन्यै स्वाहा
१५. ॐ नारायण्यै स्वाहा
१६. ॐ भद्रकाल्यै स्वाहा
१७. ॐ रुद्राण्यै स्वाहा
१८. ॐ कृष्णायै स्वाहा
१९. ॐ पिङ्गलायै स्वाहा
२०. ॐ अग्निज्वालायै स्वाहा

२१. ॐ रौद्रमुख्यै स्वाहा
२२. ॐ कालरात्र्यै स्वाहा
२३. ॐ तपस्विन्यै स्वाहा
२४. ॐ मेघश्यामायै स्वाहा
२५. ॐ सहस्त्राक्ष्यै स्वाहा
२६. ॐ विष्णुमायायै स्वाहा
२७. ॐ जलोदर्यै स्वाहा
२८. ॐ महोदर्यै स्वाहा
२९. ॐ मुक्तकेश्यै स्वाहा
३०. ॐ घोररुपायै स्वाहा
३१. ॐ महाबलायै स्वाहा
३२. ॐ आनन्दायै स्वाहा
३३. ॐ भद्रजानन्दायै स्वाहा
३४. ॐ रोगहर्त्र्यै स्वाहा
३५. ॐ शिवप्रियायै स्वाहा
३६. ॐ शिवदूत्यै स्वाहा
३७. ॐ कराल्यै स्वाहा
३८. ॐ प्रत्यक्षपरमेश्वर्यै स्वाहा
३९. ॐ इन्द्राण्यै स्वाहा
४०. ॐ इन्द्ररुपायै स्वाहा
४१. ॐ इन्द्रशक्तिपरायणायै स्वाहा
४२. ॐ महिषासुरसंहर्त्र्यै स्वाहा
४३. ॐ चामुण्डायै स्वाहा
४४. ॐ गर्भदेवतायै स्वाहा
४५. ॐ वाराह्यै स्वाहा
४६. ॐ नारसिंह्यै स्वाहा
४७. ॐ भीमायै स्वाहा
४८. ॐ भैरवनादिन्यै स्वाहा
४९. ॐ श्रुत्यैः स्वाहा
५०. ॐ स्मृत्यैः स्वाहा
५१. ॐ धृत्यैः स्वाहा
५२. ॐ मेधायै स्वाहा
५३. ॐ विद्यायै स्वाहा
५४. ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा
५५. ॐ सरस्वत्यै स्वाहा
५६. ॐ अनन्तायै स्वाहा
५७. ॐ विजयायै स्वाहा
५८. ॐ पूर्णायै स्वाहा
५९. ॐ मनस्तोषायै स्वाहा
६०. ॐ अपराजितायै स्वाहा
६१. ॐ भवान्यै स्वाहा
६२. ॐ पार्वत्यै स्वाहा
६३. ॐ दुर्गायै स्वाहा
६४. ॐ हैमवत्यै स्वाहा
६५. ॐ अम्बिकायै स्वाहा
६६. ॐ शिवायै स्वाहा
६७. ॐ शिवाभवान्यै स्वाहा

६८. ॐ रुद्राण्यै स्वाहा
६९. ॐ शङ्करार्धशरीरिण्यै स्वाहा
७०. ॐ सदा सम्मोहिनी देव्यै स्वाहा
७१. ॐ सुन्दर्यै स्वाहा
७२. ॐ भुवनेश्वर्यै स्वाहा
७३. ॐ त्रिनेत्रायै स्वाहा
७४. ॐ त्रिपुरायै स्वाहा
७५. ॐ आराध्यायै स्वाहा
७६. ॐ सर्वात्मने स्वाहा
७७. ॐ कमलात्मिकायै स्वाहा
७८. ॐ चण्डयै स्वाहा
७९. ॐ भगवत्यै स्वाहा
८०. ॐ भद्रायै स्वाहा
८१. ॐ सिद्धयै स्वाहा
८२. ॐ बुद्धयै स्वाहा
८३. ॐ समन्वितायै स्वाहा
८४. ॐ एकाक्षर्यै स्वाहा
८५. ॐ पराब्रह्मण्यै स्वाहा
८६. ॐस्थूलसूक्ष्मप्रवर्तिन्यै स्वाहा
८७. ॐ नित्यायै स्वाहा
८८. ॐ सकलकल्याण्यै स्वाहा
८९. ॐ भोगमोक्षप्रदायिन्यै स्वाहा
९०. ॐ ऐरावतगजारूढायै स्वाहा
९१. ॐ वज्रहस्तायै स्वाहा
९२. ॐ वरप्रदायै स्वाहा
९३. ॐ भ्रामर्यै स्वाहा
९४. ॐ काञ्चिकामाक्ष्यै स्वाहा
९५. ॐ क्वणन्माणिक्यनूपुरायै स्वाहा
९६. ॐ त्रिपाद्भस्मप्रहरणायै स्वाहा
९७. ॐ त्रिशिरारक्तलोचनायै स्वाहा
९८. ॐ शिवायै स्वाहा
९९. ॐ शिवरूपायै स्वाहा
१००. ॐ शिवभक्तयै स्वाहा
१०१. ॐ परायणायै स्वाहा
१०२. ॐ मृत्युञ्जयायै स्वाहा
१०३. ॐ महामायायै स्वाहा
१०४. ॐ सर्वरोगनिवारिण्यै स्वाहा
१०५. ॐ ऐन्द्रियै स्वाहा
१०६. ॐ देव्यै स्वाहा
१०७. ॐ सदायै स्वाहा

॥ तेजोऽसि ॥

शक्र॰- ज्योति॰- धाम॰

१०८. ॐ शांतिमाशुर्त्र्यै स्वाहा

तर्पण कीजिए

अनेन मन्त्रपाठेन आत्मनोवाड्-मनः कायोपार्जित पापनिवारणार्थं श्रीइन्द्राक्षी देवी प्रीत्यर्थं भगवती अमा कामा चार्वङ्गी टंङ्कधारिणी तारा पार्वती यक्षिणी श्रीशारिकाभगवती श्रीशारदाभगवती श्रीमहाराज्ञीभगवती श्रीज्वालाभगवती व्रीडाभगवती वैखरीभगवती वितस्ताभगवती गङ्गाभगवती यमुनाभगवती कालिकाभगवती सिद्धलक्ष्मी महालक्ष्मी महात्रिपुरसुन्दरी सहस्त्रनाम्नीदेवी इन्द्राक्षी भगवती सपरिवारा सवाहना सायुधा साङ्गा प्रीयतां प्रीत्यास्तु।

साष्टाङ्ग प्रणाम करके नीचे दिये गये मन्त्र से बायें से दायें की ओर अपने सिर के ऊपर हाथ फेरें

ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्विमोकः

(शेष तर्पण-जल से शरीर को मार्जन दे दें)

नोट : इसके पश्चात् पहली पुस्तक से रक्षोघ्नमन्त्राख्यं महौषधिसूक्त तथा पक्षयाग विधि का शेष भाग पढ़ें।

ओ३म्

ॐ अस्य स्वामी नन्दलालाष्टोत्तर शतनामावलिः श्री नन्दलाल ऋषिः स्वच्छन्दः श्रीगुरुः नन्दलालो स्वामिनः आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जित-पाप-निवाररणार्थं श्री नन्दलाल प्रीत्यर्थे होमे/पाठे विनियोगः

ॐ रक्षाकराय अंगुष्ठाभ्यां नमः,
अतुल्याय तर्जनीभ्यां नमः,
योगेश्वराय मध्यमाभ्यां नमः,
शिवरूपाय अनामिकाभ्यं नमः,
निर्गुणाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः,
निरञ्जनाय करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः

ॐ रक्षाकराय हृदयाय नमः,
अतुल्याय शिरसे स्वाहा,
योगेश्वराय शिखायै वषट्,
शिवरूपाय कवचाय हुम,
निर्गुणाय नेत्र-त्रयाय वौषट्,
निरञ्जनाय अस्त्राय फट्॥

ध्यानम्

ब्रह्मानन्दं परम-सुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम्।
द्वन्द्वातीतं गगन-सदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्॥
एकं नित्यं विमलीचलं सर्वधी-साक्षिभूतम्।
भावातीतं त्रिगुणं-रहितं सद्गुरुं तं नमामि॥१॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुः साक्षात् महेश्वरः।
गुरुर्रेव जगत् सर्वं तस्मै श्रीगुरवे नमः स्वाहा।२॥

श्रीगुरुं परमानन्दं वन्दाम्यानन्द-विग्रहम्।
यस्य सान्निध्य-मात्रेन चिदानन्दायते परम्॥३॥

गायत्री

आहुति

ॐ स्वामिन् नन्दलालाय विद्महे हुषरु स्थित भैरवाय धीमहि तन्नो हंसः प्रचोदयात्॥ (तीन बार)

१) ॐ स्वामी नन्दलालाय स्वाहा

२) ॐ रक्षाकराय स्वाहा

३) ॐ विनाशहराय स्वाहा

४) ॐ शक्ति उपासकाय स्वाहा

५) ॐ गौरी पूजिकाय स्वाहा

६) ॐ शिवस्वरूपाय स्वाहा

७) ॐ गुरु लाल शिष्याय स्वाहा

८) ॐ दानवीराय स्वाहा

९) ॐ ब्रह्मचारी व्रतधराय स्वाहा

१०) ॐ हुषरु आश्रमस्थाय स्वाहा

११) ॐ टिक्कर स्थिताय स्वाहा

१२) ॐ तिलाष्टमी जनिताय स्वाहा

१३) ॐ दैत्य विनाशकाय स्वाहा

१४) ॐ जन प्रियाय स्वाहा

१५) ॐ जन वल्लभाय स्वाहा

१६) ॐ जन श्रुताय स्वाहा

१७) ॐ नग्न शरीराय स्वाहा

१८) ॐ आनन्द नन्दनाय स्वाहा

१९) ॐ मस्तबब दीक्षाग्रहकाय स्वाहा

२०) ॐ रमण नयनाय स्वाहा

२१) ॐ तत्व मर्मज्ञाय स्वाहा
२२) ॐ मातृ-शिष्याय स्वाहा
२३) ॐ सुमुखाय स्वाहा
२४) ॐ गुरगुरी विहार देवाय स्वाहा
२५) ॐ शुभचिन्तकाय स्वाहा
२६) ॐ शाकाहाराय स्वाहा
२७) ॐ क्षीरोपहाराय स्वाहा
२८) ॐ मालाधराय स्वाहा
२९) ॐ कुङ्कुमतिलक प्रियाय स्वाहा
३०) ॐ महाराज्ञी पूजकाय स्वाहा
३१) ॐ सदाशिवाय स्वाहा
३२) ॐ राधामाली तनयाय स्वाहा
३३) ॐ सर्वोपकाराय स्वाहा
३४) ॐ शाश्वताय स्वाहा
३५) ॐ कंटोपधराय स्वाहा
३६) ॐ सहज़कौलात्मजाय स्वाहा
३७) ॐ बुमई गौरीपुराश्रमस्थाय स्वाहा
३८) ॐ गौ रक्षाकराय स्वाहा
३९) ॐ शक्ति प्रदर्शनाय स्वाहा
४०) ॐ एकान्तवासप्रियाय स्वाहा
४१) ॐ प्रकृतिप्रियाय स्वाहा
४२) ॐ चक्रेश्वर परिक्रमाय स्वाहा
४३) ॐ कौलकोठदार कुल भानवे स्वाहा
४४) ॐ अतृष्णाय स्वाहा

४५) ॐ अतुल्याय स्वाहा
४६) ॐ तेजस् रूपाय स्वाहा
४७) ॐ स्वच्छ जीवनाय स्वाहा
४८) ॐ सरल व्यवहारिकाय स्वाहा
४९) ॐ योगसिद्धि प्रदाय स्वाहा
५०) ॐ प्राणकष्ट मुक्ताय स्वाहा
५१) ॐ देहातीताय स्वाहा
५२) ॐ व्याधिनाशकाय स्वाहा
५३) ॐ व्याख्याकाराय स्वाहा
५४) ॐ नीलकण्ठाय स्वाहा
५५) ॐ योगेश्वराय स्वाहा
५६) ॐ परं हंसाय स्वाहा
५७) ॐ विभवकुल परिजनाय स्वाहा
५८) ॐ परिपालकाय स्वाहा
५९) ॐ परिपूर्णाय स्वाहा
६०) ॐ एकाग्रचित्त रूपाय स्वाहा
६१) ॐ त्रिलोचनाय स्वाहा
६२) ॐ औषध-चिकित्सकाय स्वाहा
६३) ॐ जीवन मुक्ताय स्वाहा
६४) ॐ सर्व-धर्म हितकराय स्वाहा
६५) ॐ सर्व जन पूजिताय स्वाहा
६६) ॐ अज्ञान हराय स्वाहा
६७) ॐ अतिथि सेवारताय स्वाहा
६८) ॐ शास्त्रनिपुणाय स्वाहा

६९) ॐ शारदादेवी पूजिकाय स्वाहा
७०) ॐ गुरुपाद पूजकाय स्वाहा
७१) ॐ तीर्थ दर्शन प्रियाय स्वाहा
७२) ॐ भक्तजन सहायकाय स्वाहा
७३) ॐ गान-श्रवण प्रशंस्काय स्वाहा
७४) ॐ स्वच्छ शरीराय स्वाहा
७५) ॐ सिद्धेश्वराय स्वाहा
७६) ॐ माघमासे सन्त विमुक्ताय स्वाहा
७७) त्रिपुरा उपासकाय स्वाहा
७८) ॐ शिव रूपाय स्वाहा
७९) ॐ सिद्ध महापुरुषाय स्वाहा
८०) ॐ देवेश्वराय स्वाहा
८१) ॐ प्रिय दर्शनाय स्वाहा
८२) ॐ मन्त्र साधकाय स्वाहा
८३) ॐ यज्ञ प्रियाय स्वाहा
८४) ॐ बहुव्रत धराय स्वाहा
८५) ॐ शत्रु ध्वंसकाय स्वाहा
८६) ॐ अमरेश्वराय स्वाहा
८७) ॐ तापहराय स्वाहा
८८) ॐ शरणागत वत्सलाय स्वाहा
८९) ॐ सर्वधर्म विवेकाय स्वाहा
९०) ॐ विश्वम्भराय स्वाहा
९१) ॐ विश्वसनीयाय स्वाहा
९२) ॐ काश्मीर मण्डल प्रियाय स्वाहा

९३) ॐ अघोराय स्वाहा

९४) ॐ गुरु पादुका पूजकाय स्वाहा

९५) ॐ वैराग्य प्रियाय स्वाहा

९६) ॐ शिष्य पालकाय स्वाहा

९७) ॐ ललाट उज्जवलाय स्वाहा

९८) ॐ सर्वध्यान आकर्षनाय स्वाहा

९९) ॐ सर्व व्यापकाय स्वाहा

१००) ॐ धर्मज्ञाय स्वाहा

१०१) ॐ शिवलिंग मनन चिल्मादि
पूर्वजन्म प्रयुक्त साधना स्वरूपकाय स्वाहा

१०२) ॐ आनन्द स्वरूपाय स्वाहा

१०३) ॐ सनातनाय स्वाहा

१०४) ॐ निरञ्जनाय स्वाहा

१०५) ॐ साधना-रताय स्वाहा

१०६) ॐ ज़ूनमाली प्रियाय स्वाहा

१०७) ॐ निर्गुणाय स्वाहा

१०८) ॐ गुरु पादुकाय स्वाहा

फल :-

नामावलिमिमां पुण्यां शुभफलवर प्रदाम्।
स्वर्गापवर्गदां चैव सततं संस्मरेत् नरः॥

तर्पण :-

अनेन अष्टोत्तर शतनामावलिः होमेन। पाठेन आत्मनो वाङ्मनः कायो पार्जित पाप निवारणार्थं श्री गुरु प्रसाद सिद्ध्यर्थं गुरुवर स्वामिनः नन्दलाल हंसः प्रीयतां प्रीतोऽस्तु॥

शेष तर्पण-जल से शरीर का मार्जन दे दें।


ANAND
DHAM
